क्षिमश्व।

श्रीहतियाद्न मुर्थाभाषाम् ।

পুণীত।

দিতীয় সংখ্রণ।

প্রথম ভাগ।

किनिकाठा।

बिशाती (माइन यामांशिधांश घात। विषम स्थितीशत यात सूर्विछ। मुजाशूत ६ नश्सूमनमान शोषा लिन। मन ১२৮৪ मोल।

विखाशन।

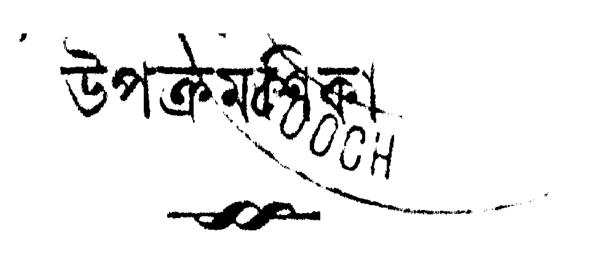
এতদেশীয় বিদ্যানুরাগী মহোদরগণ প্রথমেন্ট আয়ুকুলা প্রাপ্তে নানা বিষয়ক পুস্তকাদি রচনা করত একণে
বঙ্গভাষার উন্নতি রিদ্ধি করিতেছে। কিন্তু ক্ষবিনার্য্য যাহা
এতদেশীয় অধিকাংশ লোকের উপজীবিকা তৎসমন্ধীয়
কোন পুস্তক অদ্যাবধি প্রকাশ না পাওয়াতে এতদেশে
কৃষিকায়া পূর্ববং অবস্থাবস্থিত আছে। একণে রাজপুরুষ
দের যত্নে কলিকাতায় বটানিক উদ্যান সংস্থাপিত হওয়াতে
কৃষিকার্য্যের উন্নতির সোপান হইয়াছে বটে, কিন্তু যে সকল
কৌশল দারা উক্ত উদ্যানের কার্য্য পরিচালন হইয়া
থাকে তাহা দেশে প্রচারিত হয় নাই, এই নিমিত্ত
আমরা বহু যত্নে ঐ সকল কৌশল সংগ্রাহ করিয়া এতদ্দেশীয়
সামান্যরূপ কৃষিকার্য্যের সহিত সংনিলন পূর্বক এই কৃষিন
দর্পণ নামক সন্দর্ভ রচনা করিয়া পুস্তকাকারে প্রকাশিত
করিলাম।

পূর্ববার পৃত্তক অপেক্ষা এই পৃত্তক আনেক র্দ্ধি ছইয়াছে কারণ মৃত্তিকার রাসায়নিক পারীক্ষা পূর্বেকার
গৃত্তকে ছিলনা কিন্তু এই বার সেই সকল বিষয় সংগ্রহ
করণ পূর্বক এই পৃত্তকে সংযোগ করা ছইয়াছে।

পরিশেষে আমরা ক্রজতা সহকারে স্বীকার করি-তেছি। আন্দুল নিবাসী শ্রীয়ক্ত বারু রাধামোহন বস্থ্ এই পুস্তক মুদ্রিত করিবার যাবতীয় ব্যয় নির্ম্বাহ্ন করি-য়াছেন। তিনি অনুগ্রহ প্রদর্শন পূর্বক এই বিষয়ের ভার গ্রহণ না করিলে এই পুস্তক প্রচারিত করা ভুরুহ হইত সন্দেহ নাই।

कितांड। मन १२५१ माल। १२ क्लाल्खन।

शिष्टियोदन यूर्याशीयात्।



इड्शई। रक्करो नोनाक्रांम नाना शकार रङ् शमर करतम ।- (काम छोट्म सर्ग, (दोशा, काम छोट्म दा होता, मिन गामिका, প্রবালাদি উৎপন্ন হইয়া থাকে, এবং তৎসমীপ-र्वार्ख छाम रामिता के मकन स्वा जाहर पहारा जीरिका निक्याद्यत छेभाग निर्भातिष्ठ करत। किन्छ जागानि शत धरे नकताका गाधा छेन जनगानि किछ्डे छेल्म इय गा, जशानि ... हैश (यक्तर्भ अवस्था मरशाधिक आहि काश अद्भारम करितन म्लाफे थाउँ इश (ग इश (करान ऐ खिडा करा र उड़े श्रम्य करित्यक, कात्रण इंशाउँ शर्यां जिल्ल । विजन रक्षका मां शाकार ममूज बहेर जा ज नागु मक्षानि व बहेर मुखिकारक क्रमांशंक महम हार्थ। देखांश, इकिशांक धर गर्दत ननीत जन धाराधित इंडगांट जारूकुठ इंडे.ज.इ (र धरे (मा) जना मकनप्रना विनिम्हा (करन ऐष्डिक्डरे ऐर-পর হইটে পারে, অতএব এতং ফান বাসিরা তদ্ধিয়ের ञालाइना मादा (पर याजा निर्दार कदिएक। वित्नव छेन (माम कक्त मामशी अशंद यमा यादम अकृति कथन आहा-द्राभार्याभी इहेट भारत मा, कारण दहिक्छाएभ धामभीत कीर्यत भरीत क्रांख इहेशा शार्क, जाहार गिक क्ष भागणी ा मश्कारत गरीरतत ভিতরের উতাপ রদ্ধি হয় তবে উভয়েন

সংযোগে অবশ্য বিশেষ হানি হইতে পারে, তৎপ্রযুক্ত ভত্ত-পযুক্ত আহারীয় দ্রব্য যে ক্লিগ্রসামগ্রী অর্থাৎ ফল মূল অন্যান্য উদ্ভিক্ত ইহাই সর্বতোভাবে এদেশীয় জীবের ভোজনাই; অভএব এই কারণবশতঃ বজদেশ নিবাসি (लार्क्ड) क्रिकारा क्रिया शाक्रम किन्ह क्रियिनाय कि-हुई जात्नाहरा नाई, अशंद याद्यां कार्यां कर्या প্রকাশ পাইতে পারে এমত কোন উপার স্বধারিত নাই। যদিও চারা উৎপত্তি করিবার কারণ মৃতিকা খনম, সার (मस्ता, यक्रां ज्यानिशाक नसे करा, मगासर भाषात्त्रम ए एनाम्बर करा, এवर इंशांक (राभ श्रेंट मुक्त करा े हिलानि किया कमाथ याका क्रिकार्य याम्न क्रेसर् ভাছার বিষয় কিঞিৎ কিঞিৎ অনেকে অবগত মাছেন, কিন্তু धर्मे मक्न किहात माता ऐ सिक्क निर्गत की याना भाषा शि किश मकन किल्ला निकार इके. उ.च. का का किश किश मर्म। याज्यन धरे मत्न निम्त श्रांक क तिनात मान म जायता श्राय (मिर्नाय (य औ मदन अनुकास (मर्भर खाडावानुमादर डिझर खडाव धारण करिशाहि, यथा, भीड-প্রধান দেশে সভত বরক পতিত ছওয়াতে উদ্ভিজ্নিগের थि जि अधिक जल दावस्। करा कर्ना कर्ना कर्ना करा कर्ठिन हिक्श मृहिक। रह मृद अर्गाध थनन मा कदिएल कथन क्रिकार्याभरगाभी इक्टि भारत ना। जीय-अधान (मर्भद कान ठावा और नर्म (वाभग कदिए इरेल छेख्य गृष्ट भरभा ভাহা রোপণ করা আবশাক, কিন্তু বন্ধরাজা মধ্যে সক-नहे जारांत्र विभवीं जिल्ला भारता यात्र, अरे सात

अधिक जल दावका करा कर्डवा मृहिका अधिक मृत अविधि খনন করিতে হয় না। শীত-প্রধান দেশীয় চারা আনিয়া যদি এই দেশে রোপণ করিতে হয় তবে শীতল গৃহে রোপণ कर् जावभाक, এवर এই (मन जार्भका ममिक हेमः দেশের চারা আনিয়া এই দেশে রোপণ করিতে হইলে রজন रिगरिंग डाइनें र डेशर्व जाफ्यांमन मिट्ड इत। এই श्रकार উভয় দেশীয় ক্ষিকার্য্যের বিভিন্নতা দেখিয়া আমাদিগের শ্বির বিবেচনা হইতেছে যে, এক দেশীয় ক্ষবিকার্যার ব্যবস্থা কিঞ্চিৎ পরিবর্ত্ত না করিলে অন্য দেশে তাহা কখন প্রচ-लिंड इहें एक भारत मा। এहे जमा हेश्मकीय वावका मकल আমাদিগের এই দেশের সভাবারুদারে পরিবর্তন করিবার जना थ्रथमण्ड जामता किहूर डेशांस शांस कतिर्ग भारि माहै। अदाभार अत्मक जिल्लो करिया अहे खिर करिलोम (य, खङावक्ष अद् जात्लाह्म। कदाई जादमाक, डाइ१७ याशा अनुभाविक आहि उदम्भूमरा अनुभीलम कवित्ल मामा (मर्भंद कृषि चावकां निक्रभन जदना करा घारेट भाषित्व, কারণ যে স্থানের যেরূপ সভাব তথায় তদ্রপ উদ্ভিজ एं भिन्न इहेरा शास्त्र। (काशां भारा, (काशां भारा) (काथां वा थर्ड्ड, काथां वा नाहित्तन, धरे तथ स्वा नित्नित्य नित्नार नामा ७ कल, हक्क, छे९भन्न इहेश शांक।

কোনং ব্যক্তি যে সদেশোৎপন্ন উদ্ভিক্ত রোপণ দারা জী-বিকার উপায় করিয়া থাকেন তাঁহারা কেবল স্বভাবের বদা-নাতার উপরই নির্ভর করিয়াছেন। কিন্তু নানা দেশে যে ভিন্নং উদ্ভিক্ত উৎপন্ন হয়, তাহার নিয়ম অবগত হইয়া যদি

ভাহাদিগকে আমাদিগের এই দেশেরোপণ করিবার প্রথা প্রচলিত করা যায়, তবে কৃষিকার্যোর উন্নতি হইতে পারে এবং दिएम् नानि, कांद्र आंद्र आंदर्भाक्ष थार्क मा, कांद्रन मर्ख मिलां भिन्न प्रवा, को मेल क्राम यिन स्राम्टन छे भन्न कर्ना यात ত্বে কোন দ্রোর আর অভাব থাকে? সূত্রাং তৎসমু-দয়ের নিমিত্ত আমাদিগের আর দেশে২ ভ্রমণ করিবার প্রয়ো-क्रम शोक्स मा। অভএব এই রূপ আশায়ে স্বাসিদ্ধতা লাভের জন্য স্বভাব রূপ পুত্তকে দেখিলাম যে, তাহা তিন পরিজেদে সমাপ্ত হইরাছে, কিন্তু এক এক অধাায়ের পত্রের সংখ্যা আমা-দিশের এই সামান্য বুদ্ধিতে নিরপণ করা অসাধা; কারণ এक महां निखीर्ग आंखर मासा मधातमान इहेता है उउठ है দুষ্টিপাত করিলা বিবেচনা করিলাম যে আকাশ অতি নিকট-निक्छि इहेडाइ। পরে এ मीमार निक्रि याहेया आका-জকায় কিয়দ র অগ্রাসর হইয়া দেখিলাম যে আমাদিয়ের গম্ম छेशां जा छात वा छात भारभाग इत। दहे थाकारत जमीम रिखीर्ग श्रिती (मिरिया) जामानिश्य ममह मक्ष हिछ इछ-शांट चर्छार्दत मगाक् भारति अमस्यानमा (मिश्रिश दिएन-ठमां करिलाम (य, यं इहं शरांख आमिनि, हें पृथि-शिष्टिशीन उपभागत्मके मकुक्ते क्ष्या डेविछ। अहे कण्णना िखर करिशा जार्मन माधा जारमा करिमाम, किन्छ उथान স্থাভাবিক নিয়ম মনুয়াদিগের কাপানিক ব্যবস্থার সহিত अभव गिश्रिक (य वाहा करेटव रेशांक निवित्त करिया। শিক্ষা করা স্কটিন। অতএব এতাবৎ ভাবিয়া চিন্তিয়া এক

महात्रेशा माक्षा डेलेब्ड इडेमाम, उशाह पिरिनाम (ग শिकामाशिमी श्रक्ति मडी अम्हन्याशि नश्न भ्रक्ति मि-দ্রাভিভূতা রহিয়াছেন। আমি তাঁহার নিকট দণ্ডায়মান হইয়া করপুটে জিজাদা করিলাম হে ভাবুকজন মোহি-नि! পর্মেশ্বরের এই বিভিত্র রচনার মধ্যে যেরূপ আশ্ভরা लील। थकांन भारेशाइ डारा मनुम्य मर्भन करिया किছ প্রণিধান করিতে পারিলাম না, অতএব আমার প্রতি অমু-कम्माबिड। इहेश। जामात क्रनशंकार्भ कानत्रभ डांच डेनिड करून्। এই कशा दाइषाइ छे कि कदाएँ काम छे छई भाई-साम मा, (कह जा मात नाका अन्। कतिस मा, अवर उथाय अग्रें का शांकि । (मिशिनाम मा (ग अहे विस्तृत मञ्जारमणा फिलाम। करि। পরে অভান্ত চিন্তাকুল হইয়া ইতন্ততঃ ভ্রমণ कत्छ এक शितित निक्छे ऐशिष्टि इहेलाम, उथात दिनित। ভাবিয়া দেখিলাম যে শিক্ষা করিবার চারি প্রকার উপার गाइ। ध्राभकः, श्रुक शांत्र, किन्तु এशाम जांश कि अकार সংগ্রহ করি? কারণ ঘাছার নিক্টে শিক্ষা করিতে আসি-য়াছি তিনিই অতৈতনা রহিয়াছেন। দ্বিতীয়তঃ, ক্ষোপ্কথন किछ এই স্থানে বাকালোপ করি এমত কেছ নাই। তৃতী-ग्रङः, भर्तीका, किन्न এशाम भर्तीका करि अग्रङ काम डेभाग नाहै। পরিশেষে চতুর্থ উপায় অর্থাৎ বহুদর্শন দ্বারা যে জ্ঞান छे० भन्न इक्ट भारत छाइ। इन्हिंस कण्य कतिया हर्जित बिदीक्ष क्रिलोम, ভাষাতে আমার এই আশ্চেষ্ট জ্ঞান হইল (ग श्राहिक निर्मातकारक शांकिशां अ सहर नेष्ट्र किया भ-कि अत्रिभा इंडिशांट मकल कोर्स्ट्र मूल-सूत्र कार्र्स

নিঃস্তরে তাহাদিগকে এমত নিয়োজিত করিতেছেন যে কোন ক্রমেই তাহার কিছু মাত্র অন্যথা হয় না, যথা কতিপায় আদিভূত, বস্তু সংখ্যাতে ষট্পঞ্চাশতেরও অতি-রিক্ত হইবেক, ইহাদিগের সমন্বরে জগৎস্থ সমস্ত বস্তুর रुशि श्रिं इरेटिएइ, এवर रेश्निर्गित विष्ट्रिंग (मरे अकल जावांत नग शाहित्हा किन्छ हेरानिया धःम रकान कारल से नारे, कान एनर পত्र रहेल रेशानिरगद (करल পরস্পর বিচ্ছেদ इইয়া পুনশ্চ তানা (দছ রচ-নায় প্রবৃত্ত হয়। এইরূপ ক্রমাগত ইহারা দেহের রচনা ও बार्भाई अंड जार्ड, रामन एक जाउनिका जाकिया उर इसे-কাদি সহকারে অন্য অটালিকা নির্মিত হইয়া থাকে। অতএব একবার যাহাতিনি সৃষ্টি করিয়াছেন তাহার হাস রিদ্ধিনা इहेश ममजारिक जाड़ि जर उरकारन अगुक देश्यवि ७ ४१म मम-পরিমাণে আছে। এইরপ নানাবিধ পরিবর্তনে क्रेश्रद्ध धरे जहुँ नीना श्रामुं करें। एर धरे भृशिरी ७ इंशांत ऐপतिष् मम् नसुरू ममाक् अकार मध्यक कतिया देशानिर्शत तकात कार्य मध्याणिक करि-शाष्ट्रम। उक्कक्षीलम कदिशा (मिश्ल आधानिताद এই অনুমান হইতে পারে যে, এই জগতে কোন 🚜 ভাকরণা अवश्राश्वा नाई, मकल्वे सीगर कार्या निगुक आर्ष्ट, यथा, आजिरिक निरंगानुभारः खेजिकः (ममीभागान इरेश) जा-(लाक खिनारिन मकन विख्या माउडन कहिएडएइन। शृथिनी नक्त हेडाफि मयूनांश मिह स्रात्क श्रित्वकेन क्रिया पूर्वाय-मान इडशांट मिरांद्रांजि धर् भीड, गीय, रशं अङ्डि अडू,

मकल्वत পরিবর্ত্তন হইতেছে। পৃথিবীস্থ বস্তু সকলের গমন।-शमन ममूनांश कि जान्हर्या मृना इरेटिह, यथा, পर्वटिं নানা স্থান হইতে ক্ষুদ্রং স্রোত একত্র মিলিত হইয়া রহৎ হইতে জলের পরমাণু সকল বাস্পাকারে গগণ মণ্ডলে উন্থিত इरेश रदक, कुशामा जनः इछिक्राभ जृउल পতिত इरेश পৃথিবীম্ব সমস্ত বস্তুকে তৃপ্ত করত পুনশ্চ নদ নদী প্রবাহে मगुरा जामिशा डेशिविड इरेडिए। এर প্রযুক্ত मागुरिक জলের দীমা সমভাবে থাকে, এবং তদ্রপা জুয়ার ও ভাটা ও कथ्म वांग्राशित् जल्मद शमनाशमन क्रमाशं मण्णन इह-ভেছে। বায়ুর গমনাগমন কখন দক্ষিণ পূর্বে কখন বা উত্তর 🖚 পশ্চিমে সঞ্চালিত হইতেছে, কিন্তু স্থান বিশেষে এ সকল ওণের পরিবর্তনত দেখিতে পাওয়া যায়। যদিও বায়ুর সঞ্চা-লন কোন ২ সময়ে কোন স্থানে অনুভূত না হয় তথাপি বায় পরিমাপক যান্ত্র পরীক্ষা করিয়া দেখিলে বোধ ছইবে যে रामु कथन फिन्न छोर भारक ना। श्थिरीत छेशविछारमञ এইরূপ পরিবর্ত্তন হইতেছে। অতিশয় কঠিন শৈল সকল ভালিয়া মৃত্তিকাশায়ী হইতেছে, কোন ভূমি ভালিয়া অধোভাগে গমন করিতেছে, কেছ বা জ্রোতে ভাসিয়া স্থান-कृति इक्टिक, अदर किइ छिक्किशामी, किइ वा अर्थाभामी इक्टे-তেছে এবং কেছ বা ভূমিকম্পা দারা বিলোড়িত ছইতেছে। कुष পर्वा अकल जिल्ला जन श्राह्म जातिश याहिता কখন বা পর্বত মধান্ত অতি নিম্ন স্থান পরিপুরিত হইয়া উচ্চ इरेटिए, कथन कलानाश अम्यूरायत उन एक इरेश किर्नि

मुखिकाविनिष्ठे इरेटिए । এरे श्रकार्त कथन जात्ना कथन অন্ধকার, কখন শীত কর্থন প্রীম্ম, কখন শুমতা কখন আর্দ্রতার আবিভাব হইয়া আসিতেছে এবং প্রতি ঘণ্টায় উত্তাপ এমত পরিবর্তিত হইতেছে যে তাহা আমাদিগের ইন্দ্রির অগো-हत्। आयोगिर्शत (मर्ट्स विषयः यस्त्रोगिर्दम किरिशो (मिशिर्म অনুমান হয় যে নানা প্রকার পুরাতন প্রমাণু সকল বহির্গত হইয়া তাছাদিগের পরিবর্তে তৃতন পরমাণু সঞ্জার হইয়া শরীরকে রিদ্ধিশালী করিতেছে। আমাদিগের আহারীয় দ্বা অচেতন উদ্ভিচ্ছ এবং মাংস, এই তিন প্রকার বস্তু উদরস্থ করা-তে ইহারা পরিবর্তিত হইয়া রক্তোৎপত্তি করিতেতে, এবং তাহা ঘর্ম ও প্রজাব রূপে পরিণত হইয়া শরীর হইতে নি-র্গত হইতেছে, এবং পুনশ্চ রক্ত আদিয়া সর্ব্য স্থান পরিপরিত করিতেছে। নিয়ত এইরূপ হওয়াতে মনুযোর দেহ ১০।১২ বৎসরের মধ্যে এমত পরিবর্তিত হইয়া যায় যে তাহাকে পরিচিত করণের কোন চিহ্ন থাকে না। এইরপ সকলই রক্ষি পাইতেছে, এবং অবশেষে কালগ্রাসে পতিত হইয়া বিনষ্ট হইডেছে। অভএব ক্রমাগত পরিবর্তিত হইরাও প্রাক্ত-তিক অনিবার্যা নিয়মে সকল বস্তু এমত আবদ্ধ আছে যে কোন প্রকারে তাছার অনাথা হইবার সম্ভাবন নাই এবং हेशांक अवलयन करिया मकल वसु श्राम्भार श्राम्भार छेপর নির্ভর করত सीत्र२ कार्या मण्णास कति, उट्छ। उदमग्रामात्र धक्ज कतिश्र जनत्नाक्न किंद्रिल विद्युष्टना इक्ट्रेड भारत य रेशां क्वन जगां के छेनकां समाधन स्रे किए।

य मकन निग्रम रुखि विजि थनर्गन्न कार्ग, जाशामिगरक

ত্রিবিধ বস্তুতে সংস্থাবি গতেতন উদ্ভিক্ত এবং প্রোণি সমূহ, কিন্তু 🗽 💯 तर अब्द अध्य বিভক্ত হইয়াছে, যথা জीवन ना शाकार्ड नेश्वंत हेशानिगरिक हिन्स्य विभिन्ने कर्दन गाँहे, এবং তৎপ্রযুক্ত চলৎশক্তি गाँहे (कवल जुला वसु मश्रार्श, त्रांभिर এक ब इहेश हिमिनीन इहेश थारक, किन्छ <u>जन्छ এवर ऐ फिक्किनिर्शत की दन थाकार्ड (नश्यां जा निर्मा-</u> शार्थ हेशिनिर्शत जाङाखरत नानानिश यक्त निर्माण करित्रार्हन, ध राष्ट्रवादा राष्ट्र रखद दम পदिপाक পाইয়া ইহাদিগের শ-रोत तकि इनेशा थारक, उल्थायुक धने प्रतात मर्सा जाति कि हूने 🖚 रिভिন্নত। मृश्वे रश मा, (करन जरुमितात मा। स उ खिक्किमि-গের চলৎশক্তি নাই। ছুয়ের যন্ত্র সকল, আকারে এমত रिनक्षण इहेग्नर्ह (व पृष्ठिभाज मार्व जोहा छ। इडग्न याष्ट्रें, जीत, भन्ना अक्रिक अधीम स्थे, जीत, मनुषा जनिष পক্ষাদি প্রায় দর্শন করিলে তাহাদিগের অভান্তরম্ব যন্তে जानक रिनक्षणा मुखे इश्, यथा मर्शकां जित इस श्रम ७ कर्ष नाई, এবং কাছারও বা চফু নাই, কিন্তু শারীরিক কোন कार्यात उन्हें मुखे इत्र मा; कात्र भे मकन जीरवत है स्टित्त কার্যা অভান্তর যাত্রের দ্বারা নির্কাহিত হইয়া থাকে। যেমন হস্ত পদ না থাকায় সপদিগের দেহ বক্তভাবে নত হওয়াতে তাহাদিগের গমমাগমনের কার্য নিস্পাদিত হই-তেছে, मেইরপ জল মধ্যে এক প্রকার অদৃশা কীট আছে যে আমাদিগের দর্শনেভিয়ের অগোচর হওয়াতে প্রতিদিবস

জলের সহিত আমরা তাহাদিগের লক্ষ ২ ভক্ষণ করি, কিন্তু অনুবীক্ষণ যন্ত্রে তাহাদিগকে দেখিলে বোধ হয় থে ইহাদিগের কোন ইন্দ্রিয় নাই, কেবল এক পিণ্ডাকার মাত্র।

ऐफ्रिक्डिनिर्गर অভান্তরস্থ যন্ত্র সকলও এইরপ বৈলক্ষণা इहेश अगड विভिन्न इहेशिए ए डोशिनिगरक कोनकरम জন্ধদিগের শ্রেণীমধ্যে গণা করা যাইতে পারে না। বস্তুতঃ জন্ত-मिर्गिय नाग्य जोक्निर्गित मयुनाय जक जार्ड, यथा जल्ड-দিগের অতের ন্যায় ইহাদিগের বীজ ভূমিতে পুতিলে জল বায় এবং উত্তাপের পরিমাণাত্দারে অঙ্করিত হইয়া চারা উৎপন্ন इहेश शांक। योहां व एवं क्षा खंडाव डाहां वा खंडावां नुमाद তাহার প্রতি দেইরপ বাবস্থা নির্দিষ্ট হইয়াছে যথা, কেছ জলে, (कश्र खुल, (कश्र वा द्राक्षांभदि, किश्र वा शंदिराजांभदि छे९भन्न इहेश थारक। পরে ভাছার। প্রবল হইলে মূলাগ্রভাগ এমভ भाषक निक्रिं जाहि इस्ता थारक रच उम्रादा श्रीयरी इस्ट तम, जनवत् जाकि इत, এवर अकार्धत कार्फ दम সঞ্চালিত হইয়া শাখা প্রশাখা দিয়া অবশেষে পত্রের উপরি-ভাগে আদিয়া উপদ্বিত হয় এবং তথায় সূর্যার উত্তাপে পরিপাক পাইয়া কিয়দংশ ঘর্ম হুইয়া বহির্গত হুইয়া যায়, जारिनकोश्म भट्यत निम्नाटारगत निता मिशा भट्यागांगी इरेल পরের সীমান্থ অধোভাগে যে কতকওলিন ছিন্ত আছে उम्राद्धा वाशु उग्रापा थात्वन कित्रा। धे भित्रिभक त्राप्त म-रिड गिथिड इनेश डेसिकामित्यत को तामाभाषा तम ध्यात्व छ इत्रेश छ। लिइ मधा छ भिद्रानिश शूनर्शमन काल देशह किश्रमश्रम खार्मर जनस्थि कर्ताए गूउन कार्षंत ऐ शिख

সহকারে প্রকাণ্ড রন্ধি হয়। ক্রমাণ্ড এইরপ হওয়াতে তৃত্র শাখা পল্লব উৎপন্ন হইয়া পুজা এবং ফলের উৎপত্তি হই-তেছে। পরে এ সকল কার্য্য নিষ্পাদিত হইলে অবশিষ্ঠ অ-সার অংশ মূলাগ্রভাগ দিয়া বহির্গত হইয়া যায়।

ইহাতে কোন ব্যক্তি জিজাদা করিতে পারেন, যে রদের গমনাগমন এককালে এক স্থান দিয়া কি প্রকারে হইয়া भारक है . जोशांत छेखत धरे य পরিপক রস অভিশয় গাঢ়, এবং আরুষ্ট রস তরল, অতএব গাঢ় রস ইহাতে নিম্ম इहेश दहिर्गं उद्देश यारा। श्रुष्ण मस्या इहे यक जार्ड औरकन्त এवर श्रीकन्त। श्रीकन्त्राण्डाण भानीत আকার এক বস্তু আছে তাহার ভিতর রজঃ উৎপর্ন रुहेशा थारक, शरद दक्षः शतिशक रुहेल धे मानी विमादन পর্বাক বহির্গত হয়। জ্রীকেশরা এভাগেও আটার ন্যায় এক रस উৎপन्न इहेगा थात्क, छेक तकः वागुमः त्याद्रा अथवा প্রজাপতি প্রভৃতি কোন কটি সহকারে স্ত্রীকেশরাপ্রভাগে পতিত হইলে তাহাতে দৃঢ় রূপে সংলগ্ন হইয়া থাকে। ঐ वकः इहेट खूबवह नानी मकन विश्वि इहेशा औरकगद्रक विमीर्ग करिया। दोखाकांच भर्याख ध्वादम करितन श्राम्भद গভেঁর সঞ্চার হয়, এবং পাপড়ী ও পুংকেশর সকল খসিয়া পতিত হয়, কেবল জ্রীকেশর একাকী রৃদ্ধি পাইয়া ফল হইয়া छे हो। भारत धो कन स्थक इहेशा शिंडिड इहेर इक विद्याप অবস্থা প্রাপ্ত হয়। যদি জন্তুদিগের সহিত এত্রিষয়ে তুলনা कदा यांग्र তবে সমুদয় क्षेका इरेड পादि, यथा, जखना व्याष्ट्रांत कतित्व के व्याष्ट्रातीय ज्या भक्त श्रीकष्ट्रांनीरिक

সমাগত হয়, পরে, ইহার রস রক্তাশয়ে উপস্থিত হইয়া রক্তের উৎপত্তি করে, এবং তথা হইতে ফুসফুসীতে গিয়া বাতাস সংযোগে ইহার ঘোর লোহিত বর্ণ হয়, এবং পুনশ্চ তাহা রক্তাশয়ে আদিয়া উপস্থিত হইলে তথা হইতে धमनी निया भदीतमय वााशृङ इहेशा প्रकाव, एक, निकीवन প্রভৃতির উৎপত্তি করিয়া পরিষ্কৃত হইবার জন্য পুনশ্চ ঐ क्रमकूमीएं जामिशा डेशिइंड इश। এইরপ , क्रमागंड इउशार्ड जलामितात भारीत निर्मिंड इरेशा थारक, এवर खो পুরুষ সংযোগে সন্তানোৎপতি হয়। অতএব আহার, নিজা विश्वंत हैजोमि विषयः ऐसिकाशन यमि कक्तिमार जुना হয়, এতছভায়ের মধ্যে বিভিন্নতা নাই বিলক্ষণ প্রকাশ পা-है(उट्डि, किन्न जिन्नथकार्त यद्भुत रैनलक्षा हहेग्राट्डि। অতএব উভয়ের উৎপত্তি এবং রুদ্ধি বিষয়ে যদি কোন বিভিন্নতা না থাকে তবে পালিত জন্তদিগের নাায় উদ্ভিজ-দিগের প্রতি ব্যবস্থা না করিলে কখন উত্তমরূপে তাহাদিগের উৎপত্তি इरेट পार मा। विल्या छे खिला এवः जन গণ এমত স্থিরতর সম্বন্ধে আবদ্ধ আছে যে, যদি ইছারা পরস্পর সাহায্য না করে তবে এক মুহূর্ত মধ্যে মহা প্রলয় इरें भारतः, कार्यन रमाय्य निमात भरीका एया बिलिभिन হইরাছে যে, জন্তরা যে নিশ্বাস পরিত্যাগ করে তাহাতে जिंडा विश्वाक छन जाएइ, डेसिकाशन (महे मकन जलदृष्ट করিয়া ইহাদিগের পরিকৃত বাযুর সহিত মিশ্রিত করত धो विराक्त छन मश्रमाधन भूकिक क्रक्षितिये कीवन इका क्रिङ्हि। नद्रशंग यथन द्रोशिद क्रदान आहम পिङ्ङ

হইয়া অসহ যাত্রশায় কাত্র হয় তখন পর্বতাকার স্বর্ণরাশি প্রদান করিলে যে উপকার বোধ না হয় এক সামান্য উদ্ভিজের গুড়া দারা তাহাদিগের দেই যাতনা নিরাকরণ পূর্বাক ততোধিক উপকার বোধ হইতে পারে এবং তদ্য-তীত আমাদিগের আহারীয় বস্তু শ্যা ও গৃহনির্মাণ कतियोत नामा श्रकांत्र प्रदा, हेजामि (मह्योज। निर्दाहरूत य मकन প্রয়োজনীয় তৎসমুদয় উদ্ভিক্ত হইতে প্রস্তুত হয়। অতএব যে সকল বস্তু হইতে এত উপকার দর্শে তাহাদিগের প্রত্যাপকার করা উচিত। যদিও সত্য বটে স্থানে২ ভিন্ন প্রকার উদ্ভিক্ত উৎপত্তি হইনার উপায় স্বাভাবিক निर्मिष्ठ इहेशांट्इ, यथां, तम मर्धा मनुधानिशांत काम मा-राया वा जित्र क व्यक्त कि क्रिकोरी निक्री है इसे शिक তাহা নিরীক্ষণ করিলেই ইছা সপ্রমাণ হইতে পারে। আমরা পরম্পরায় অবগত আছি যে কোন্ব রাজ্যমধ্যে কেছ এবিষয়ে হস্তার্পণ করেন না, যেহেতু তথাকার বনমধ্যে স্বাভাবিক ক্ষিকার। নিকাহ হওয়াতে তদার। সেই স্থানের মনুষ্য-निर्भन डेপङोनिक। निर्याह हहेग्रा थारक। यथा उत्तर्मन, भन्न অনায়াসে তাহাদিগের সমুদয়কে একতা পাইবার জনা ক্ষ্-कांशा करा मनुशानितात वित्नित श्राजनीत इनेतारह।

উক্ত প্রকার উদ্ভিজ হইতে জন্তদিগোর যেরপ উপকার দর্শে তদ্বিরণ যৎকিঞ্চিৎ লিখিরা এক্ষণে তদ্বারা যে প্রকার মনের স্থখ ও শারীরিক স্থতা জন্মে তদ্বিষয় লিখিতে প্রস্ত হইলাম। এই পৃথিবীতে রাজনেবা, বার্শিজা, এবং কৃষিকার্যা এই তিন উপায় দ্বারা মনুষ্দিগের দেহ্যাত্রা

निकी इन्टिए। किन्न क्रिकार्या भूटकी क इन् कार्यात्र जामून इहेब्राइ, कांत्रग क्रिकिटिगां १ भन्न ख्रेना मकन जिन অংশে বিভক্ত হইয়া প্রথমাংশ রাজার রাজ্য জ্না রিক্তি হয়, দ্বিতীয়াংশ ক্ষক আপনি গ্রহণ করে, অবশিষ্টাংশ वाणिका कार्या निराधिक इहेरा शारक। शृथियीत প्रथमा-বস্থায় যখন রাজকার্যা এবং বাণিজ্যের কোন স্ত্র ছিল না उथन छेम्द्र शदिरिशायन जना मकरलई क्रियकार्याः नियुक् ছिলেন। পরে অন্যান্য কার্য্যের আবশ্যক হইলে কেহং তাহাতে निशुक्त इहेलन वर्छ, किस्त क्रमरकता मकलरकह প্রতিপালন করিয়া থাকে অতএব যিনি যে কার্য্যে প্রব্রত থাকুন, কুষ্কের সাহাগ্য অভিলায করেন না এমত কেহ नारे, जञ्जद मकलकार्ड रेशाउ दिल्पिय मानार्याती হওয়া অতি কর্ত্রা। অনেকেই আপনাকে সুখী জান कित्रिश क्रिकिएरीत शिविद्याम श्राप्त करेए जमीकांत शो-इंड भारत्न। किन्तु ज्वभाभार्थ कि धरना छे भार्कि छ इहेश। थारक ? जिं छे छे । तमन कुमर । तिकृषिक इहे , लि । न्द्रशे इतः । ज्याना जलामा नम् जाना इरेशा जिल्लानिकानि তাকিয়ার উপর দেহ হেলন প্রকে নিষ্কর্ণন্তি হইয়া विभिन्न शाकित्न कि अशी इहेड शाहत? क्षेत्रहे नहा। कार्र बडाम्नान्याः मनूनाक वादा जिन्मा पर्शहर्ड भारत वर्छ, किन्छ आखरिक द्वःश्वानन छोत्रांत्र मित्रक অহরহঃ দয় করিয়া খাকে, যেহেতু মনের সম্ভোষ না इहेटल मनुषा कथन जूथी इहेट शांद्रना। धरनाशार्कान কেবল আকাজদা রদ্ধি হইয়া থাকে, কোন কালে তাহা নির্ভ

रग्र न। আলেকজাতার বাদশাহ এই সসাগরা পৃথিবী জয় क्रिय़ा मुम्छ ब्रांखा थे थे थे क्रिय़। यथन श्रीय वाक्रविमारक বর্ণন করিয়া দিলেন, তথন এক ব্যক্তি তাঁহাকে জিজাসাক-রিলেন যে ভাঁহার আপনার জন্যে কোন্রাজ্য রাখিলেন? তাহাতে তিনি উত্তর করিলেন আমার অন্য রাজ্য জয় করিয়া লইবার আরো আকাজ্কা আছে, অতএব আকাজ্কার শেষ নাই। লিদিয়া দেশীয় মহারাজ ক্রিশশ সোলন নামক এক মহাপণ্ডিতকে আপন সভায় আহ্বান করিয়া আপনার সমুদয় ঐশ্বর্যা প্রদর্শন পূর্ব্বক জিজ্ঞাস। করিলেন যে পৃথিবীর মধ্যে सूथी कान् राकि? তাহাতে তিনি উত্তর করিলেন, " এই পৃথিবীতে স্থী কেছই নছে, তবে ক্ষকদিগের গৃহের মধ্যে যৎকিঞ্চিৎ সংখের আবিভাব দেখিতে পাওয়া যায়। তাহাতে রাজা ক্রোধান্তিত হইয়া ঐ পণ্ডিতকে অবজ্ঞা করিলেম। अर्हे-কিছু দিবসাত্তে পার্ষ্য দেশীয় মহারাজ সাইরসের সহিত যুক্ষে পরাভূত হইয়া তাৎকালিক প্রথানুসারে ভাঁহাকে कामो निवांत ऐतारा इहेल जिन मानदात नायाछात्रन পূর্বক উচ্চৈঃম্বরে চীৎকার করিয়া উঠিলেন। সাইরস তাহা অবণ মাত্র ভৎকারণ জিজ্ঞাসা করিলেন। তি-নি ভাঁহাকে ভাবদুভাত্ত অবগত করিয়া কহিলেন যে यिन जिनि जीमारमनीय क्रमक इहेर्डन उर्व छाँहारक अहे. कामी कार्षत्र निकं जामिए इस्डमा। मनूरकात्र वामनात्र অন্ত নাই অতএব তাহাতে কিরপে সুখোৎপত্তি হইতে পोরে। কিন্তু থিনি বিষয় বাসনা পরিত্যাগ পূর্বক স্থির मर्था मन विखीर्ग कत्रिया खानातूनील्य आंगल मरखारा

कतिएउएइन जिनिने न्यूर्थेत त्रांटका अधिका इनेगाट्या। অনুসন্ধান করিয়া দেখিলে প্রায় কাছাকেও এতদ্রপ দেখিতে পাওয়া যায় না, তবে রুষকদিগের মধ্যে কিঞ্চিৎ স্বরেধর উপলব্ধি হইয়া থাকে। কারণ তাঁহাদিগের মন ক্ষ্যি-कार्रिं। तक शांकांश जांत किছू (करे वांमना नारे, (कतन কি প্রকারে ভাঁহাদিগের ক্ষেত্রাৎপন্ন রক্ষ সকল উত্তম-क़िश कनवीन इन्टेंड शिद्य, न्यांत कांत्र वांत्र मन्नादन, डाइनिक निशंख जानस्थान कतिएक इशं को सांक क्रमनः क्यानीसर्वत शिकिश्निन नीना थेगाई ठाईात जाउँकतान छेमा इंड-हाएक मि शहमानम नाएकत शील कहेएक शीरत। निर्मिषकः তাহার অঙ্গ প্রভাষে সঞ্গলিত হওয়াতে বহু ঘর্ম বহির্গত হইয়া আন্তরিক ক্লেদ নির্গত হইয়া যায় এবং ক্রার জড়তা কোন স্থানে আর থাকে না। পরে দি-दोनमांत्र कृषक सीग़ कोरा ममाधा कहिया यथन गृह्ह পুনরাগ্রম করেন তখন তাঁহার মন প্রকুল হইয়া (अभागतम (अशमीतक अ मलागिक मर्गन कराइड পরিশ্রেষ ক্লেশ তার থাকেনা। অবশেষে ক্রণায় কা-ভর হইয়া তৃপ্তিপূর্বক ভোজন করিলে সংখ্য নিদ্রা आमिशा जाकर्रन करत এवर जारेड्डरना राभनी गार्थन করিয়া প্রাতঃকালিক ক্রিয়াসকল নিয়মিতরাপ সম্পান্ন হও-য়াতে ভাঁছার মন সম প্রফুল থাকে, তংগ্রন্ত ভাঁছার শরীর সতত রোগগ্রেন্ত হইবার কোন সম্ভাবনাই থাকে না। এবং ভাঁছার মনোমধ্যে কোন ভাবনা থাকে না, কেবল পরিবার প্রতিপালন করিবার আকিঞ্চনে কৃষক আপন পরিশ্রম

मकल करिएड शीर्त्रन, ध्रे छना ध्रम्ड वाक्टिक सूथी विनिशा ज्याना सीकात कतिए इहेरक। ज्ञान धम् सु-খের রাজ্যে অধিরত হইবার মানসে রোমদেশীয় মহারাজা দিনদিনেটদ রাজার পরিত্যাগ করিয়া ক্ষিকার্য্যে প্রবৃত্ত হইয়াছিলেন এবং পুনশ্চ যখন তাহাকে রাজপদাভিষিক্ত করণাভিলাবে রাজদৃত আহ্বান করিতে আসিয়াছিলেন তৎ-कारल जिनि जैकित औरक जारकन करिया कहिलन, " अहे वरमत এই (कार्व ने क वर्शन करा) इहेल ना, कार्र व जनूरताथ প্রযুক্ত আমাকে রাজকার্য্যে নিযুক্ত হইতে হইল"। অতএব আমাদিগের প্রাণ্ডক্ত মতে যেরূপে কৃষিকার্যে উপকার मर्ल उम्रिद्रंग थकान दिहिए खर्ड इंट्राएंड धरे जरूमानू इरेटिइ ए, मकल दाक्तिव भएक क्रविकारी करी कर्वरा। माजितिक क्रिकारा (मिथिश) आमामिर्गित धरे (वाथ रहे-তেছে যে, রক্ষ হইতে সংপক্ষ ফলের বীজ ভূমিতে পতিত इरेलिन जाना जन्निक इरेग़ा ठांत्रा छे९भन रुग, এवर के ठाउँ। इकिंगानी इहेश পরে ফলবান इहेर्वक এমত পূর্বা-स्रोजन मगुन्य निर्मादिक जाइ। यथा, পৃথিবী আধার इकेशा वाहि मध्यार्ग जुलानि नाना वस शंहाकेशा धक्ज মিশ্রিত করণ পূর্যক রসপ্রস্তুত করিতেছে, উদ্ভিজ্ঞাণ সেই त्रम ভোগাতে स्था छेडाएभ भतिभाक भारेशा कल कूल শোভিত হইতেছে, বায় সতত সঞ্চালিত হইয়ারস প্রদানে তৃত্ত করত উহাদিশের নিশ্বাস প্রশ্বাদের ক্রিয়া নির্বাহ कतिएड इं शबु मकल পরিবর্তিত इहेश वर्णा पर्यायकाम গ্রীষ্ম বর্ষা শীত আগমন পূর্বক স্থীয়২ ত্তণ প্রকাশ করিয়া

উহাদিগকে कथन इक्तिभील, कथन कलवान्, এवर कथन वा এই इरे कार्यात विद्रिं कितिएए। स्यात উভाপে वादि मकन धुमोकादा शश्यमण्डल विखीर्ग इहेश रमशक्रि धांत्रग পূর্বক স্থানে২ ব্যাপৃত হইয়া বারিবর্ষণ করত সর্ব্ব প্রকার উদ্ভিজের উপরি পতিত ছইতেছে। রক্ষমূলে যে সকল বীজ পতিত হয়, তাহা সমুদয় অঙ্কুরিত হইয়া চারা উৎপন্ন হইবার কিছুই সম্ভাবনা নাই, কিন্তু উহা নদীর স্রোত বা বায়ু সহকারে অথবা জন্তদারা স্থানেং চালিত হইয়া পড়ি-ल वार्तिन-वार्ति मश्यार्ग जङ्गतिष्ठ इहेशा (महे खांकि वह मः थाक त्रक छेर भन्न इरेटिए । यमि अभन कोम मार्था বাতীত স্বভাব কর্ত্ক এপ্রকারে রুষিকার্য্য নির্বাহ হয়, তবে মনুষ্যদিগের এবিষয়ে হন্তার্পণ করিবার প্রয়োজন কি? স্থিরতর্রূপে বিবেচনা করিলে ইহাই প্রভীত হইবেক य यां जां विक निश्रास राक्षेश कल कुल छेर शह इहेशा शांक তাহা মনুষ্যজাতির অভিপ্রায়ানুযায়িক কখন নহে। তৎপ্রযুক্ত उँशिता क्रिकार्रात मानानिध कोनन रुखि कतिया साजा-বিক অপেকা উত্তমরূপ ফল ফুল উৎপত্তি করণের উপায় कत्रिशाष्ट्रिन, यथा, शांलावकूल जांडाविक शक्षमम इरेग्रा थांक, এवर अविनिष्ठ किनाद भित्रिशृन किस अपूर्वात किना बात्रा थे किनत मकलित পরিবর্তে বহুসংখ্যক দলের উৎ-পত্তি হইতেছে তাহাতে এ কুল শোভান্বিত হইয়া সোগছে আমোদিত করিতেছে।

বীজ হইতে যে সকল চারা উৎপন্ন হইয়া থাকে তাহার ফলের গুণ তাদৃশ হয় না, তৎপ্রযুক্ত যোড় কলমে, গুটী

कन्या, मां कन्य धवर नायात्वन कन्य ठावा छेर्नानन षांत्रा कल कूलात छे कर्य हा इहेता थांक, यथा, कत्रिका, व्याम, निष्टू, रेडाांनि इक छेङ श्रकाद्र डेश्शम ना कतिन, कल कूरलत छन পরিবর্তিত হইবার সম্ভাবনা। গেড় হইতে य मकल উদ্ভिक्क कि शिया थारक छोटा निर्धित स्राजीवक অবস্থায় আল্গা মৃত্তিকার অভাব প্রযুক্ত গেড়ু রদ্ধি পাইতে পারে না। কিন্তু কর্ষিত ভূমিতে রোপণ করাতে এক্ণণে রহদা-কারে উৎপত্তি হইতেছে, কারণ তদ্বারা অধিক রস শোষণ পূर्वक श्रुष्ठे इहेश। इकि भाग्न, यथा, मान्याम, मूना, भाक्त्र, करू, मानकरू, इंजािन। अर्थत, आलूत वीख वर्शन क्रिल অতি কুদ্র আলু উৎপন্ন হয়, কিন্তু উহার চক্ষু কাটিয়া উক্ত প্রকার ভূমিতে পুতিলে রিদ্ধশীল হইবেক। কদলী রক্ষ সকল কৰিত ভূমিতে পুতিবার পূৰ্কে যখন বন্য অবস্থায় ছিল, তখন উহার ফল বীজেতে পরিপূর্ণ থাকিত কিন্তু এক্ষণে বিবেচনা পূর্বাক রোপণ করাতে বীজ সকল লোপ পাইয়াছে ও শদ্য অধিক হইয়াছে, অতএব যে কারণে ফল সুল এরপ রদ্ধি হইতে পারে, তাহার বিষয় জাত হওয়া অতি कर्त्वरा, अञ्जना आमि कमनः अरे विवस প্रकानं कतिए अञ्च इरेलाम। जार्रि रेश्रे विरवहा, कि नियम जबल-चन कत्रित्न कृषिकार्या निशून इन्या याहेट भारत। जन् দেশে ক্ষবিকাষ্য যেরূপ অবস্থায় প্রচলিত আছে তাহা मिथिया आमिनिरांत अनुमान इक्टिइ य क्लिनिरांत मसा এবিষয়ে নিপুণ হইবার কোন বিশিষ্ট ধারা নাই, কেবল স্বাভাবিক নিয়ম দেখিয়া কতিপয় উদ্ভিচ্ছ রোপণ করিবার

बावन्ना शुक्रां शत्र हिन्छ आह्न, छाड़ाई अपनिशे क्रिकार्सात्र আমূল হইয়াছে। কিন্তু অন্যদেশীয় কোন চারা আনিয়া **এই দেশে রোপণ** করিবার বাবস্থা কেছ জ্ঞাত নছে, এবং কি প্রকারে ক্রবিকার্যের উন্নতি হইতে পারে এমত চেফা কাহারও নাই। প্রতিবৎসর বর্ধাকালে গজার জল প্লাবিত হইবায় উহার পলী পতিত হওয়াতে ভূমি এমত উর্বরা হয় य मांत निवात जांत প্রয়োজন থাকে না, এই জনা এতদে-শীয় লোকেরা ভূমিতে সার দিবার কোশল বিষয়ে চির-অজই রহিয়াছে। কেবল স্বাভাবিক বদান্যতার উপর নির্ভর করিয়া लाकिनिर्गत खितक भ जाएक य वीक वशन कति लिहे छोत्र। छे९পछि इइए७ পादिएक। इमानी कलिकाचा वछानिक छेन्। न भः छार्थन इंश्यांट क्रियकार्यात को न दियस कोनर राक्तित तुर्পिं कि कि निर्मिष्ठ। यनि এই मिट्ने क्रिय-বিদ্যার শিক্ষা প্রচলিত হয় তবে ভারতভূমি শস্যশালিনী इरेश तक्ष्मानिनी इरेटवन। आभानिरशत এमिनीश कृषि मच्यूर्गक्रिथ क्रिकिटिशं र्याशं (मिथिश) मर्नाम्द्रा এक्रथ जारकार्भन छेनस इट्रेड्ड य क्रिकारी निकाद विवस्य कांन वाक्तिहै निशून नाह। नीनकत माहित्दता धहै (माम আদিয়া नील त्रांशन कर्नामस्त किছू मिन शास हुई जिन लक होका डेशार्ड्डन करिया यहमान शूनर्यमन कर्यन, किस खामत्रा এই দেশীয় লোক इडेग़ा किहुई कतिए भातिनाम ना, कि जाम्जर्या! हिन्दुनिरात गर्धा क्रिकोर्दात এक्रथ ব্যবস্থাহীন অবস্থায় কিছু নূতন নিয়ম অবলন্ধন করিলেই

ক্ষুষ্কদিগকৈ এই উপদেশ দিতেছি যে তাঁহার। স্বভাবের অনুবর্তি হইয়া যে সকল নিয়ম উদ্ভিক্ত রাজ্য মধ্যে ব্যাপৃত আছে এবং যাহা ইহাদিগের উৎপত্তি ও রদ্ধির কারণ হইন্য়াছে তৎসমুদ্য অনুশীলন পূর্বক ক্ষৃষিকার্য্য ককন্। প্রখন্মতঃ উদ্ভিক্তদিগের স্বভাব কিরপ; দিতীয়তঃ বাহ্যবস্তুর সহিত উদ্ভিক্তদিগের জীবনোপযোগি ক্রিয়ার কিরপ সম্বন্ধ; তৃতীয়তঃ দেশের স্বভাবানুসারে উদ্ভিক্তদিগের কিরপ পরিবর্তন হয়; চতুর্যতঃ কি কৌশল দারা ক্ষৃষিকার্য্য নির্বাহ করিতে হইবেক, ইত্যাদি কয়েক নিয়মের যদি সম্মেলন পূর্বক ক্ষিকার্য্য নির্বাহ করিতে পারেন তবে ইহার উন্নতি হইবার প্রতিবন্ধক কিছুই থাকিবেক না।

क्षिमर्भण।

-000000-

উদ্ভিজ্জদিগের স্বভাব।

যদি উদ্ভিদ্ধনিক জীবিত পদার্থ বলিয়া স্বীকার করিতে হয়, তবে পালিত পশুর প্রতিপালনের ন্যায় ইহাদিগের সভাবার্যায়ি ব্যবস্থা না করিলে কি প্রকারে তাহাদিগের রিদ্ধি হইতে পারে?

বে অবস্থায় উদ্ভিজ্জেরা জনিয়া থাকে তাহাকে ইহাদিগের সভাব কহিতে হইবেক, বিশেষতঃ স্থান এবং কাল ইহার প্রধান কারণ হইয়াছে, এই ছুরের স্বভাবানুদারে উদ্ভিজ্জেরা নানাবিধ প্রকারে জনিয়া থাকে যথা, বারিজ্ঞ, তরজ, গিরিজ্ঞ, স্থলজ্ঞ। অপর, কেহ শীতকালে কেহবা প্রীম্মকালে কেহ কেহ বর্ষাকালে জন্মে। এতয়তীত যাহাদিগের বীজ্ঞ রসমুক্ত এবং আজ্ঞাদন অতিশয় পাতলা তাহাদিগের বীজ্ঞ ভূমিতে পতিত হইতে অপ্পারস সংযোগে পাঁচয়া নফ হইবার সম্ভাবনা, এই জন্য ইহারা পুস্পা দত্তের উপরি অঙ্কুরিত হইয়া চারা রিদ্ধি হইতে থাকে পরে মূল দ্বারা মৃত্তিকা হইতে রস আকর্ষণ করিবার উপযুক্ত হইলে ভূমিতে পতিত হয়; এই রূপে এগেভ ও গরাণের বীজ্ঞ অঙ্কুরিত হইয়া থাকে।

माठेकमाई गांका वांकाद्य हिटमत वांमांम माटम विचारिक चांटक जाराज भूका उत्पान करेगा काषणजः मिट्य मुचित वरेगा गटका भारत कम उत्भिष्ठ कडाम क्या मृत्या विमीन करन नुक्र चिउरंग याच्या उथाय याक्यांतित याद्य, कार्यन याच यखा मर्गिता रेडोरा नक डर्ड लाइ, इरे कम मुख्य लिए रहेश। डेटिट्स के चार्स देशनिंद्राय नेख अकृति विकास हाता रहिर्गंड कात। कड़ाई मुहि मित्रा बेटार्गिक नीत्र পांडला बांब्हामन बार्ड, अहे खना एक मृतिकांत अवर एक সময়ে ইহাদিগকে উৎপন্ন করিবার বাবস্থা নিরূপিত করা आছে। किन्नु मीटित अरमात्म यथम देशामितात रीख भति-शक इहेश। डेट्रे उएकाटल यान मनूया कर्ड्क जुनिया तक्ति ना इश उथाशि वर्षा जामिशा छेशिश्व इश्ल के चुरित ভিতরে থাকিয়া রক্ষা পাইতে পারে, কিন্তু ইহাতে অধি-কাংশ নষ্ট হইতে পারে। অতএব কোন চারা রোপণ कोल हेशद अভावानुमाद ममख जात्यां क्रम मा कदिल कना छे थ भन्न इहे ज भी दिए क ना। ज ल याहाता ज शिशा थारक छोट्डोनिर्शंत खना कान निरंम खनलयन दर्श हुकत, कांत्र ज्थाश यादेश जेशानिशांत खना मनुर्याद्य कांन कर्ष নিকাহ করিতে পারে না, কেবল জলের পরিমাণ বিবে-চনা করা অভি কর্ত্রা। বর্ষাকালে অধিক জল প্লাবিভ হওয়াতে জলজদিগের পত্র সকল নিমগ্র করণ পূর্বক পচা-रेश विनम्हे कर्त्र, उज्जना श्रुक्तिनीत कान शास्त्र नाना কাটিয়া অধিক জল হইবামাত্র বহির্গত করিয়া দিবে, এবং এমত পরিমাণে জল রাখিবে যে ইছার উপরে জলজদিগের

পত্ৰ সকল ভাসিয়া থাকিতে পারে। যদি কোন বৈদেশিক জলজ এই দেশে আনিয়া রোপণ করিতে হয়, তবে তাহার खना এই निराम প্রকাশ করিতেছি। ইহার বীজ প্রজরি-भीत्र मरक्षा विखीर्ग कतिया। निरक्षि कतिरल अक्रुतिङ इह-বার সন্দেহ থাকে, কারণ জলমধ্যে যেরপ উত্তাপ আছে তাহা ঐ বীজ অঙ্কুরিত করিবার সমযোগ্য হয় কিনা তা-হা সন্দেহের বিষয়, এই জন্য এক গামলায় ুবালি এবং मात्रमृष्टिका ममजारा मिखिज कतिया পরিপূর্ণ করিবেক। পরে এ বীজ সকল ইছাতে পুতিয়া অনা এক গাঁমলার জলে ডুবাইয়া রাখিবেক। যদি অধিক উত্তাপ আবশাক इश जात कल कमाहेश। नित्व এवर जन्म छेडान जावनाक इहेल छल अधिक जालिया नित्य, धहे श्रकाद किर्दिल खे नीक जक्ष तिङ इटेरिक। श्रेरत होता हिमिनीन इटेरन श्रुक्तिनी मक्षा এक जिदो करिया जाशांट श्रु जिया नित्न, इंशांड আর কোন ব্যবস্থা আবশাক হইবেক না, কেবল প্রাণ্ডক্তমতে खलं পরিমাণ বিবেচনা করিতে इक्टेरक, এইরপে বিক্টো-রিয়া রিজিয়ার বীজ রোপণ করিতে হয়। জলজের নাায় তকজের প্রতি কোন ব্যবস্থা আবশাক হয় না, কারণ তথায় क्रम्टक इ रखन कर्म निकां इस्ट भार ना देशना স্বভাবতঃ তক্তর কাণ্ড এবং শাখার উপরে জান্ময়া থাকে। य পर्यास जे इत्कद लांघन नकि ना इहा, उनर्याध राह् मर्यार्भ (य द्रम প्रांख इह जाहार्डिं हिम भोहा। यिन কোন বৈদেশিক তকজকে আনিয়া এইদেশে রোপণ করিতে इश তবে रीक यथन कहिए इहेम कोन हाकत माथात

विश्व ছানে বিন্তীর্ণ করিয়া আবশ্যক মতে জল দিবে কিন্ত हेरा कि विषयां के इस उक्कना नियानमध्युक व्यथि जिस्र জাতির চারা আনিয়া রক্ষের কাণ্ডোপরি বান্ধিয়া দিবে এবং প্রতিদিবস তাহাতে জল দিবে, কিম্বা কোন বাজের ভিতরে বা রক্ষের শাখাতে সাজাইয়া বান্সের ন্যায় করিয়া তাহার ভিতরে রক্ষের ছাল পরিপূর্ণ করত তাহাতে धे ठात्रा मकल श्रु जिया किथिएर खल मिर्व। এই खांजि চারার মধ্যে বানিলা সমূহ মনুষ্যের অতি প্রয়োজনীয়, ইহার ফলের গান্ধে স্থান আমোদিত করে। যদি রোপণ করিবার আবশ্যক হয় তবে ইহার শাখা কাটিয়া এক বালুকাপূর্ণ টবে পুতিয়া দিলে মূল সকল বহির্গত হইয়া চারা উৎপন্ন হইতে পারিবেক, পরে কোন রক্ষমূলে ঐ চারা मकन পুতिয়া ইহাদিগের চতুঃপাশ্বে ইফক সাজাইয়া দিবে। গিরিজ উদ্ভিজ্জ মধ্যে মনুযোর কর্মের যোগা এমত কিছুই দেখি নাই, যদি এমত কিছু প্রকাশিত হয় তবে তাহা উদ্যানে রোপণ করিবার জন্য ভয় ঝামা কিম্বা খোলাকুচি সার মৃতিকা এবং বালি একত্র মিশ্রিত করিয়া এক টব পরিপূর্ণ করিবেক, পরে ঐ চারা তাহার উপরে পুতিয়া দিবে।

ऋनक ऐखिएकात विषय।

ভূমিতে যে मकन উদ্ভিজ জিমিয়া থাকে তাহাদিগের মধ্যে কডকওলিন মনুষোর অভান্ত প্রয়োজনীয়, তদ্ভিম অন্যান্য স্মুদয় একণে অকর্মণা বলিয়া স্বীকার করিতে হইবেক, কারণ ইহাদিগের গুণ প্রকাশ নাই কিন্তু এ সমুদয় হই শ্রেণীতে বিভক্ত আছে, অর্থাৎ একহায়নিক ও বহু-হায়নিক। যাহারা বৎসরের মধ্যে নিরূপিত সময়ে জন্মায় এবং পরে ফল ফুল উৎপাদন করিয়া কিছু দিনান্তে শুক হইয়া যায় তাহাদিগকে একহায়নিক কহে। রোপণ করণ কালে ইহাদিগের স্বভাবানুসারে মৃত্তিকার বিষয় বিবেচনা করা অতি কর্ত্ব্যে, কারণ এই সকল উদ্ভিক্তের মূল অধিক দূর গমন করিতে পারে না, অতএব অতি নিকটে অধিক রম না পাইলে ইহাদের জীবন কি প্রকারে রক্ষা হইতে পারে?

যাহাদিগের প্রকাণ্ডে এবং ফলে অধিক জল থাকে তাহাদিগের পক্ষে হাল্কা বালুকাময় ভূমি উপাদেয় হইতে পারে,
যথা তরমুজ, ফুটা, ইত্যাদি।

যাহাদিগের কাও মৃত্তিকাতে আচ্ছাদিত হইয়া য়দ্ধি পায় তাহাদিগের পক্ষে মিশ্রিত মৃত্তিকা অতি উত্তম।

याद्यां मिरात्र नाथा-विभिन्धे मूल তाद्यां निरात्र शिक्ष विकाश मुख्या उभागां भिनी दहेर्ड भारत्र।

এই প্রকারে কোন স্থানে ক্ষিকার্য্য নির্বাহ করিতে যাইলে তথার কিরূপ উদ্ভিজ্ঞ উৎপত্তি হইতে পারে তাহা ঐ উপরি লিখিত নিয়মানুসারে নিরূপণ করিতে হইবেক। উদ্ভিজ্ঞানিগের সভাবতঃ উৎপত্তি হইবার জন্য ভিন্নং সময় নিরূপিত রহিয়াছে, এজন্য পূর্ব্বে তাহা জাত হওয়া অভি আবশাক, কিন্তু বীজ প্রাপ্ত হইবামাত্র তাহা নিরূপিত করিবার এমত কোন উপার দেখি না।

উদ্ভিক্ত অনেশীয় হইলে উহা জ্বিবার সময় দেখিয়া পু-নশ্চ রোপণ করিবার কাল নিরূপিত হইতে পারে। কিন্তু যদি বৈদেশিক হয়, তবে পরীক্ষা দ্বারা কিন্তা দেই দেশীয় কোন वािकरक জिक्काम। कवित्न निक्तर्यन शहेर रूप राज्य। शहीका দারা নিরূপণ করিতে হইলে এই এক অতি সহজ ধারা আছে, यथा, এই দেশের মধ্যে শীত, গ্রীষ্ম, বর্ষা এই তিন কালে তিন বার বপন করিলে তাহা নির্দারিত হইতে পারিবেক। যদি व्यकाल वीक वर्षन कद्रा इय उत्व के श्रृ ऐसिएक र स्टार्टर महिल मिश्रिनन ना इल्याटि जरम्मूम्य नके इहेवांत्र महावनाः यथा, পालक भारकत वीख वर्षाकारल वशन कतितल किहूरे कल-मान्नक इरें एक भारत ना। यनि भी उस दिनोग्न रकान वीज वर्शन कतिए इस, उत्य अहे मिटन भी जिस अथम अवस् है हो निर्भात পক্ষে অতি উত্তম সময় হইতে পারে। এই জন্য কপি, শাল-शाम, शांख्य रेडामि मगुनाश भी उत्र आंत्र छरे दार्थन क्या यात्र, कात्रन शुक्तां एक शूजितन अधिक वर्षात छातन शिवित्रा নষ্ট হইয়া যাইতে পারে।

বহুহায়নিকদিগের পক্ষে উক্ত প্রকার মৃত্তিকার বিষয় বিবেশ্চনা না করিলে কদাচ উৎপন্ন হইতে পারে না। যাহাদিগের মূল কোমল এবং রসে পরিপূর্ণ, তাহাদিগের পক্ষে বালি এবং চিকণমৃত্তিকাযুক্ত ভূমি উপযোগিনী হইতে পারে, যথানারিকেল রক্ষের মূল অতিশয় কোমল এবং রসযুক্ত এই জন্য বেহার প্রদেশের শুষ্ক কঠিন চিকণ মৃত্তিকাতে রোপণ করিলে ইহার মূল সকল বিদীর্ণ করণ পূর্ব্বক মৃত্তিকায় প্রবেশ করিতে পারে না এবং তাদৃশ রস পাইতেও পারে না, এজন্য বেহার

लामिक क्यन वहे हक छेर्शन हत मां, किन्त याहामिश्वन मांचाविकिक म्मान जिल्ला वहामिश्वन व

বাহ্যবস্তুর সহিত উদ্ভিজ্জদিগের জীবনোপযোগি ক্রিয়ার সম্বন্ধ বিষয়।

मृष्टिका, अरे कथक यञ्च, উদ্ভिজ্জদিগোর উৎপত্তি ও র্ছির কারণ হইয়াছে; তৎপ্রযুক্ত ইহারা পরিমাণানুসারে উদ্ভিজ-দিগের অন্তর্গত হইয়া তথায় স্বীয়২ অংশ সঞ্চয় করি-রা রাখে এবং কিয়দংশ বহির্গত হইয়া যায়। এইরূপ রাশিং ক্রমশঃ সঞ্চিত ও মিজিত হইয়া উদ্ভিজ্ঞ দিগকে নিয়ত রছি-नीन कत्रिटाइ, यथा, मूनाधाङारा किलभग्न हिस जाहि उपा-রা পৃথিবী হইতে নানাবিধ বস্তু জলের সহিত মিজিত হইয়া পত্তে উত্তোলন করিতেছে, এবং পত্তের নিম্নভাগে যে সকল बद्ध আছে তাহাতে বায়ু এবং বায়ু সংযুক্ত রস প্রবেশ করি-<u>(उट्टा अरे इरे त्रम अकत स्था छेटाल श्रीक्रीक शारेत्रा</u> . इरे व्यथ्न क्रेटिंग्ड। क्षेत्रमण्डः जकार्न मात्रज्ञां क्षेत्रां क्षेत्रां मर्था गार्श्व रहेशा रूजन कार्छ इक्ति कतिरङ्ख् धवर धना क्रमीयांश्य धर्म इरेया जे शज दक्ष, निया विदर्ग इरेडिहा यमानि र्क ठांत्रि वखत्र (कौननपात्रा कृषिकांश निर्कार रह, करन हैरानिगदक कि পরিমাণে এবং कि প্রকারে ভিন্ন ভিন্ন

উত্তেজনার বিনয় হইতে পারে, এই কারণবর্শতঃ দীর্ঘ এক শাঁকো নির্মাণ করিয়া তাহার উপরে এক গৃহ প্রস্তুত করিবেক जवर इंडाब इंडेशार्थ जिन ठाबि निषी निर्माण कवित्रा जांची-দিগের উপর ঐ শীতল দেশীয় চারা সকল গামলায় পুতিয়া खिनीयक পूर्खक वमाहेया दाशित, **এवर প্রতিদিব**म मायरकाम खन निर्दि;क्रमनः এইরপ কার্যা দারা চারার্দ্ধি ও সভেজ ইইরা डेठित्न প্রতিদিবস প্রাতঃকালে রেডির বাহির করিয়া দিবে। পরে এই দেশীয় উত্তাপ সহ হইলে শীতকালে এক অনারত श्वात्म श्रु जिय्रा मिट्य, किश्वा क्रयक यमि यिट्य का का व्याप श्री श्वा-त्वत्र छेखाश महा इहेरव ना छरव क्षे ठात्रा मकल कान नीडन श्वात्म श्रु जिया मित्य। भीजन प्रभीय होता मकन এই प्रत्न রোপণ করিবার জনা শীতকাল উপযুক্ত সময় নির্দারিত रहे-ग्नाट्य काव्रग उৎकात्नव छें छात्र भी उन्नाम्भी ग छे छोट्य मिष्ठ मियान रहेट भारत। धरे जना भानगाम, काभि, रेडामि এই সময়ে রোপণ করা যায়। কিন্তু এই দেশীয় উদ্ভিজ্ঞ দিগের स्रा উद्योशित विषय जीपूर्ण विदिय्या कर्तात जीवगाक्या नाहे, क्वम (य काम्बर উद्धार्थ (य डेस्डिक क्रिया) थाक मिरे काल डाङ्मिगरक রোপণ করিবেক। যদি ছায়া ছারা त्रम बाक्ष कतित्व डाङ्। উপযুক্ত উত্তাপাভাব প্রযুক্ত পরিপাক না পাইয়া কেবল শাখায় এবং পত্রে সঞ্চিত হইয়া থাকে, ভাছাতে ইহারা কেবল স্ফীত হইয়া রহদাকার विभिन्ने अवर (शंकवर्ग इय्न, अहे अवस्थाय भाषा मकन किन मा इहेग्रा (कामल इब्न, यनि हेशांउ काम शामि मा इडेक

उथानि ऐक ऐस्कि कथन कल कुल ऐल्लामन कतिर्व ना। यनि कोन डेशांश षात्रा कुन डेल्शिंख इस ड्र হইবেক না। যদি কোন উদ্ভিজ তাহার সহনাতিরিক্ত উভ্তাপে রোপিত হয় এবং তথায় যদি তাদৃশ রস না থাকে তবে ইহার পত্র হইতে যত অধিক রস বহির্গত হইবেক उৎপরিমাণে মূলদারা পৃথিবী হইতে আরুষ্ট হইবেক নাঃ তৎপ্রযুক্ত নবীন পত্র সকল মিয়মাণ ও শুষ্ক হইয়া যাই-(तक, यिन এইরপ উত্তাপে মৃত্তিকায় এবং বায়তে রস থাকে তবে অধিক উত্তেজনায় এত অধিক রস আকর্ষণ করে, যে তাহা ঐ উদ্ভিজ্ঞ পরিপাক করিতে পারে না, उद्धना क्रमीयं जाशिक मिश्चि इहेया जे शृंदिश क्रिकादा नाथा शलवरक क्लोड कतिया मीर्घाकात विनिष्ठे करत, किन्छ कुल कल ठोहाँ उ कथन छे । यह प्रहे छह छ উত্তাপের বিষয় লিখিয়া আমরা বিবেচনা করিতেছি যে ইছা সর্বাদা ঘটিত হয় না। যখন এইরূপ ছইবেক তথন কোন ऐ**शांत्रक्राय ऐक्टांशित शैनका कत्रिक शांत्रिल এ**३ व्यथकात्र इहेदांत मखायमा थाकिट्यक मा। এই मकल कार्रण विट्यहमा कित्रियां व्यामानित्यत्र (यांस इक्टिड्ड (य, এके जिलीस (कांन উদ্ভিজের প্রতি অধিক উত্তাপ সংলগ্ন করিশার আবশ্যক नाई कार्र कार्जादिक উত্তাপের দার। সকল ক্ষিকার্যা নির্বাহ इडेट পाद्र, क्वल भाषा एक्ट्रिक कांन छात्रा छे९ भामन करि. बांब क्या मर्व मगत्र मगजाव छेतां वावमाक इस। ७६-প্রযুক্ত তহুপরি কাচ পাত্র আচ্ছাদন দিয়া প্রয়োজন সম্পন্ন উদ্ভিক্ক প্রতি ব্যবহার করিলে নির্মাতরপ হইতে পারে তাহা
আমরা নিশ্চর বলিতে পারি না, তথাপি আমাদের মনে
অনুসন্ধানদারা যাহা উপস্থিত হইয়াছে তাহা যৎকিঞ্চিৎ
লিখিতেছি। প্রথমতঃ, উদ্ভিক্ষদিশের সমুদর যন্ত্র স্থীর স্থীর
কর্মে প্রব্রু করিবার জন্য উত্তাপ আবশ্যক করে, কিন্তু ইহা
সমভাগে থাকিলে ঐ যন্ত্র সকল বিজ্ঞাম না পাইয়া এমত
ক্রান্ত হকের হানি হইতে পারে।

পূর্ব্বাক্ত বিশ্ব নিবারণ নিমিত্ত শীতলত। প্রয়োজন বিধার
নিশাগমে এবং হিম শতুর আগমনে উত্তাপের হ্রাস হর, এবং
পুনশ্চ দিবাভাগে ও অন্য শতুতে তাহা পূর্ব্বমত প্রবদ হুর।
এই ব্যবস্থা উদ্ভিজ্জদিগের জীবনোপযোগী ক্রিরার সহিত
সমিলন পূর্ব্বক নির্দ্ধারিত করা আছে, দিবাভাগে ইহাদিগের
সমুদর রস পরিপাক হইতে থাকে এবং তাহার কিয়দংশ
বাহ্প স্বরূপ হইরা পত্র হইতে বহির্গত হয় কিন্ত রজনীযোগে
তাদৃশ উত্তেজনা না থাকাতে মূলরারা রস আকর্ষণে এবং
নিশার শিশির পাতে সর্ব্বাংশে পূর্ণ হইয়া থাকে স্তরাং
প্রভাতে দিবাভাগের ন্যায় রস সংযোগ প্রযুক্ত ক্ষীণতা আর
থাকে না, শতু পরিবর্ত্তন হওয়াতে ইহাদিগের প্রতিও সেইরূপ গুণ প্রকাশ করে।

এতদেশীয় উত্তাপের বিষয় বিবেচনা করিতে হইলে ইহা
নিশ্চয় বোধ হইবে যে শীত, গ্রীষ্ম, এবং বর্ষা এই তিন ঋতুতে
তিন প্রকার উত্তাপ হইয়া থাকে এবং তদনুসারে উদ্ভিক্ত
সকল তিন প্রকারে উৎপন্ন হয় যথা, গ্রীষ্মকালে অর্থাৎ

काश्चन व्यविधि खार्छ श्रीख उत्रमूख, कृष्टि, श्रेशा रेजािम किंजिन के बिक्क कि बिया थारिक कि इंशि निगरिक जना अवुरिक রোপণ করিলে কদাচ উৎপন্ন ছইতে পারে না, কারণ ইহা-দিগের বীজ অঙ্কুরিত করিবার জন্য যেরূপ উত্তাপ আবশাক তাহা বর্ষা কিম্বা শীত ঋতুতে কদাচ পাওয়া ঘাইতে পারে না। এই জন্য যদি ইহাদিগের বীজ এই ছুই সময়ে রোপণ করা যায় তবে পচিয়া নফ হইবার সম্ভাবনা, এবং বর্ষার উত্তাপে যাহারা উৎপন্ন হইয়া থাকে তাহাদিগের জন্য গ্রীম্মের কিম্বা শীতের উত্তাপ কখন উপযোগা হইতে পারে ना, यथा, रेकू। रेरामिशक शूर्वाक প्रश्च कतियोत जना ত্রীত্মের অবসানে রোপণ করিয়া থাকে, কিন্তু অধিক জল সেচ-নের আবশ্যক হয় নতুবা প্রচণ্ড রেডির সমুদয় শুক্ষ হইয়া यात्र। मीटिं उं डेडोर्श नांना श्रकांत रेवरमिक धवर धंडरम-भीग्न वनक मकल উৎপन्न इरेग्ना शास्क। তार्रानिगरक जना इहे कांत्ज त्रांभेन कतित्न भिष्या किया एक इन्या यांग्र, অতএব কোন চারা রোপণ ্রিবার সময়ে এই তিনের মধ্যে कान् छें छा भ जारात्र योगा रहे ज भाति एक, जारा वित-চনা করা ক্রুকের অতিকর্ত্তবা। এীম আসিয়া উপস্থিত হইলে स्र्या (ममीभागान इरेग्रा তেজোবর্ষণ পূর্বক পৃশ্বিকে নীরস করেন তাহাতে উদ্বিজ্ঞাণ মধ্যে উদ্ধিতাগো আত্যন্তিক রসা-क्रुके इहेवां एक छहा निर्धात श्रेज इहेट धर्म खत्रश त्रम वहि-র্যত হইতে থাকে, তাহাতে মুলের শোষণ-শক্তি র্দ্ধি হইয়া डाइर्ड अधिक त्रम शृथिती इरेड आकृष्ठे करत धरे छना মূলে জল দেওয়া আবশাক; কিন্তু অভাবতঃ দক্ষিণ বায়সঞ্চা-

Carlot Ca

मिल इन्यांट कियमध्य तम मिक्क इरेट शांक। अरे अल्ब প্রভাব এই দেশে প্রবল, অন্য ঋতুর আগমনে কেবল কিঞিৎ रेवनक्रभा इय़, এই জন্য এখানে সর্ব্ব সময়ে উদ্ভিক্ত সকল উৎপন্ন হইতে পারে। গ্রীত্মের প্রথম অবস্থায় যে সকল রস শীতকালে পরিপাক পাইয়া সঙ্কুচিতরূপে কাণ্ডমধ্যে সঞ্চিত ছিল তাহা এক্ষণে উত্তেজনায় স্ফীত হইয়া কুজ্বাটকার জলে किश्वा क्थन वाजिनवाजि मश्यार्ग अधिकाश्न छेखिकानिगरक বিকশিত এবং নবীন শাখা পল্লবে র্দ্ধি শীলকরে। কিন্তু পু-স্পোদাম সময়ে যদি অধিক বর্ষা এবং উত্তরীয় বায়ু প্রবাহিত হয় তবে উদ্ভিজ্জ দিগের রসশোষণ হ্রাস হইয়া প্রচুররূপে পুষ্প ধারণে বিরত রাখে, এবং তৎকারণ বশতঃ ফলের হানি অবশ্য হইয়া থাকে। এই ত্র্ঘটনা নিবারণ করিবার এমত কোন উপায় আমরা করিতে পারি না, কিন্তু তৎপূর্বের এ মুকুল সকল প্রস্কুটিত হইয়া যাহাতে শীম্র ফল উৎপাদন করে, এমত कान कोनन अवनयन करा अजिक्छ्वा। यनि উ सिक्किनिरात्र মূলে সার মৃত্তিকা দিয়া জল দেওয়া যায় তবে উভয় উত্তাপে विर कल मश्यारिश श्रूष्ट्र मकल विद्यं इहेश कलवान् इस । পরে উত্তাপের রিদ্ধি ছইলে এই কালে ফলের রস উত্তমরূপে পরিপাক পাইয়া মিষ্ট হয়। অন্যান্য দেশে যথায় এইরপ উত্তাপ নাই তথায় ফল কখন এতাদৃশ মিফ হয় না। এই थकारत ऐसिष्कता कम कुन धात्रण जास ऐराउकना थायूक এমত ক্লান্ত হয় যে, বর্ষা আদিয়া রদ প্রদানদ্বারা যদি তাহা-मिगरक ज्थाना कविज जरव ममूमग्र विनक्षे रहेज। धरेक्रथ अञाविषक छेशांत्र बावका मिथिया मनूर्याता मकन छेमारिनत

जम्भूयांत्रि कार्या निर्स्वां कतिर्वन धवर ठावांत मूल आम-वान व्यर्थार योगा वाञ्चित्रा जन नित्व। किस्तु पूरे श्रष्टरत्रत नमः कथन जन मिर्य ना, कांत्रग उৎकानीन অত্যন্ত উত্তেজन প্রযুত্ত ভাহা মৃত্তিকার সহিত মিলিত না হইয়া সমুদয় পত্র মধে আসিয়া সঞ্চিত হয় এবং পরিপাক না পাইয়া উত্তেজনাক দানে পত্রকে শিয়মাণ করে। ত্রীত্ম অপেক্ষা বর্ষার উত্তাপ অ-धिक, कांत्रन अरे जगरत अक अक जिन्दाम अगठ अगढे रहेग्रा शास्क যে তাহাতে জীবন সংশয়াপন্ন হয়, কেবল বারিদ বারি পতিত इरेल वाग्न किश्विष् भोजन रग्न। উদ্ভিজের। এই উত্তাপে অপর্যাপ্ত রস ভোগ করিয়া উত্তমরূপে পরিপাক পাওয়াতে नवीन भाषा প्रताद इफियुक इहे ए था का भी एउ इ ऐका भ উক্ত হুই প্রকার উত্তাপ অপেক্ষা অতি স্বন্ধ্য, এই জন্য শীত-लडा घात्रा डेखिङ्किनिरगत नवीन त्रम वाश्नि भित्रा मकल मक्रुहिड इरेशा थार्टि, এवर शृथिवी स ममस वस नोत्रम इरेटि थारक, উত্তেজনা किছूरे थारक ना। উদ্ভিক্ত দিগের রস গাঢ হইয়া ঐ সক্লচিত শিরা দিয়া অতি মৃত্ভাবে সঞ্চালিত হইতে থাকে, তাহাতে কোমল শাখা সকল এমত কঠিন হয়' যে শীতের প্রভাবে কোন হানি হইতে পারে না। রুষি-कृरिशंद्र এই এक नियम (य कान रेवरिनिक के का द्रार्शन করিতে হইলে ইহার জন্মস্থানের উত্তাপে সহিত সে श्रीतित छेखोर्थ ममन्तर कर्रा जिंछ कर्डवा। देश्न छ एम इदेर्ड যদি কোন চারা আনিয়া রোপণ করিতে হয়, তবে এই দেশীয় উত্তাপ কোন উপায় ক্রমে হ্যুন করিয়া ঐ শীতল দেশীয় উত্তাপের ন্যায় করিতে হইবেক, তম্ভিন্ন এ চারা অত্যন্ত

कतिरवक, किन्त जना भाज जाकामम मिल उनारमा जन्नकात হইয়া ঐ কোমল পত্র সকল খেতবর্ণ হইয়া যায়। যদি এই দেশ অপেক্ষা উত্তাপিত দেশ হইতে কোন চারা আনিয়া রোপণ করিতে হয়, তবে তৎসমযোগ্য উত্তাপ শীতল দেশীয় উত্তপ্ত গৃছে যে প্রকার নির্মাণ হইয়াছে ভছুপায় ক্রমে করা যাইতে পারে। কিন্তু ইছাতে অধিক ব্যয় হয়, এই জন্য এक जून्ड विधि जाहि य के होत्रोत डेश्रांत त्रक्नीयार्श এক আচ্ছাদন দিলে ঐ স্থানের উত্তাপ বহির্গত হইয়া যা-ইতে পারে না, এই জনা ঐ স্থান উষ্ণ থাকাতে চারার প্রতি কোন হানি হয় না। জন্তদিগের দেহে যেরপ উত্তাপ উৎ-পত্তি হইয়া থাকে, বিশেষ কোন কারণ ব্যতীত উদ্ভিজ্ঞ দি-গের কাণ্ড মধ্যে তাহা কখন উদ্ভব হয় না, কেবল বায় এবং পৃথিবীর উত্তাপে উত্তপ্ত হইয়া থাকে, এই জন্য আ-মাদিগের বোধ হইতেছে যে পৃথিবীস্থ ধাতু বস্তুর সাহায্য অপেক্ষা উত্তাপ এবং রুসের দ্বারা উদ্ভিক্তদিগের রুদ্ধি হইতেছে।

বায়ুর উত্তাপের বিষয় তাপ পরিপাক যন্ত্রেনিরূপণ করা যাইতে পারে, কিন্তু পৃথিবীর উত্তাপের বিষর জ্ঞাত হওয়া অতি কঠিন। যদিও আমরা পৃথিবীর অতি নিম্নভাগের বিষয় জ্ঞানিতে ইচ্ছা করি না, তথাপি উপরি ভাগ যাহাতে উদ্ভিজ্ঞদিগের মূল বিস্তীর্ণ হইয়া আহার আয়োলজন করে তথাকার উত্তাপের বিষয় অনুসন্ধান করা অতি আবশ্যক, ইউরোপীয় উদ্ভিজ্ঞবিতারা এ বিষয় যেরূপে প্রকাশ করিয়াছেন তাহা দেখিয়া নিরূপিত হইতেছে যে

ৰায় র উত্তাপ অপেকা পৃথিবীর উত্তাপ অধিক, কারণ, বারু র जम्पिका शृथिवीत्र छेखाए अधिक छेखि इरेग्रा मून यिन রস আকর্ষণ না করে তবে পত্র সকল শুক্ত হইয়া যাইতে পারে। গ্রীত্মের প্রথম অবস্থায় যখন উদ্ভিক্তেরা পুলেপাৎপাদন করিতে থাকে তৎকালীন পৃথিবীর উত্তাপ বায়ু অপেকা প্রতি মাদে বাড়িতে থাকে। পরে বর্ষার শেষ পর্যান্ত ইহার উত্তাপ সমভাবে থাকিয়া উদ্ভিজ্ঞদিগের শাখা পলব কঠিন করিতে থাকে এবং রদকে গাঢ় করিতে থাকে, কারণ এইরপ না হ-ইলে শীতের আগমনে কোমল পত্র সকল বিনষ্ট হইতে পারে। পৃথিবীর উপরিভাগ অপেকা নিম্নভাগে ক্রমনুযায়ি উত্তা-পের হ্যানতা হইয়াছে তৎপ্রযুক্ত যদি কোন রক্ষের মূল অ-বধি প্রকাণ্ডের কিয়দ্দুর পর্যান্ত মৃত্তিকায় পুতিয়া রাখা যায় তবে র্জ মূলের আবশ্যক অনুযায়ি উত্তাপাভাব প্রযুক্ত অধিক রস আকর্ষণ করিতে পারে মা এবং বায়ুর উত্তাপে পত্রের রস विदर्शक इरेल मगूमग्र एक इरेग्रा यारेक शांत्र, এर जना ক্লুষক কখন ২ মূল খনন করিয়া সূর্য্য উত্তাপে বহির্গত করিয়া मिर्व। यमि कोन रेव्यमिक हक धरे मिर्म स्रोभन कर्त्राएड छेखारभन्न रिवनक्रना श्रयुक्त कल छेर्भामन मा कर उरव श्रथ-মত ইহা জাত হওয়া উচিত যে ঐ রক্ষ জন্ম স্থানের উতাপ অপেকা এইদেশীয় উতাপ অধিক কিয়া স্বণ্ণ হওয়াতে এইরপ হইয়াছে, যদি স্বন্প উত্তাপ প্রযুক্ত এইরপ হইয়া थां क उत्य के इत्कृत भूल थनन कतिया स्या कित्र । विक्र क

পর্যান্ত এ অবস্থায় রাখিয়া মূলের খাতে সার পরিপূর্ণ করিয়া জল দিলে নবীন শাখা পলব হইয়া পুল্প উৎপাদন করি-বেক। যদি অধিক উত্তাপ প্রযুক্ত পুল্প না হইয়া থাকে তবে মূলে মৃতিকা রাশী করিয়া তাহার চতুল্পাশ্বে খড় বিস্তীর্ণ করিয়া জল দিবে।

कटलत विषय।

আমরা চতুর্বিধ বস্তুর মধ্যে উত্তাপের বিষয় বলিয়া জল জীবনোপযোগি ক্রিয়া সম্পন্ন করত যেরূপ উদ্ভিজ দিগকৈ রিদ্ধালি করিতেছে তাহার বিষয় কিঞ্চিৎ বলিতে 🤜 প্রব্রত্ত হইলাম, পাচকবর্গ এই স্থলে বিবেচনা করিবেন যে জীবনের পক্ষে জীবন ব্যতীত উপায় নাই, ইহাতে অবগাহন কিন্তা ইহা পান করাতে যেরপ পশুদিগের দেহ স্থিয় করে এবং আহারীয় জব্যের সহিত মিশ্রিত হইয়া ভক্ষিত হওয়াতে রক্ত উৎপত্তি করে, উদ্ভিজ্জদিগের প্রতিও তদ্রপ উপকার করিতেছে। বারিবর্ষণ হইলে ইহারা উত্তাপ হইতে বিরত হইয়া শীতল হয় এবং পৃথিবী হইতে মূল দ্বারা যে সকল আহারীয় দ্রবা আরুষ্ট করে তাহা বারিসংযোগে প্রকাণ্ড মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া পরিপাকানন্তর রস উৎপত্তি করিতেছে এই কারণ বশতঃ উদ্ভিজ্ঞদিগের স্বভাব অনুসারে উপযুক্ত পরিমাণে বারি প্রদান করা ক্রষিকার্য্যের প্রধান কার্য্য হই-য়াছে। যদি কোন ভূমিতে কিঞ্জিম্বাত্র রন না থাকে কিম্বা জলেতে প্লাবিত হইয়া থাকে তবে তাহাতে কোন উদ্ভিজ

তিৎপত্তি হইতে পারিবেক না, কেবল জলজ এবং গেড় इरें ए मकन উদ্ভिक्त উৎপত্তি হয় তাহার। এই इरे অবস্থায় অনায়ানে জন্মাইতে পারে কারণ জলজনিগের স্বভাব এরপ যে জলে থাকিলেও পচিয়া যায় না এবং (गँजू मकल পত এবং गूल विशेष शहेश एक मृखिकां स जीविड থাকিতে পারে এতদ্বিন্ন অন্যান্য উদ্ভিক্ত সমূহের জন্য জলের পরিমাণ বিষয় বিবেচনা কর। অতি কর্ত্রা। স্বভাবতঃ শীত অবধি এীম্ম পর্যান্ত ভূমি সকল নীরস হইতে থাকে এবং বায়-রও তজপ রসহীন অবস্থা হয়, যদিও নিশার শিশির এবং श्रीयक लित कथन প্রচণ্ড ঝড় এবং র্ষ্টি হইয়া উদ্ভিজ দিগের জীবন রক্ষা করে এবং ফল ফুল উৎপাদন করিতে রতকরে তথাপি অবশেষে ইহারা নীরদ হইয়া এমত ক্লান্ত হয় যে किছू উপশম না করিলে সকলই বিনয় হইতে পারে এই জন্য বর্ষা আদিয়া নিয়ত, বারি বর্ষণ করাতে উদ্ভিজ্জেরা উভয় উত্তাপ এবং প্রচুর রস ভোগ করিয়া শাখা পল্লব রূদ্ধি করিতে थात्क। উ खिञ्जनिर्गत इकिगील जवसात्र मृ खिका श्रेष्ठत तरम পরিপূর্ণ। রাখা অতি কর্ত্তব্য কারণ তৎকালে নবীন পত্র সকল উৎপন্ন হর এবং ইহাদিগের উপরিভাগ হইতে রস ঘর্ষের স্থ্য হইয়া অনিক বহিৰ্গত হয় তাহাতে মুভাল শোষকতা শক্তি রিদ্ধি হইতে থাকে। পত্র সকল যত কোমল অবস্থায় थाकित्वर उउरे रेट्रानितात रहेत्उ तम विर्वाउ रहेत्उ थाकि-বেক कांत्रभ हेशांत्र। सूर्या উढांश स्थार्भ कतित्र। मांज अखिमांत्र তীক্ষ উত্তেজনায় আক্রান্ত হয় কিন্তু কিঞ্চিৎ পক হইলে রস ৰহিণ্ড হইবার হিজ সকল মুদিত হওয়াতে তাদৃশ রস আর **医**

বহির্গত হয় না, এই সকল কারণ বিবেচনা করিয়া আমর। এই বিধি প্রকাশ করিতেছি যে চারাদিগের রিদ্ধিশীল অবস্থায় ভূমি সতত সরস রাখিবেক।

আমাদিগের এতদেশীয় সামান্য ক্লফদিগের মধ্যে এক श्रीनिজनक रावश्रा श्राठानिज जोट्ड, कान ठांत्रां जन निज इस्ल তाহाর। পুরিত কলদীর প্রবল ধারায় জল ঢালিয়া থাকে কিন্তু তাহাতে যে স্থলে ঐ জল ধারা পড়ে তথা-কার মৃত্তিকা ধৌত হইয়া বহির্গত হওয়াতে এক গর্ভ হইয়া মূল সকল যহিষ্ঠ হয়। যদি ক্রমশঃ জল দেওরা হয় তবে সমুদয় জ্বল আসিয়া ঐ গর্ত্তে স্থিত হওয়াতে সেই স্থলের মূল সকলকে পঢ়াইয়া বিনষ্ট করিতে পারে কিশ্বা মূল রেছি " বহিষ্কৃত হওয়াতে শুষ্ক হইয়া যাইতে পারে, এই জন্য আৰ-মরা ব্যবস্থা দিতেছি যে বোমের দ্বারা জল বিস্তীর্ণ করিয়া নিবে কারণ ইহা হইতে জল অতি স্কাধারায় পতিত হও-য়াতে সর্বতি সমভাবে জল পাইতে পারে। যদি বীজ বপন করিয়া গামলায় জল দিতে হয় তবে অতি সৃক্ষধার বোমা দারা জল দিবে কিম্বা ইহার অভাবে হুর্কা ঘাসের এক আটি वाक्तिया औ शामनाय जन छिष्ठोरेया मित्र। मात्र भिर्क চারার মূলে জল দিতে হইলে সিঞ্চন করিয়া দিবে কিন্তু ক্ষক সাবধান হইবেন যে জল দারা চারার মূলে কোন মতে গর্ত না হইতে পারে।

ফলোৎপাদক রক্ষের মূলে ইহার মুকুল হইবার পূর্কা-অবধি যদি সার দিয়া সরস রাখা যায় এবং পরে ফল হইলে ইহাদিগকে বান্ধিয়া সূর্য্য উত্তাপ হইতে যদি আচ্ছাদিত রাখা যায় তবে সেই ফল সকল স্বাভাবিক অপেক্ষা অবশ্যবড় হ্রবৈক, কারণ রক্ষ হইতে যে রস আরুষ্ট হয় তাহা ইহা-দিগের মধ্যে সঞ্চিত হইয়া পরিপাকাভাব প্রযুক্ত সতত স্ফীত করিয়া রাখিবেক, ইহাতে দৃশ্য বড় দেখাইতে পারে किस स्वाप्तत अपनक रेवलक्षना इश्वक, स्र्या উভाপে यनि ইহাদিগের রস পরিপাক না পায় তবে সেই ফলের জলবৎ স্থাদ হইবেক এই কারণ ফল পরিপক হইবার সময়ে জলের পরিমাণ মূন করা অতি আবশ্যক হইতেছে, ইহাতে কোন वाक्ति जन्मान कतिए भीतिन य वर्षाकोल य मकल कल পরিপক হয় তাহাদিগের স্বাদেরত এই রূপ হীনতা হইতে পারে কিন্তু তাহা কখন হইতে পারে না কারণ তৎকালীন বিন্দুপতি হইলে ক্ষণেক কাল মাত্র উত্তাপের হীনতা হইতে পারে পরে ভূষা দেদীপামান হইয়া প্রচণ্ড তেজো বর্ষণ পূর্বাক পত্র এবং ফল হইতে বহু ঘর্ম নির্গত করেন তা-হাতে ইহাদিগের রস পরিপাক পাইয়া ইহাদিগকে মিষ্ট कर्त्र किन्छ कन वाक्रिया वाथिएन ज्याना स्थापन होने इहे-বেক। উক্ত কারণ বশতঃ নদীর তটে বালুকাময় ভূমিতে তর-मूज उ कृषि চাষ করিলে भृতিকায় অধিক রস থাকাতে ফলের স্থাদ স্বভাবিক থাকে কিছুই সূান হয় মা। যদি কোন চারার মূলে ইহার পরিমিত অপেক্ষা অধিক জল দিয়া ক্রমা-গত সরস রাখা যায় তবে তাহাতে নবীন শাখা পল্লব উৎ-পত্তি হইতে পারে কিন্তু ফল ফুল হইতে বিরত থাকিবেক, এবং যদি এই ক্ষেত্রে কোন উপায় ক্রমে ছায়া করিয়া দেওয়া যায় কিমা ক্রমশঃ অধিক জল দেওয়া যায় তবে ক্ষুদ্র চারা

হইলে মূল পাঁচিয়া বিনষ্ট হইতে পাঁরে এবং বড় চারা প্রতি এই ব্যবস্থায় ইহার হরিৎ বর্ণ লোপ পাইয়া খেতবর্ণ হয়, পরে এইরপ অবস্থা পরিবর্ত্তন না হইলে নফ হইবার সন্তাবনা এই কারণ কোন চারার মূলে জল স্থিত হইতে দেওয়া কর্ত্তব্য নহে। যদি কোন ভূমি এইরপ হয় তবে ইহার জল কোন উপায় ক্রমে বহির্গত হয় এমত করিবেক, কোন নিম্ন চিকণ মৃত্তিকা বিশিষ্ট ভূমি জলে পরিপূর্ণ হইয়া কর্দমের ন্যায় হইয়া থাকে তাহাতে উক্ত প্রকার উপায় না করিলে কখন কোন চারা রোপণ করা হইতে পারে না এই ভূমিতে খোয়া এবং বালি মিশ্রিত করিয়া দিলে ইহার জল শীস্ত্র অধোগত হইলে উত্তম উৎপাদক ভূমি হয় তৎপ্রযুক্ত মিশ্রিত ক্রিয়া ক্রিকার্য্য উত্তমকপ নির্ব্বাহ্ হইতে পারে।

গামলায় চারা রোপণ করিবার জন্য ইহার তলায় এক ছিন্ত রাখিয়া তাহার উপরে হুই তিন খানা খোলাকুচি বসাইয়া দিবে, পরে মৃত্তিকায় পরিপূর্ণ করিয়া তাহার উপরে চারা রোপণ করিবেক এই অবস্থায় জল দিলে সমুদয় জল কখন ঐ চারার মূলে স্থিত থাকিবেক না, কারণ ঐ গামলায় যে ছিন্ত আছে তাহা খোলাকুচি দ্বারা সম্পূর্ণরূপে রুদ্ধ করা হয় নাই, এই জন্য ঐ ছিন্তা দিয়া জল অনায়াসে অধোগত হইবেক, কখন২ গামলার মৃত্তিকায় পোকা আসিয়া বাস করাতে ইহারা ঐ মৃত্তিকাকে কোন ক্রমে কর্দ্দের ন্যায় করিয়া জল অধোগত হইবার পথ রুদ্ধ করে। এই জন্য ক্রফকের ইহা গোচর হইবামাত্র ঐ পাত্রের জল বহির্গত হইবার পথ খুলিয়া দিবে, নতুবা তলায় জল বসিয়া ঐ চারাকে বিনষ্ট করিবেক। উদ্ভিক্ত - দিগের মূলের মৃত্তিকা পরিমিতরূপ সরস রাখিবার জন্য প্রতি দিবস কিঞ্চিৎ২ জল দিবার ব্যবস্থা পূর্ব্বাপর প্রচলিত আছে এবং তাহাতে চারা সকল রূদ্ধি হইতেও পারে, বিশেষতঃ চারা त्रिक्ठ शृहम्(धा शोमलाश (य मकल চोत्र) (स्थिन कत्र) थे। (क তাহাদিগের পক্ষে অতি উত্তম ব্যবস্থা হইতে পারে কিন্তু অনা রত স্থানে রোপিত চারার পক্ষে বর্ধাকালে তাদৃশ উপাদেয় इरेट পाরে না কারণ, हाखित জল ইলাদিগের উপরে পতিত হইলে তাহা অতিশীঘ্ৰ অধোগত হইয়া যায় এবং বায়ু त्रां भित्रपूर्व थोरक उद्श्रयुक्त के जन नीय एक इहेट ना পারাতে মৃত্তিকার সহিত মিশ্রিত হইয়া এক উপাদেয় রস প্রস্তুত করে, তাহা অতি মৃত্ন গমনে রক্ষনিগের অতর্গত হইয়া वह छेर्यकात करत এই जन। এই সময়ে জল निवाब প্রয়োজন আর থাকে না, কিন্তু গ্রীষ্মকালে বারিহীন অবস্থায় প্রতি দিবস জল দেওর। অতি কর্ত্তবা কিন্তু ইহাতে বর্ষার জলের ন্যায় উপকার দর্শে না, কারণ অপ্প জল প্রযুক্ত বায়ু রসেতে পরিপূর্ণ হইতে পারে না তজ্জন্য পত্ররন্ধু দিয়া বহু ঘর্ম নিৰ্গত হইতে থাকে এবং তাহাতে মূল উত্তেজিত হয় কিন্ত जानुन तम ना পांध्यां एक स्थाता निक्यां विक स्हेशा थारक, कार्रा के जन्म जल्म जिल्ला जिल्ला कार्य वार् এবং অবশিষ্টাংশ আন্ধা মৃতিকায় শীঘ্র অধোগত হওয়াতে मूल छोड़ा जांकर्यन कतिए পाति ना, भारत वातुमकालन प्रांता ले मृत्नत मृजिका अगठ एक इरेड পाति य उपराउ ले চারার প্রতি হানি হইবার সম্ভাবনা অতএব রুষক অতি भावधान इहेश रेवकाल वाशु मी उन इहेल हो तांत मूल

এমত পরিমাণে জল দিলে যে তাহা শীত্র শুদ্ধ হইয়া যাইতে না পারে; যদি এ চারার মূলে চিহ্নণ মৃত্তিকা থাকে তবে জল অধোগত না হইয়া ইহার সহিত মিশ্রিত হইয়া উপরে থা-কিতে পারে, তজন্য আমরা পূর্বে যেমত প্রকাশ করিয়াছি मिरेक्षे जोन्गो किर्या नित्व किन्छ मोष्य मिरिक वनकारका জল দিতে হইলে ইহাদিগের ক্ষেত্র মধ্যে নালা কাটিয়া জল সে-চন করিয়া দিবে, কারণ ইহাতে অধিক জল প্লাবিত হইয়া চা-রার হানিকারক পোকাদিগকে নফ্ট করিতে পারে এবং ভূমি সতত সরস থাকাতে পত্র সকল কোমল এবং রহদাকার হই-(तक। मृ जिका ७% (मिश्ता मश्राष्ट्र जलत এই त्र भ जल मियां त ব্যবস্থা করিবেক; বীজ বপন করিতে হইলে প্রথমতঃ ক্ষেত্র 🕳 मर्धा में जिल्ला विकास के अकारत कि को देश विकास ভাগে বীজ বপন করিলে ইহারা অঙ্কুরিত হইয়া চারা উৎপত্তি क्रिंदिक, পরে মূলের মৃত্তিকা পুরিত ক্রিতে হইলে হুই পাথের দাঁড়ার মৃত্তিকা ভান্ধিয়া দিবে এবং জল আবশাক হইলে উক্ত প্রকারে দিবে কিন্তু শাক ক্ষেত্রে এইরূপ না করিয়া ইহার চতুস্পাশ্বে দাঁড়া বান্ধিয়া চেকার ন্যায় করিবে পরে · ইহার ভিতরের ভুমি সমান করিয়া বীজ বপন করিবে এবং উক্ত প্রকারে জল দিবে।

মূলদারা যে রস আরুষ্ট হয় তাহা পত্রে যাইয়া পরিপাক পাইলে ছুই অংশে বিভক্ত হইয়া থাকে প্রথমতঃ সার্ভাগ · এकाश्म উদ্ভিজ্জদিগের মধ্যে থাকিয়া ইহাদিগকে রিদ্ধি করে। দ্বিতীরতঃ জলীয় যে অংশ তাহা ঘর্ম স্বরূপ হইয়া পত্র রন্ধ দিয়া বহির্গত হয়। স্থা উত্তাপ এই ঘর্ম বহির্গত হইবার প্রধান কারণ হইয়াছে, স্মৃতরাং কিরণের তীক্ষতানুসারে এই ক্রিয়া নির্বাহ হইয়া থাকে, কিন্তু বায়ুর অবস্থানুসারে इंश्रांत रिवलक्षना इंश्रांड भारत, यिन वांत्रू एक এवर उंडािभिड शांक তবে ইহা রিদ্ধি হইবেক এবং আর্দ্র কিম্বা শীতল থাকিলে ব্রাস হইবেক অতএব বায়ুর এই হুই অবস্থার পরিমাণানুসারে ইহা অধিক কিম্বা অপ্প হইবেক, ঘর্ম অধিক বহির্গত হইলে পত্রের রস শুষ্ক হইয়া বিনষ্ট হইতে পারে কিম্বা পরিমিত রূপ বহির্গত হইতে যদি প্রতিবন্ধক হয় তবে উদ্রিজনিগের রস উত্তমরূপ পরিপাক না পাইয়া রদ্ধি হইতে পারে না, এই সকল কারণ বিবেচনা করিয়া রুষক যদ্বারা বায় উদ্ভিক্ত দিণের ঘর্ম পরিমিত রূপ বহির্গত করিয়া ইহাদিগকে স্বস্থ অবস্থায় রাখে এমত কোন উপায় অবশ্য করিবেক, কিন্তু বায়ুর এইরূপ অবস্থা সকল নিরূপণ করিবার আমাদিগের কোন বিশেষ উপায় নাই কেবল (ডिनिএল সাহেবের রসপরিমাপক যত্ত্রে নিরূপণ হইতে পারে কিন্তু তাহা এই দেশে প্রচলিত না থাকা তেই স্থলে লিখিবার প্রয়োজনাভাব, কিন্তু গাতে বায়ু সংস্পর্শ হইলে ইহার আর্দ্র কিয়া শুষ্ক অবস্থা তাহা কিঞ্চিৎ নিরূপণ করা যাইতে পারে। যথা শীতকালে শুষ্ক বারু আদিয়া উপস্থিত इहेल ७६ मकल कार्षिया यात्र এवर शांज एक इस किछ आर्ज বাস্ত্র বহিলে গাত শাতল হয় এবং সরস করিতে থাকে।

যে রাজ্যে যেরপ রক্তিপাত হইয়া থাকে তথাকার বায়তে তৎপরিমাণে রস থাকে, বলরাজ্যে বর্বাকালের প্রতি মাসে যত অধিক রক্তিপাত হইয়া থাকে তাহা পরিমাণ করিলে এই নিরপণ হয় যে সমুদয় জল রাজ্যমধ্যে যদি ব্যাপৃত হইয়া থাকে তবে প্রায়় এক হস্ত ও ছয় অস্থলী উর্দ্ধে স্থিত থাকিবেক তৎপ্রযুক্ত আমাদিগের বিবেচনা হইতেছে যে অন্যান্য দেশ অপেক্ষা আমাদিগের এই দেশের বর্বাকালের বায়ুতে অধিক রস থাকে কিন্তু অন্যান্য কালে ইহা পরিবর্ত্ত হইয়া যায়, তিন কালে তিন প্রকার পরিমাণে রম থাকে অতএব কোন বৈদেশিক চারা এই দেশে আনিয়া রোপণ করিতে হইলে কোন কালের বায়ু ইহার উপায়ুক্ত হইবেক ইহা অ্যা নিরপণ করিয়া সেই কালে রোপণ করিবেক এবং সেই রপ বায়ু সমভাবে থাকিবেক এমত উপায় অবশ্য করিবেক।

আমরা জ্ঞাত আছি যে বায়ু দ্বির থাকিলে রস সমভাবে থাকে কিন্তু সঞ্চালিত হইলে ইহার বেগ বিশেষানুসারে শুষ্ক হইয়া যায় এবং তদনুযায়ী উদ্ভিক্ষদিগের হর্ম নিঃস্বত হইয়া থাকে, যদি কোন উপায় ক্রেমে বায়ুর গমনাগমন ৰুদ্ধ করা যায় তবে উদ্ভিক্ষদিগের ঘর্মজ্ঞাব তাহাতেই নিবারিত হইবেক। ইউরোপীয় উদ্ভিক্ষবেতারা প্রকাশ করিয়াছেন যে যদি বায়ুর দ্বির অবস্থায় কোন স্থান হইতে এক শত গাঁচিশ গুণ হই-বেক এবং ঝাটকা হইলে এক শত পঞ্চাশৎ গুণ বহির্গত হই-বেক এবং ঝাটকা হইলে এক শত পঞ্চাশৎ গুণ বহির্গত হই-বেক এই জন্য উদ্যানের চতুর্দিকে প্রাচীর দ্বারা বেষ্টন করিয়া

ইহার ভিতরে বায় শ্বির রাখিলে ইহার রস সমভাবে থা-কিতে পারে অতএব বায়ুর শুক্ষতা কিয়া ইহার রস সমভাবে রাখা এই ছুই যখন যাহা আবশ্যক হইবেক তখন তাহা উপ-রোক্ত লিখিতানুসারে করিতে হইবেক।

আমাদিগের এই দেশে হুই প্রকার বায়ু আছে পূর্ব্ব দক্ষিণ এবং উত্তর পশ্চিম, পূর্ব্ব দক্ষিণ বায়ু সমুদ্র হইতে উদ্ভব হইয়া অতি আর্দ্র অবস্থায় এই অঞ্চলে আদিয়া উপস্থিত হয়, বিশেষতঃ ইহার আগমনে পর্ব্বতাদির কোন প্রতিবন্ধকতা না থাকাতে উত্তমরূপ সঞ্চালন হইয়া ইহার আর্দ্র স্বভাব প্রযুক্ত এই দেশীর উদ্ভিজ্জদিগের নিয়মিত ঘর্ম প্রদান করে, এই কারণ চৈত্র বৈশাস্থ মাসে পৃথিবা নীর্ম অবস্থায় উদ্ভিজ্জ সকল কেবল বায়ুর রুমে শীতল হইয়া জীবন রক্ষা করে।

উত্তর পশ্চিম বায়ু ভূমিও পর্কত হইতে উদ্ভব হইয়া অতি
মৃত্ন গমনে এই দেশে সঞ্চালিত হইতে থাকে, তৎপ্রযুক্ত
ইহাতে শীতের আবির্তাব হয় কিন্তু ইহা এমত শুদ্ধ যে যদি
ইহার সতত বেগ থাকিত তবে সমুদ্য় উদ্ভিজ্ঞদিগের
রম বাহির করিয়া শুদ্ধ করিতে পারিত কিন্তু ইহা না থাকাতে
উদ্ভিজ্ঞদিগের জীবনোপযোগীক্রিয়া সকল অতি মৃত্নভাবে
প্রচারিত হয়, ইহা বাস্তবিক বিবেচনায় ইহাদিগের বিশ্রাম
অবস্থা কহিতে হইবেক, এই বায়ুতে যদি কখন ঝড় উপস্থিত
হয় তবে উদ্ভিজ্ঞদিগকৈ ছিল্ল ভিল্ল করিয়া পৃথিবীতে শস্য
হানি করায়, শীতের অবসানে যখন উদ্ভিজ্ঞ সকল বিকশিত
ইইতে থাকে তৎকালীন দক্ষিণ বায়ুর পরিবর্তে উত্তর বায়
আসিয়া উপস্থিত হয় তবে ইহার বেগে গমন অবশ্য হইবেক

স্তরাং তাছাতে তাধিক মর্ম বহির্গত হওয়াতে যে শিরা সকল সক্ষৃতিত হইয়া রস বহন করিতে না পারায় বিকশিত পুষ্পা নকল রসাভাবে শুষ্ক হইয়া যাইতে পারে কিমা যে রক্ষ বিকশিত হইবার উপক্রম হইতেছে তাহারাও এরপ হইয়া পুষ্পা উৎপাদন করিতে বিরত হয়, বিশেষতঃ আয়ের মুকুল সকল এইরূপ হইয়া থাকে।

সর্কদেশে বায়ু এক প্রকার, কিছুই ভিন্নতা নাই, কেবল इंश्रंब ऐक् भे विष्या विषय ब्राम्ब श्रीत्रमान विषय जिन्न जार्ष, তজ্ঞনা উদ্ভিজেরা নানা প্রকার ভিন্ন দেশে জিমিয়া থাকে, অতএব কোন বৈদিশিক চারা এই দেশে আনিয়া রোপণ করিতে হইলে ইহার জগ স্থানের বায়ুতে যেরূপ উত্তাপণ এবং রদ আছে ভদ্রপ এখানে না করিলে কখন উৎপত্তি হইতে পারিবেক না, এই কারণ কোনং চারার জন্য বায়ু-রস ত্যুন করা কিম্বা রদ্ধি করা অত্যন্ত প্রয়োজনীয়, ইহার छेभाग्न देश्नछीम উদ্ভিজ্জবেতারা যাহা প্রকাশ কমিয়া**ছেন** তাহা এদেশে প্রচলিত হইতে পারে না কেবল রস রদ্ধি করা কোন উপায় ক্রমে হইতে পারে। যথা এক কাঁচ নির্মিত গৃহ প্রস্তুত করিয়া তম্মধ্যে মতত জল মেচন দারা কিষা অন্য কোন উপায় দ্বারা যাহাতে ইহার ভিতর জল থাকিতে পারে এমত করিলে এ গৃহ মধ্যে বায়ুর রুস অধিক রুদ্ধি হইবেক, যেমন স্ত পাকার উশীর মূলোপরি জল সেচন করিলে जनार्ज छन महकारत शक्षात्र भीजन इत्र। यनि वायुत तम रान करा जायभाक इश जान की गृह माथा इह नन वमारेशा এक नलिंद्र ভिতর দিয়া উত্তপ্ত জল চালনা করিবেক,

এবং অন্য নল দিয়া তাহা পুনশ্চ যে স্থানে জল উত্তপ্ত হইতে ছিল তথায় আসিয়া উত্তীর্ণ হইবেক, এরপ ক্রমশঃ कतित्व भी वायुत तम नल घात्रा एक रूरेया यारेत्व किछ গ্রীম প্রধান দেশে কখন হইতে পারে না এই জন্য আ'-মরা ব্যবস্থা প্রকাশ করিতেছি যে চারা রক্ষিত গৃহের বিষয় আমারা পূর্বেলিখিয়াছি তাহার ভিতরে কিমা অন্য কোন ছায়াযুক্ত স্থানে এ চারা গামলায় বসাইয়া রাখিতে পারে। কখন২ প্রাতে রৌদ্রে বাহির করিয়া দিবে এরপ ক্রমশঃ করিলে পর সহু হইয়া গেলে চারাকে উপযুক্ত স্থান বিবেচনা করিয়া তথায় পৃতিয়া দিবে। বায়ুর উত্তা-পের বিষয় বিবেচনা করিতে হইলে পৃধিবীস্থ সমস্ত বস্তুর উত্তাপের পরিমাণ অত্যে নিরূপণ করা অতি আবশ্যক কারণ এই সকল বস্তুর উত্তাপে বায়ু উত্তাপিত হইয়া থাকে গ্রীম্কালের চুই প্রহর সময়ে ইহার প্রত্যক্ষ প্রমাণ আছে কিন্তু উত্তাপ ধারণ করা এবং কাহারো উত্তাপ পরিত্যাগ করা শক্তি এই সকল বস্তুর মধ্যে কতিপয় বস্তুর আছে, যথা भाजमकन ऐखाभिज इहेल मिहे जोश हेहा मिर्गित जिख्त বহুকালাব্ধি থাকে, কিন্তু তান্য সকল বস্তুর কেবল উত্তাপ পরিত্যাগ করা শক্তি আছে এই জন্য শাস আচ্ছাদিত স্থানে কিছুই উত্তাপ থাকে না কিন্তু কোন স্থানে কম্বর বিস্তীর্ণ করিয়া রাখিলে, তথায় বহুকাল উত্তাপ থাকে, যদি কোন চারায় অধিকতর উত্তাপ দিবার আবশাকতা হয়, তথায় কম্বর বিস্তীর্ণ করিয়া দেওয়া কর্তব্য। তদ্বারা বায়ু অধিক উত্তাপিত হইয়া ঐ চারাতে সংলগ্ন হয়। তন্নিবন্ধন হেমন্তের প্রাত্তাব হইতে ও চারার অনেক রক্ষা হইতে পারে। অপকারের মধ্যে এইমাত্র হয়, তত্ত্তা মৃত্তিকা मङङ एक थाकि। ध वावश्रा ध मिर्ग अव्यक्ति श्रेटि भारत ना, कांत्रन এमেশে जामृग भी जनाई, ठ्युर्मित योग श्रीकिल প্রচণ্ড তপনতেজ স্পর্শ না হওয়ায় তত্রত্য স্থান অনেক শীতল হইতে পারে। অতএব কঙ্কর নির্মিত পথ এবং তৃণাচ্ছন্ন ভূমি এই ত্বই প্রকার উদ্যানে থাকিলে উদ্যানের শোভা রদ্ধি এবং রক্ষের পক্ষে উপকার হইতে পারে। স্থার উত্তাপে পৃথিবীর অভ্যন্তর উত্তাপিত হইলে যদি ঐ উত্তাপ বহিৰ্গত না হইয়া তথায় সমভাবে থাকে, তবে সমুদায় প্রজ্বলিত হইয়া নফ হইবার বিলক্ষণ সভাবনা। এই জন্য স্বাভাবিক এমত এক কৌশল আছে, যে ত-म्बात्रा मिवावमार्ग मगूमग्र छेखां विदर्श इहेश याग्र। किन्छ (य ज्यात्म (मरघद छेनश इश्र, उथांश इंदा विद्याहरू उ হইতে পারে না। কারণ আচ্ছাদিত দিবাকরে ঐ উত্তাপ याहेशा लग्न পाइटिंड भीदि मां, धेर जना मिरे ममर्ग जान जीप (वाध इग्र। श्रेत इकिशां इरेल স্থোর আবরণ নফ হয় স্তরাং ভূমিস্থ উত্তাপ ক্রমশঃ উण्थिত इंदेल मुखिका भीठन इंदें थारक। देश वित्न-চনা করিয়া দিবাবসানে যদি কোন চারার উপরে আচ্ছা-দন করিয়া দেওয়া যায়, তবে ঐ প্রতিবন্ধকতাপ্রযুক্ত তথাকার উত্তাপ উঠিতে না পারিয়া দেই স্থানেই ममजादि थार्क, उद्यादाई किवन ठातात উर्ज्ञाना तिक इरेट थाक। অতএব यनि क्रयक এমত অনুমান করে,

যে কোন চারায় অধিকতর উত্তাপ দিবার আবশ্যকতা আছে, তবে উহাকে বারাণ্ডায় কিম্বা আচ্ছাদিত কোন স্থানে রাখিলে তাহার কোন হানি হইতে পারে না। দিবাভাগে উষ্ণতাবস্থায় যে সকল রস পৃথিবী হইতে পরমাণরপে উঠিয়া বায়ুতে সংলগ্ন হইয়া থাকে, রজ-नीयार्ग উতाপ विदर्गত इन्यां शृथियी भीजन इ-हे(ल, मिहे जकम द्राप्तद्र श्रीमांगू এक जिंछ हहेशो निनिद রূপে পুনর্বার পৃথিবীতে পতিত হয়। সূতাং পৃথি-বীর শীতলতার পরিমাণারুসারে শিশির অধিক কিয়া অম্প পড়িয়া থাকে, এই জন্য শীত কালে অধিক শি-শির পতিত হয় কিন্তু মেঘের উদয় হইলে কখনই শিশির পতিত হইবে না। অতএব বায়ুর উত্তাপ এবং আর্দ্রতা অ-বস্থা অনুমান করিয়া কৃষিকার্য্য নির্ব্ধাহ করিতে হইলে সম্পূর্ণ अकीय रेनश्राक्रश कोमल जावमाक करता किन्छ এउ९ প্রদেশে বায়ুর উত্তাপ পরিজানের উপায় নাই। যদি জানিবার আবশ্যকতা হয়, তবে ইংলওদেশীয় বায়ুর উত্তাপ পরিমাপক যন্ত্র দ্বারা নিরীক্ষণ করিলেই তাহার প্রতীতি হইবে।

যেথানে উদ্যান স্থাপন করিতে হইকে যাদ তথাকার মৃত্তিকা উন্নতানত হয়, তাহা হইলে তথায় চারা প্রস্তুত করা স্কঠিন। কারণ যদি ভূমি নিম্ন হয়, তবে বর্ধাকালে তথায় নিরন্তর জল থাকায় চারার মূলদেশ পচিয়া যাইতে পারে। যদি উন্নত হয়, তবে অনবরত প্রবল বায়ু সঞ্চার দারা চারা সকল ছিন্ন ভিন্ন এবং তাহাদের রসও শুদ্ধ হইতে পারে, কিম্বা অধিক উত্তাপিত হইলেও এরপ হইতে পারে। অতএব উদ্যান স্থাপন করিবার পূর্বে মৃত্তিকা চালনাদি দ্বারা সমান করিতে হইবে। চারার উ-দ্যানে অন্ধণাদয় অবধি রোদ্র সংলগ্ন হইতে দিবে, পরে যদি কোন আচ্ছাদন দ্বারা কেবল অপরাহের রোদ্রমাত্র নিবা-রণ করা যায়, তাহা হইলে চারা সকল তেজ্বন্ত থাকিবেক এবং উহাদিগের জন্য বায়ু অধিক সরস ও মন্দগতি হওয়া আবশ্যক। অতএব যাহাতে চারায় অধিক সঞ্চালন না হয়, এমত উপায় করিতে হইবে। বিশেষতঃ অন্যান্য চারা-পেক্ষা সাম্বংসরিক চারার পক্ষে, অর্থাৎ যাহা জ্মা-ইয়া একবংসর মধ্যেই মরিয়া যায়, তাহার পক্ষে বায়ু অধিক সরস ও মন্দগতি হওয়া আবশ্যক। চারাদিগের পক্ষেই এই সকল বিধি জানিবে রহয়ুক্ষের পক্ষে কোন বিধি নাই।

মৃত্তিকার বিষয়।

ধাতু ও উপধাতু রসায়নিক যোগে আবদ্ধ হইয়া যে পদার্থ উৎপত্ন হইরাছে তাহাকে মৃত্তিকা কহে ইহাতে ইহার উপা-দান ভুক্ত দ্রব্য সকল সামান্যত লক্ষিত হয় না, কিন্তু যে স্থলে ইহাদিগের ক্ষনি আছে তথা ইহারা স্পষ্টরূপে প্রতিয়-মান হইয়া থাকে কিন্তু চাক্ষ্ম দর্শনে কিবল হুই প্রকার মৃত্তিকা প্রতিভাত হয় যথা চিক্কণ অর্থাৎ এ টেল এবং বা-লুকা এই হুই প্রকার মৃত্তিকাতেই অন্যান্য নানা দ্রব্য মিশ্রিত

रहेश वह विश्व मृक्तिका छेर शामिक स्टेए एह, ठोटा धरे ছाम লিখিবার প্রয়োজনাভাব দেখিয়া এইমাত্র কহিতেছি, যে পর্বতের উপরিভাগের মৃত্তিকা সমুদারই প্রায় চিক্রণ এবং य ऋत्न य क्रथ श्रेखक जार्ह, उश्चेकांत्र मृखिका मिरेक्रथ छ। এবং রঙ্গ ধারণ করিয়াছে। প্রতি বংসর বর্ধাকালে এ সকল প্রস্তরের গুঁড়া এবং মৃত্তিকা ধৌত হইয়া জল-त्यांट निकरिवली जारम जामिया विखीर्ग इनेया পएए, তৎপ্রযুক্ত এ সকল স্থানে মৃতিকা নানা প্রকার হইয়া থাকে। পরে এ পর্বভীয় গুড়া মৃত্তিকার সহিত মিখ্রিত হওয়াতে উহা এমত উৎপাদিকাশক্তি ধারণ করে যে, তাহাতে আর সার দিবার প্রয়োজন করেনা। এইরপে চড়ার কিহা দ্বীপের মৃত্তিকায় স্তরে স্তরে পলি পড়িয়া ক্রমে ক্রাশীয়ত হওয়াতে উহা শ্বভাবতই উর্বর হইয়া থাকে। পৃথিবীর উপরিভাগে এক হন্ত কিন্তা স্থান বিশেষে ততোধিক পর্যান্ত যে মৃত্তিকা আছে, তাহা নানা-বিধ বন্তুর সহিত মিশ্রিত হওয়াতে ক্ষিকার্য্যের যোগ্য হইয়াছে। আহারীয় দ্রব্য যদি কেবল এক বস্তুতেই উৎ-পন্ন হয়, তবে তাহা ক্রমশঃ ভক্ষণ দ্বারা তালশা জীবের হানি হইতে পারে। যেরপ মনুষ্যেরা । এনাদি পরি-ত্যাগ করিয়া প্রতিদিন কেবল অন্ন আহার করিলে, কিছু निवासत माथाई क्रमणंश्लीर्ग इहेश्रा मित्रिशा योश। उज्जर्भ, উদ্ভিক্তদিগকে এক প্রকার মৃত্তিকার পুতিলে কখনও জীবন ধারণ করিতে পারে না, তৎপ্রযুক্ত মিশ্রিত মৃত্তিকার রস উহাদিগের জন্য অত্যন্ত আবশাক। যে হেতু এ রস

উদ্ভিজ্জের ভক্ষণীয় স্বরূপ এবং উহা কেবল উপরিভাগের মৃত্তিকাতে আছে, এই হেতু যে দিকে এ রস পায়, সেই দিকের উপরিভাগ দিরা বিস্তীর্ণ হইয়া উদ্ভিজ্জ দিগের মূল সকল বহু দূর গমন করে, কিন্তু অধিক নিম্নভাগে যায় না, যে হেতু তথায় এরপ রস অধিক থাকে না। তাহার প্রমাণ এই, রহদ্দের নিকটে পুক্ষরিণী খনন করিলেও তাহার অভ্যন্তরে রক্ষের মূল বা শিকড় দেখিতে পাওয়া যায় না।

পৃথিবীর ভিতরে যেরূপ মৃত্তিকা স্তরে স্তরে সজ্জিত আছে, তাহার বিষয় আমরা যথা জ্ঞানানুসারে অত্রে কিঞ্চিৎ বর্ণনা করিয়া, পরে গুণের বিষয় বর্ণনা করিব। প্রথমতঃ যে মৃত্তিকাতে অধিক জল ধারণ করে ও শীঘ উত্তাপিত হয় না এবং অঙ্গুলী স্পর্শ করিলে সংলগ্ন হইয়া থাকে, তাহাকে চিক্রণ অর্থাৎ এটেল মৃত্তিকা কহা যায়। দ্বিতীয়তঃ যে মৃতিকা শীষ্ত্র উত্তাপিত হয় এবং কোন ক্রমে জলধারণ করিয়া রাখিতে পারে না, তা-ছাকে বালুকা বলা যায়। কিন্তু বোধ মৃত্তিকা এই হুই व्यनी मर्पा गंना इक्ट भारत ना। कांत्रन किवन डे खिड़ পচিয়া ক্ষাবর্ণ মৃত্তিকারপে পরিণত হইয়া বোধ মৃত্তিকা কথিত হয়। উক্ত উপরিভাগের নিম্নে এক থাক বালি मुखिका (मिथिएड পांउग्ना यांग्न, डांशा क्रिकार्यान यांग्न) নহে। কিন্তু ইহা থাকাতে পৃথিবীর ভিতর এমন আ-म्या इरेश थारक एए, डेशर्स इशिशांड रहेल क्ष्यकाल मर्थारे नीख जर्थागं रहेशा यारेट भारत। अरे खना উদ্ভিক্ত দিগের মূল বহুকাল জলে থাকিলেও পঢ়িয়া নম্ভ

হইতে পারে না। কিন্তু সতত জল সংলগ্ন হওয়াতে মৃত্তিকা এমত কঠিন হইয়া উঠে, যে তাহার ভিতরে জল প্রবেশ করিতে পারে না। এই কারণ মূলের মৃত্তিকা কঠিন হইলে খনন করিয়া দিবে। পরন্ত বালির নিম্নভাগে বোধমৃতিকা মিশ্রিত এক থাক চিকণ মৃত্তিকা আছে। তাহার নীচে বহুচুর অবধি ছাইবর্ণ বালি মৃত্তিকা পাওয়া যায় এবং উহার নিম্নভাগে এক থাক বোধ মৃত্তিকা আছে, তাহার পর কেবল ছাই মৃত্তিকা আছে। কিন্তু তাহার অধোভাগে খনন করিলে জল উঠিতে থাকে। এই জন্য আমরা তাহার इंडांख किंहूरे विलिए भारि ना। धरे श्रकारित मृखिका धक थोक वालि, পরে একথাক চিক্কণ মৃত্তিকা ইতাদি ক্রমশঃ শ্রেণীপূর্বক থাকাতে প্রকৃতির কোশল ব্যক্ত আছে, তাহা দর্শন করিয়া আমাদিশের মন আশ্রহণ্য বোধে ভাহাতেই লীন হইতেছে। ঐ সুধার। অবলম্বন করিয়া জল অতি শীঘ্র অধোগত কিমা বহুকালম্বারী না হইয়া নিয়মিত-ऋर्ष जारधारामन करत्। यमि शृथिवीत निम्नजार्ग धात বাহিক মৃত্তিকা না থাকিয়া ক্রমাগত বালি থাকিত, তবে রস অতি শীব্র অধোগমন করিয়া উপরিভাগতে এমত শুচ করিত যে, তাহাতে সমুদায় উদ্ভিজ্ঞ রসাভাগে নফ হইতে পারিত, কিন্তা যদি চিকণ মৃত্তিকা হইত, তবে তাহাতে জল বসিয়া তাহার হানি করিতে পারিত।

উক্ত হুই প্রকার মৃত্তিকার মধ্যে কতক অধিক জল ধারণ, কতক বা অধিক উত্তাপধারণ করিতে পারে। অতএব গুণের বিভিন্নতাপ্রযুক্ত উক্ত উভয় মৃত্তিকাই কৃষি কার্য্যের

উপযুক্ত নহে। কারণ উদ্ভিজ্জদিগের জীবনরক্ষার নিমিত্ত নিয়মিতরপ জল এবং উত্তাপ আবশ্যক। কিন্তু যদি এ গ্রই প্রকার মৃত্তিকা একত্র মিশ্রিত করা যায়, তবে উভয়ে উভয়ের গুণ সমাধা করিয়া উদ্ভিজের উপকারক গুণ অব-লম্বন করে এবং ভাহাতে চারা পুতিলে নিয়মিত উত্তাপে উত্তেজিত হইয়া নিয়মিত রস ভোগে পরিতৃষ্ট হইতে পারে। কিন্তু ইহাদিগকে কি পরিমাণে মিশ্রিত করিলে ক্লষিকার্য্যের উপযোগী হইতে পারে, তাহা আমরা নিশ্চয় বলিতে পারিনা। কারণ, উদ্ভিজ্জদিগের মধ্যে কাহারও পক্ষে মৃত্তিকায় বালির অংশ অধিক, কাহারও পক্ষে চিক্রণ মৃত্তিকার অংশ অধিক থাকিলে উত্তম হইতে পারে। যদি এক জাতীয় উদ্ভিজ্ঞ হয়, তথাপি তাহাদিগের পক্ষে ভিন্ন वावका करा जावनाक। यथा, नारिएकल हुक्क शिक्टमांश्वरल রোপণ করিলে কদাপি বর্দ্ধিত হইতে পারে না, কিন্তু এই জাতীয় তালরক ঐ স্থানে বহুসংখ্যক জিমিয়া থাকে। এইরপে অনুসন্ধান করিলে অনেক দৃষ্টান্ত দেখা যাইতে পারে। य উদ্ভিজে যে সকল ধাতু বস্তু আছে, যদি সেই সকল ধাতু কোন মৃত্তিকায় থাকে, তবে তাহাতে সেই চারা श्रुजिल, जारा ठारांत्र शक्क ऐश्रियांगी रहेर श्राद्य। मर्रा भारत भारत व्या एक, अहे जना भन्नकमश्युक मुखिकां य পুতিলে উত্তমরূপ হইতে পারে।

কিন্তু এই মত অবলম্বন সহজ নহে। কারণ, মৃত্তিকা এবং চারার মধ্যে যে ধাতু বস্তু আছে, তাহা নিরূপণ করিয়া রুষক কখন রুষিকার্য্য নির্মাহ করিতে হইলে রুসায়নিক

পরীক্ষা আবশ্যক করে এক্ষণে যেরূপ কৃষিকার্য্য নির্বাহ इरेटिह जोश (मिथिय़) जागि मिर्गित धरे अनुगान रहेटिह य रामि ७ हिक्न मृछिका छेडरा मम পরিমাণে মিঞিড করিলে সাম্বৎসরিক চারায় ও গেঁড়ুর পক্ষে উপযোগী হইতে পারে। রদ ও উত্তাপ উভয় সমভাবে থাকাতে, নিম্ন-লিখিত উদ্ভিক্ত সকল অতি শীঘ্র বাড়িতে পারে। যথা শালগ্রাম, গাজর ইত্যাদি। আর যদি মৃত্তিকার অপেকারত অধিক বালির অংশ পাকে. তবে উহারা অধিক উত্তাপের সংযোগ এবং রদের হীনতা প্রযুক্ত বিনষ্ট হইতে পারে। (करल त्रमयुक छे खिड्ड मकल श्रेत्र भृ विकाश छे खेम त्र थे ९-পন্ন হইতে পারে। কারণ ইহাদিগের প্রকাণ্ড মধ্যে অধিক রস থাকাতে মৃত্তিকার রস সহা করিতে পারে না, এই क्या उद्यारमंत्र भरक उठाभिङ यानि मृखिका छेभयूक इहेरङ পারে। কিন্তু চিকণ মৃত্তিকার ভাগা অধিক থাকিলে, উক্ত थकार्त উ खिरङ्ग भरक कथन छेभगुङ नहा। कात्र। এ মৃতিকার কঠিনতাপ্রযুক্ত ইহাদিগের মূল তঝাংধ্য প্রবেশ করিতে অশক্ত হওয়াতে শীর্ণ হইয়া মরিয়া যাইতে পারে। কিন্তু তাহা রহদ্বকের পকে উপযুক্ত। কারণ ইছাদিগের মূল স্ত্রবৎ হওয়াতে মৃত্তিকার কঠিনতার দুঢ়বন্ধন পূর্বক धमङ चित्र थाएक (य सएए ऐए भोडिंड इहा न।। এই छाना পঞ্চিমাঞ্চলে ফলের রক্ষ রোপণ করিলে উত্তম রহদাকার ফল উৎপন্ন হইয়া থাকে।

গামলায় যদি কোন চারা পুতিতে হয়, তবে ইহার মৃত্তিকা চিৰুণ এবং বালী, উভয়ের সমভাগ মিশ্রিত করিয়া

मिल उद्दात उर्भामिकामिक इरें भारत। এছल বিবেচ্য এই যে, এদেশে নিরবিচ্ছন্ন চিকণ মৃত্তিকা পাওয়া হুর্ঘট, প্রায়ই বালি মিশ্রিত থাকে। অতএব উভয়ের মিশ্রণ করিতে হইলে বালির পরিমাণের বিষয় বিবেচনা করিতে হইবে, কিন্তু বহুসংখ্যক চারা পুতিবার জন্য এইরূপ মৃত্তিকা মিশ্রিত করা বহু বায় এবং পরিশ্রমসাধা। এই জন্য আমুর্য এই স্থলভব্যবস্থা প্রকাশ করিতেছি যে, রুষক যে স্থানে ঘন্যাস জন্মাইয়া থাকে, তথাকার চাপড়া কাটিয়া পাঁজার ন্যায় সাজাইয়া রাখিবে। পরে ঐ মৃতিকা শুষ্ক ছইলে উক্ত প্রকারে অধিকতর উর্বরা ছইবে। কারণ याम जाि खভावणः ऐक्रा मृण्कि। ना भारत कथन । তেজোবন্ত হয় না। যদি কোন ক্লেত্রে ক্ষিকার্য্য নির্বাহ করিতে হয়, তবে তথাকার মৃত্তিকায় যে চারা প্রতিতে इहेरनक, जोशांनिरात्र शरक की मुखिका देखेंद्रा कि ना जरवां তাহা পরীক্ষা ছারা নিরপণ করিয়া পশ্চাৎ ঐ কার্যো প্রবৃত্ত হইবে। প্রথমতঃ তথায় তৃণাদি উদ্ভিদ্ধ যে সকল আছে, তাহাদের রদ্ধি দেখিবে এবং ঐ ক্ষেত্রের অত্যন্ত শুক্ষ মৃত্তিকা এক অংশ এবং ভিজা মৃত্তিকা এক অংশ লইয়া অঙ্গুলী দ্বারা টিপিয়া দেখিবে যে, যদি এ শুষ্ক অংশ অভিশয় কঠিন হয়, এবং আর্দ্র অংশ আঠার ন্যায় এমত লাগিয়া থাকে যে তাহা পরিষ্কার করিতে অনেক যত্ন পাইতে হয়, তবে এইরূপ মৃত্তিকাতে কদাচ রুষিকার্য্য इरेटवरु ना। यमाशि मुखिकाट किश्वियां व वाठांत्र मक्षांत्र थारिक जाथि जञ्जलिए मृद्रिक्ष मश्लद्य इहेशा थारिक ना,

তবে সেই মৃত্তিকা অবশ্য উর্বরা হইবে। কিন্তা যদি
মৃত্তিকায় কিঞ্চিশাত্র আঠা না থাকে, এবং অন্ধূলিতে
ধারণ করিলে এলাইয়া পড়ে, তবে নিশ্চয় হইল যে, সেই
মৃত্তিকার উর্বরশক্তি কিছুই নাই। কিন্তু তাহাতে তরমুজ,
ফুটি ইত্যাদি হইতে পারে।

যে ভূমি বায়ু হইতে রস আকর্ষণ করিয়া উদ্ভিক্ষকে পুষ্ঠ করে তাহাকে উৎপাদক ভূমি বলা যায়। তাহাতে বালি, চিকণ এবং পচা জন্তর কিম্বা পচা উদ্ভিজ্জের সারাংশ আছে। ঐরপ সার যত অধিক থাকিবে, ততই ভূমির রসশোষিকাশক্তি রিদ্ধি হইবে। যদি মৃত্তিকার নিম্নভাগে ইফক নির্মিত কোন দ্রব্য কিম্বা প্রস্তর থাকে তবে, সেই স্থান শীক্ষ শুক্ত হইয়া তাহার উপরিভাগে যে চারা থাকে তাহার বিনাশ করে।

অনুৎপাদক ভূমি দর্শন মাত্রেই চিনিতে পারা যায়, স্বাভাবিক বর্ণ বিবর্ণ হইরা যায় এবং কোন কোন স্থানে বালি সকল মৃত্তিকা হইতে পৃথক্ভূত হইয়া বহিষ্কৃত হইয়া থাকে কিমা কোন কোন স্থানে লবণ প্রকাশিত হয়, যাহাকে ভাষায় লোণা ভূমি কহে। যে ভূমিতে বহুকাল রুষিকার্য্য হইতেছে তাহাও পরে ঐরপ হইতে পারে, কারণ উদ্ভিল্জেরা তাহার সার অংশ ভোগ করিয়া ক্রেজের হীনতা করে, বিশেষতঃ বর্ষার জল অধিক পড়িলে ভূমির উপরি ভাগের চিকণমৃত্তিকা এবং সারভাগ ধৌত হইয়া নিম্নভাগে আসিয়া থাকে। এই প্রকারে মৃত্তিকা যত ধৌত হইবে ততই মৃত্তিকার ভিতরের চিকণ ও সার পদার্থের

হ্রাস হইবেক স্বতরাং ক্রমে ক্রমে উপরিভাগে বালি প্রকাশ পায়, এবং নিম্ন ভূমি ক্রমে ক্রমে সতেজ হইতে থাকে, অতএব যদি উক্ত প্রকার ভূমিকে শস্যশালিনী করিবার আবশ্যকতা হয় তবে, প্রথমতঃ তথায় ধঞ্জের বীজ বপন করিবে, কারণ উহাদিগের পত্র তথায় পতিত হইয়া পচিয়া এক উপাদেয় সাররূপে পরিণত হয়, তাহাতে ভূমি উর্বরা হইতে পারে, কিম্বা যে স্থানে বালি বহির্গত হইয়াছে তথায় কিঞ্চিৎ চিক্লণ মৃত্তিকা এবং সাম একত্র মিশ্রিত করিয়া দিবে অথবা কেবল চিক্ষণ থাকিলে বালি মিশ্রিত করিবে এতদ্ব্যতিরিক্ত নিম্ন লিখিত কয়েক প্রকার উপায় দ্বারা অনুৎপাদক ভূমির সংশোধন করা যাইতে পারে। এ সকল উপায় ক্রমশঃ লিখিত হইল। প্রথম মৃত্তিকা খনন করিয়া ওঁড়া করিবে, যদি বহুকালাবধি মূলদেশের মৃত্তিকা খনন করা না যায় তবে তাহা এমত কঠিন হয়, যে তাহার ভিতরে জল, রেডি এবং বায়ু প্রবেশ করিতে পারে না, এবং উপরিভাগে অকর্মণ্য নানাবিধ উদ্ভিজ্ঞ জমিয়া তথা-কার তাবৎ রস নয় করে, তাহা হইলেই মূল সকল বাড়িতে পারে না এবং তাহাদিগের শাখা প্রশাখানা হওয়াতে অধিক দূর হইতে রস আকর্ষণ করিতে অক্ষম হয়। সুত-রাং চারা সকল তদবস্থই থাকে। অতএব বীজবপন এবং চারা রোপণ করিবার পূর্কে মৃত্তিকা খনন করিয়া ওঁড়া করিতে হইবে এবং রোপণান্তর মধ্যে মধ্যে কেত্রের মৃতিকা খুসিয়া দিতে হইবে। ইহাতে উপকার এই দর্শে যে মৃত্তিকা যত ওঁড়া হইবে, তত্ই তাহার রস আকর্ষণ শক্তি র্দ্ধি হইবে। বিশেষতঃ চিকণ মৃতিকা

ওঁড়া না করিলে আন্তরিক রস শুক্ষ না হওয়াতে বারুর
রস আকর্ষণ করিয়া লইতে পারে না। যদি আন্তরিক
রস শুক্ষ না হইলেও কোন উপায়ক্রমে বারুর রস আকর্ষণ
করে, তবে তাহাতে পরিমিত অপেকা অধিক রস একর
বন্ধ হইরা থাকে, তাহা হইলেই চারার পক্ষে বিশেষ অনি
টের সন্তাবনা। যদিও রস উদ্ভিক্তের জীবন স্বরূপ, তথাপি
মূলদেশে তাহা নিরন্তর বন্ধ হইরা থাকিলে, বারু সঞ্চারের
অভাবে অভিনব স্তর্বৎ মূল সকল পচিয়া যায় এবং চারাও
ক্রমশঃ শুক্ষ হইরা মরিয়া যায়। তাহা হইলে "গোড়ায়
জল বসিয়াছে" সকলে বলিয়া থাকে। তৎকালে মূলদেশে
স্থা্রের উত্তাপ সংলগ্ন করা আবশ্যক অতএব মৃত্তিকা খনন
করিয়া গুঁড়া করিতে হইবে।

তৃতীয়, বায়ু সংলগ্ন হওয়াতে মৃত্তিকার সংশোধন হইতে পারে। তরিমিত্ত বর্ষার অস্তে অর্থাৎ কার্তিকাদি মাসে কিয়া গ্রীম্ম কালে একবার রক্তিপাত হইলে অনুৎপাদক ভূমি সকল খনন করিয়া যদি তাহার চাপড়া সকল উল্টাইয়া রাখা যায়, তবে তাহা চতুর্দিকে রোজ ও বায়ু লাগিয়া অত্যন্ত শুক্ষ হইলে, রক্ষের মূল ও আন্তরিক রম ইত্যাদি যে সকল বস্তু থাকায় ঐ ভূমি অনুৎপাদক শইয়াছিল তৎসমুদায় বিনফ্ট হওয়ায় ভূমির অসাধারণ উৎপাদিকাশক্তি জন্মে। এই হেতু প্রাচীন দেয়ালের মৃত্তিকা বিশেষ উপকারক বোধ করিয়া ক্ষেত্রে দেওয়া আবশ্যক। অন্য বস্তু মিঞ্জিত করাতে মৃত্তিকার পরিবর্ত্তন হইতে পারে, ইহা

পূর্ব্বে বলিয়াছি। যদি মৃত্তিকাতে লেছি সংযুক্ত কোন

দ্রব্য থাকে, তবে তাছা পার্ব্বতীয় মৃত্তিকার ন্যায় হরিদ্রাবর্ণ

হয়, তাছাতে চুন মিশ্রিত করিলে তাছার উত্তমরূপে সংশোধন ছইতে পারে। এবং ঐ অবুৎপাদক ভূমির মৃত্তিকা
পোড়াইলেও অধিক উপকার দর্শে। বিশেষতঃ যদি চিকণ

মৃত্তিকা নিয়মিতরূপে পোড়ান হয়, তাহা হইলে তাহাতে

অধিক কঠিনতা থাকে না। তাছার জলধারণ শক্তিরও

অনেক হ্রাস ছইয়া যায়। একারণ এদেশীয় রুষকেরা
ধান্যাদি ক্ষেত্রে অগ্নি লাগাইয়া দেয়।

কিন্তু রন্ধির জল উন্নত প্রদেশ হইতে আসিরা যে স্থানে ক্ষণ কাল অবস্থিত হইরা অধােগত হয়, তথাকার মৃতিকা পলি দ্বারা বরং তেজস্বী হয় এবং উদ্ভিক্ত সকল তাহাতে পরিবর্ধিত হয়। যদি উপরিভাগের এবং তাহার ক্সধােভাগের ভিতরের মৃতিকা অত্যন্ত আল্গা হয়, তাহাতে জল পতিত হইবামাত্র অধােগত হইয়া যায় এবং যদি উপরিভাগের মৃতিকা আল্গা হয় অথচ তাহার ভিতরে এমত কঠিন হয় যে, জল তাহার ভিতরে প্রবেশ করিতে পারে না। তবে প্রজন আপাততঃ উপরিভাগে হইতে অধােগত হইতে দেখা যায় বটে, কিন্তু তাহা অধােগত না হইয়া, উপরিভাগের মৃতিকা রােশদি সংযােগে যত শুক্ত হইবে। অতএব এই সকল কারণবশতঃ জল অধােগত হয়, কিন্তা তদবস্থই থাকে ইহা নিরপণ করিয়া সাধ্যক্রমে তাহার সংশােধন পূর্ব্বক ক্ষিকার্য আরম্ভ করিবে। নদী তীরম্ভ ভূমি সতত স্রােতে

প্লাবিত ছইলে তাছাতে কোন চারা উৎপন্ন ছইতে পারে
না। এই ছেতু বাঁধ বাদ্ধিয়া তাছা নিবারণ করিলে, ঐ
ভূমি শুক্ষ ছইয়া ক্ষবিকার্য্যের যোগ্য ছইবে। পূর্ব্বে কহি
রাছি যে ক্ষেত্রে নালা কাটিয়া জলসেচন করিলে ভূমি
উৎপাদিকা ছইতে পারে, কিছ্ক তদপেক্ষা যখন ক্ষেত্রে
ফলল না থাকিবে, তখন নদীর কিন্তা খালের ঘোলা জল
আনিয়া যদি ঐ ক্ষেত্রে পরিপূর্ণ করা যায়, তবে তাছাতে
পলি পড়িলে উৎপাদিকাশক্তি জ্মিতে পারে।

পঞ্চম, কোন ভূমিতে এক জাতীয় শদ্য ক্রমাগত চুই তিন বৎসর রোপণ করিলে উত্তরোত্তর ফলের ম্যুনতা অবশ্যই হইবে। কারণ ভূমির যে এক উৎপাদিকাশক্তি আছে, ভাহা অনবরত শস্য থাকায় বিনষ্ট হইয়া যায়। এবং প্রবজাত শদ্যের শিকড়ও আন্তরিক রস ইত্যাদি অনুৎ-পাদিকাশক্তির হেতৃ সকল একত্র সমাবিষ্ট হয়; এই নিমিত্ত কোন কোন শস্য-ক্ষেত্র এক বৎসর, কোন কোন শস্য (क्व जड़िंद। ७ मान नेनाम्ना कित्रा दाचिट इक्टि। যে ভূমিতে প্রথম বৎসর যেরপ ইক্ষু হইয়াছিল, পর বৎসর তাহাতে তাহা পুনর্কার রোপণ করিলে তাদুশ হইবে না। কারণ পূর্বজাত ইক্ষুর মূল ও শিকড় জাজি কঠিন। এই **ट्यु (मर्गात्र जोशांक नर्छ कित्र जोशां मा।** विटम-वजः উৎপাদিকাশক্তি এक वरमत रेक्ट्र উৎপন্ন করিয়া নীনতা প্রাপ্ত হইলে সেই হীনতাবছায় পুনর্কার তাহা हेर्भामन कतिएक भारत ना। कांत्र मक्काठीय ममा हेर-পাদন করিতে একই প্রকার শক্তি অপেকা করে। কিন্ত

यि देखू (ऋषन कित्री (य भेगा जोष्ट्रभ भेकि अर्थिका করে না, এমত অন্য জাতীয় শস্য রোপণ করা যায়, তাহা হইলে তাহা দেই হীনশক্তি দ্বারাই সম্পূর্ণরূপে উৎপন্ন ছইবে, কারণ তাহার পক্ষে দেই শক্তিই বলবতী। যেমন এক ভারবাছক একটা ভার বহন করিতে করিতে ক্রমশঃ শক্তির হীনতাপ্রযুক্ত ক্লান্ত হইলে বিপ্রাম না করিয়া তাহা বহন করিতে পারে না, কিন্তু তাহা অপেকা লঘু ভার অনায়াসে বছন করিতে পারে, সেইরপ ক্ষেত্রাদি বিষয়ে ও জানিতে হইবে। যদিও বোসাই ইক্ষু চ্ছেদন করিয়া ব্যয় বাকুল্য ও সাতিশয় পরিভ্রম স্বীকার করিয়া সেই গোড়া-তেই পর বৎসর ইক্ষু উৎপন্ন হইতে দৃষ্ট হয়, কিন্তু তৃতীয় বৎসর তত অধিক বায় ও পরিশ্রম করিলেও তাদৃশ ইক্ষু জন্মাইতে পারে না। এই হেতু ইক্ষু ক্ষেত্র এক বৎসর শস্য শুন্য করিয়া রাখিতে হইবে। ধান্যাদির মূল অপেকার্কত কোমল এবং অপপ উত্তাপেই শুষ্ক হইয়া যায়। এই নিমিত ধান্যাদি কেত্তে ৫।৬ মাস শস্যশূন্য করিয়া রাখিলে, তাহার छे । अरेक्ष গামলার মৃত্তিকায় এক বৎসর চারা উৎপন্ন করিয়া পর বৎসর সেই মৃত্তিকা পরিবর্ত্তন করিয়া চারা রোপণবা বীজবপন করিবে।

জগৎপিতা জগৎ-প্রারম্ভে সর্ব্যপ্রকার সজীব পদার্থকে এরপ স্থানিবার্যা নিয়মে চিরবন্ধ করিয়াছেন যে তাহারা আপন আপন ভক্ষ্য বস্তু উদরে পরিপাক করিলে যে রস উৎপন্ন হয় তাহাতেই তাহারা জীবিত ও রন্ধিনীল হইয়া

থাকে। তিনি জন্তদিগের যেরপ বিভিন্ন জাতির ভক্ষা বস্তুর বিভিন্নরপ ব্যবস্থা করিয়াছেন, উদ্ভিদদিগের প্রতিও দেইরপ যে মৃতিকা এক প্রকার উদ্ভিদদিগের ভোজা তাহা অন্যের ভোজনার্হ নহে, যে স্থানে ক্রমশঃ এক প্রকার উদ্ভিদের উৎপত্তি হইয়াছে তথায় দেই প্রকার উদ্ভিদ আর জন্মে না, ইহার কারণ এই মাত্র দেখিতেছি যে মৃতিকার এক এক উপাদান এক এক উদ্ভিদের ভোজনার্হ। যে স্থলে যে উপাদান অধিক পরিমাণে থাকে তথায় সেই উপাদান ভোজী বা ভোগী উদ্ভিদ সকল উত্তমরূপে জন্মে। এইরূপে উদ্ভিদ সকল নিজ নিজ ভোজন পদার্থ অধিক পরিমাণে আকর্ষণ করিয়া বর্দ্ধিয়ু হইয়া থাকে, স্তরাং দেই পদার্থ নিঃশেষ হইলে তথায় উক্ত জাতি উদ্ভিদ আর প্রায় উৎপন্ন হয় না।

উদ্ভিদদিগের কোন অংশ পোড়াইলে প্রায় সমুদ্র
নিষ্ট ইইরা যায়, কেবল কিঞ্চিৎ মাত্র ভন্ম অবশিষ্ট থাকে
বিদন্ধ বস্তুর উক্ত ভন্ম ভিন্ন বিনষ্ট পদার্থকে ইংরাজী
ভাষার কার্বণ কহে। উহাই অলারের সার অংশ এই বস্তু
বায়ুর ভিতর অভিঅপা পরিমাণে থাকে অর্থাৎ এক সহস্র
অংশের মধ্যে এক অংশের অন্ধিক থাকে না বায়ু যখন
নাসিকার দ্বার দিয়া শ্বাস যন্ত্রের অন্তর্গত হা তখন ঐ বায়ুর
উপাদান অক্সিজন নাটোজেন বায়ু ও কার্বনিক এদিড
এই ভিন বস্তুর মধ্যে অমকর (অক্সিজন) বায়ু রক্তের সহিত
মিশ্রিত ইইরা উহাকে পরিকার করে এবং অবশিষ্ঠ বায়ু
বহির্গত ইইরা যায়। জন্তুদিগের শ্বাসজন্ত্র সদৃশ উদ্ভিদ

দিগের পত্রের নিম্নভাগে কতিপয় রক্ষ, আছে। এই রক্ষ পথ অবলম্বন করিয়া বায়ু পত্রের ভিতর প্রবেশ করিলে পরিপক্ষ রসের সহিত মিশ্রিত হইয়া কার্যণিক এসিড ও नाइट निष्क्रिन उथांग्र मिथिए इहेग्रा थारक अवर जिल्लिएन ভাগ বহির্গত হইয়া যায়। এইরপে কার্বণ ক্রমশঃ সঞ্চিত इ अश्रांत উ सिन मकल द्रिष्ठा था थ इ श्रांत क्रिन এই ছুয়ের পরস্পরের শ্বাস ক্রিয়ার এই মাত্র ভেদ যে জন্ত-গণ নিশ্বাস সহকারে আরুষ্ট বায়ুর অক্সিজন ভাগ মাত্র গ্রাহণ করিয়া নাইটোজেন ও কার্বণিক এসিডের ভাগ পরি-ত্যাগ করে। এইরূপ জন্ত এবং উদ্ভিদ্দিগের পরস্পরের বিপরীত রূপ শ্বাস প্রক্রিয়া দর্শনে অনুমান হইতেছে যে জগৎপিতা জগৎরক্ষার জন্য কি আশ্চর্য্য কৌশলই প্র-কাশ করিয়াছেন, জন্ত শ্বাস ক্রিয়া দারা বায়ুকে ছবিত করিতেছে। পক্ষান্তরে উদ্ভিদ সকল উহাকে সংশোধিত করিতেছে, এই প্রকারে বায়ু উভয় রক্ষা কারি গুণ ধারণ করিয়া সমভাবে রহিয়াছে, ইহার প্রত্যক্ষ প্রমাণ এই দেখি-তেছি যে এক কাচ নিষিত বাক্স জলে পরিপূর্ণ করিয়া ইহার তলভাগে ঝাজিও পাটার চারা সকল রোপণ না করিয়া যদি ইহাতে মৎসা ও গেড়ি ছাড়িয়া দেওয়া যায়, তবে ইহারা কখনই জীবিত থাকিতে পারে না। জক্ত ও উদ্ভিদ हेरात्र जीवन भात्र भट्क भत्रभट्तत मार्था मार्थक ইহার কারণ এই ঐ বাক্সের জলে মৎস্য সকল মল ত্যাগ করিলে সেই মল হইতে ঝাঁজি ও পাটা সকল কার্বনিক এসিড গ্রাহণ করিলে ইহার কার্বন ঝাঁজি ও পাটার ভিতর

থাকে এবং অক্সিজন বহির্গত হইয়া যায়। মৎস্য সকল সেই অক্সিজন গ্রহণ করিয়া জীবিত থাকিতে পারে, কিন্তু ঐ বাক্সের ভিতর ঝাঁজি না থাকিলে উক্ত মল দারা জল দূষিত হইয়া মৎস্যদিগকৈ নফ করে।

উদ্ভিদ সকলের ভন্ম পরিক্ষা করিয়া দেখিলে তাছাতে এই কএকটি উপাদান দেখিতে পাওয়া যায় (১) সিলিকা অর্থাৎ বালি (২) এলুমিনা অর্থাৎ এঁটেল মাটি (৩) লাইম চূণ (৪) ম্যাগনেসিয়া (৫) এলকেলাই অর্থাৎ অম নাশক নানা প্রকার ক্ষার পদার্থ যেমন পটাশ (৬) সলফিউরিক এসিড অর্থাৎ দ্রাবক (৭) অক্সাইড্ অফ আইরণ অর্থাৎ লোহ সমুদ্রকূলে যে সমস্ত উদ্ভিদদিগের উৎপত্তি হয় তাহাদিগের ভন্মের ভিতর লবণ সোডা ও নানা প্রকার আইওডাইড্ থাকে। ভন্মের ভিতরের উপাদান দেখিয়া স্পষ্ট প্রতীয়মান হইতেছে যে ইছারা এ উদ্ভিদদিগের ভোজাবস্তু এই সকল বস্তু কি প্রকারে পরিপাক হইয়া উদ্ভিদদিগের ভোজন বেয়াগা হয়। এক্ষণে তাহা বিবেচনা করা কর্ত্বতা।

পূর্ব্বক্তি বস্তু সকল মৃত্তিকার সহিত যেরপ মিশ্রিত থাকে তাহা দেখিয়া অনুমান হয় যে ইহারা বিশুদ্ধ অব-স্থায় যাইয়া কখনই উদ্ভিদদিগের ভিতরে প্রাক্তান করিতে পারেনা। কেহ জল জাব্য কেহ এমে িয়া সংযোগে জাব্য কেহ বা কারবণিক এসিডের সহিত মিশ্রিত হইয়া কারবণেট অব সোডার জল জাব্য হইয়া উদ্ভিদদিগের ভিতর যাইয়া প্রবেশ করে। বালি জাব্য অবস্থায় পটাশের সহিত মিশ্রিত হইয়া সিলিকেট অব পটাশ হয়। ইহা

অতি প্রচুর পরিমাণে কঠিন প্রস্তারের উপাদান হইয়া থাকে। य मृक्तिश अधिक পরিমাণে সিলিকেট অব পটাশ খাকে, उथात्र शम, रेक्ट्र रेजामि छेखम ऋथि क्या, किन्छ य मृखिकात्र অপপ পরিমাণে থাকে দেই ভূমি পতিত রাখা অথবা আলু মূলা, সাল্যাম, ইত্যাদি যাহাদিগের জন্য অধিক শিলিকা আবশ্যক করে না। তাহাদিগকে এই স্থানে রোপণ করা কর্ত্তব্য, এইরূপ অবস্থায় হুই তিন বৎসর পাকিলে মৃত্তিকা-স্থিত শিলিকা সকল দ্রাব্য হইয়া উঠিতে পারে অথবা নিকটবর্ত্তী পর্বত হইতে দিলিকা সকল দ্রাব্য অ্বস্থায় ধোত হইয়া ক্ষেত্রে পতিত হইলে ইহার উর্বরাশক্তি श्रमक लक्ष इहेर्ड शादा। कूहेक लाहेम व्यर्श वार्ष চুন সহকারে সিলিকা সকল দ্রাব্য হইয়া থাকে। ফেলসপার প্রস্তর গুড়া করিয়া কোন এসিডের সহিত মিশ্রিত করিয়া ताथित्न इरे जिन मथार माथा जावा रहेशा यांश, किन्छ यनि প্রথমে ইহাতে কুইক লাইম যোগ করিয়া এবং তৎপরে তাহাতে এসিড দিয়া অগ্নির উত্তাপ সংলগ্ন করা যায়, তাহা इरेल हुन खण्णे कोल्व मर्था फिलम्पीर्वत महिल त्रामा-य्रिक (योर्ग मिलिङ इय्न, এवः ইছার এলকেলাই অর্থাৎ পটাশ বহিৰ্গত হইয়া যায়, তখন ঐ এসিড সংযোগে ফেল-সপারের চুণ এবং সিলিকাদি সম্পূর্ণরূপে দ্রবীভূত হইয়া স্বচ্ছ আটার ন্যায় হইয়া উঠে, অর্জিনেসিয়স প্রস্ত-রের সিলিকেট সকল চূণের দ্বারা দ্রব হুইতে পারে।

কুশুকারদিগের চিকণ মৃত্তিকা জলে গুলিয়া চূণের জল মিশ্রিত করিলে উহা তৎক্ষণাৎ ধন হইয়া যাইবে; আর তদবস্থায় এক মাস কাল রাখিয়া যদি ইছাতে কোন এসিড
মিশ্রিত করা যার তবে এ কাদা আচার ন্যায় হইয়া যাইবে, কিন্তু চূণের সহিত মিশ্রিত না করিলে উক্তরূপ কখনই
হইবে না। চূণ কাদার উপাদানের সহিত মিশ্রিত হইয়া
ইহাকে দ্রব করে এবং উহার এলকেলাই অর্থাৎ ক্লার
পদার্থ সকল বহির্গত করিয়া দেয়, চূণের উক্তরূপ গুণ
দেখিয়া স্থির হইয়াছে যে মৃতিকায় চূণ মিশাইয়া দিলে
উহা শীঘ্রই বলবতী হইবে। যদি মৃতিকায় অধিক বোধ
মৃত্তিকা থাকে তবে তাহা পোড়াইলে চূণের ন্যায় কায়্য
করে।

চিকণ মৃত্তিকায় যে সকল সিলিকেট থাকে তাহারা এসিড সংযোগে কার্য্যকারী হইতে পারে না। কিন্তু সিলিকেটকে অগ্রে পোড়াইয়া তাহাতে এসিড সংযোগ করিলে উহা দ্রবীভূত হইয়া কার্য্যকারী হইবে।

কুন্তকারের মৃত্তিকা মিশ্রিত মৃত্তিকা এবং অন্য প্রকার এঁটেল মৃত্তিকায় ও উক্তরপ গুণ আছে, ইহাদিগকে স্বাভাবিক অবস্থায় বিশুদ্ধ দ্রাবকে সিদ্ধ করিলে কোন পরিবর্তন হয় না, কিন্ত ইহাদিগের সহিত কিঞ্ছিৎ চূণ সংবোগ করিলে সিলিকা সকল দ্রাব্য হইয়া আ লার ন্যায় হইয়া যায়। র্টির জল ও সমুদ্র জলে কানিক এসিড আছে এই জন্য এই ছই প্রকার জল যাহাতে লাগিবে তাহাই ক্ষয় হইয়া পভিবে। কঠিন প্রশুর সকল ইহাদিগের দারা ক্ষয় হইয়া মৃত্তিকাসাৎ হইয়া থাকে, কারণ মৃত্তিকার উপাদান সকল দ্রাব্য অবস্থায় প্রস্তরেরচুণ, সোডা, পটাশ,

আকর্ষণ করিয়া লয়, স্বতরাং কার্কনিক এসিড সংযোগে প্রস্তুর হইতে উক্ত জবা সকল মৃত্তিকার ভিতর প্রচ্ন পরিমাণে উৎপত্তি হইয়া থাকে। উদ্ভিদদিগের পুর্যিকর জবা মধ্যে ফস্ফেট অফ লাইম অতি প্রয়োজনীয়, ইহা অদ্বিও জক্তদিগের বিষ্ঠার ভিতর থাকে, ক্লোরিণ ও সোডা, মৃত্তিকার ভিতরে লবণ থাকে তাহা হইতে উৎপত্ন হয়, গত্তক গিপসম হইতে উৎপত্তি হয়। লোহা মৃত্তিকার সব স্থানে আছে, পর্বতে প্রদেশে ইহা অক্সিজনের সহিত মিপ্রিত হয়া লাল বর্ণ হয়। উক্ত জবাদি ভিত্রং পরিমাণে ম্যান-গেনেসিয়ার সহিত সংযোগ হইয়া উদ্ভিদদিগকে রিদ্ধিলিল করে। কারবণিক এসিড সংযোগ হইয়া উদ্ভিদদিগকে রিদ্ধিলিল করে। কারবণিক এসিড সংযোগ যে প্রকারে মৃত্তিকার উপাদানের যোগা বিচ্ছেদ হয়্মা থাকে তদ্বিবরণ প্রকাশ করিয়া এক্ষণে অন্যান্য বস্তু দ্বারা যে প্রকারে এই উপাদান সকলের যোগা বিচ্ছেদ হয় তদ্বিয়ে কিঞ্চিৎ লিখিতে প্রবৃত্ত হইলাম।

এই পৃথিবীতে কখন জন্ত দেহ কখন উদ্ভিদাদি পঢ়িয়া
মৃত্তিকাসাৎ হইতেছে এবং ঐ জন্ত দেহ উদ্ভিদাদি দারা
পুর্ব্বোক্ত রূপ যোগ বিচ্ছেদ হইতেছে। জন্ত দেহ
উদ্ভিদাদি মৃত্তিকার সহিত মিশ্রিত হইলে ভূমির উর্ব্বরতা
শক্তি বর্দ্ধিত হইয়া মৃত্তিকার যে সকল বস্তু সংযোগে জন্ত
দেহ ও উদ্ভিদাদি উৎপন্ন হইয়া ছিল তাহাই পুনর্বার
আসিয়া মৃত্তিকায় উপস্থিত হয়, এইরূপ স্বাভাবিক কার্য্য
ক্রমশঃ প্রচলিত হইয়া আসিতেছে এবং পৃথিবীতে শস্যোৎপত্তি সমভাবে হইয়া আসিতেছে। যদি মৃত্তিকা আল্গা হয়

ও তাহাতে প্রান্থ পরিমাণে চুণ থাকে,তবে জন্ত দেহ ও উদ্ভিদ শীব্র পচিয়া যায় কিন্তু কঠিন এঁটেল মৃত্তিকা হইলে ঐ হই বস্তু শীব্র অক্সিজন আকর্ষণ করিতে থাকে, এবং যে এমোনিয়া এই মৃত্তিকার ভিতর থাকিবে তাহা পরিবর্ত্তন ইইয়া নাইটিক এসিড হইয়া যাইবে।

কোন রক্ষের জন্ম জলে গুলিলে ইছার ভিতর চুণ যে কোন অবস্থায় থাকিবে তাহা ঐ জলে মিভিত হইবে। ভন্মের ভিতর যে সকল নাইট্রেট থাকিবে তাহারা ও চুণের জলে মিশ্রিত হইবে। ইহাতে অনুমান হইতেছে ষে আল্গা মৃত্তিকা যেরপ এমোমিয়া ধারণ করিয়া রাখে সেইরপ নাই-্রিক এসিড ধারণ করিয়া রাখিতে পারে না। এই বস্তু চুণ কিম্বাম্যাগনেসিয়ার সহিত মিশ্রিত হইয়া র্ষ্টির জলের দারা মৃত্তিকার নিম্নস্তরে যাইয়া স্থিত হয়। যে সকল রক্ষের শিকড় মৃত্তিকার অধিক নিম্নভাগের রদ আকর্ষণ করিয়া शांक डाइमिर्गत शक्क जे नस अधिक कार्याकारी इरा। অতএব মৃত্তিকায় চূণের ভাগা অধিক থাকিলে, সেই মৃত্তিকার জন্ত সার থাকিলে ইহার এমোনিয়া পরিবর্তন হইয়া নাই-ট্রিক এসিড উৎপন্ন হয়, এবং তাহা র্ষ্টির জালর সহিত মিশ্রিত হইয়া নিম্নস্তরে যাইয়া উপস্থিত ছই ে সেই মৃতিকা আকর্ষণ করিয়া রাখিলে ইছা শস্যাদি চারার পক্ষে কখন **उभागा इहेरव ना, कांत्रग नाहरिद्यां का विभिन्न रिविक एवं उक्**र দ্রব্য তাহা ক্রমশঃ এ মৃত্তিকায় অভাব হওয়াতে উহার **छेर्क्**रता मंक्ति आत्र किहूरे थाकिए मा।

কোন ক্ষেত্রে এক জাতি চারা ক্রমশঃ রোপণ করিলে তথায় ঐ জাতীর ভক্ষ্য দ্রব্য ক্রমশঃ কমিতে থাকে। এজন্য ঐ ক্ষেত্র কিছু দিন পরে সেই জাতীয় চারার পক্ষে অকর্মণ্য হইয়া পড়ে। যেমন কোন ক্ষেত্রে ফস্ফরিক এসিড অভাব হইলে ঐ দ্রব্য যে চারা অধিক পরিমাণে গ্রহণ করিয়া থাকে, তাহার পক্ষে উক্ত ভূমির উর্বর্গ কখনই প্রকাশ হইবে না। এবং যে ভূমিতে পটাশের ভাগ কিছু মাত্র থাকেনা যদিও তাহাতে অন্য উপাদান প্রচুর পরিমাণে থাকে তথাপি তাহাতে ভক্ষক চারা সকল কখনই উৎপন্ন হইবে না।

মৃত্তিকা মিশ্রিত ফসফেট সকল জল এবং কার্বোণিক এসিড সংযোগে যে প্রকার মৃত্তিকার বিস্তীর্ণ হইরা পড়ে তিদ্বিরণ আমরা পূর্বের প্রকাশ করিয়াছি। একণে ক্লো-রাইড অব সোডিয়ম অর্থাৎ লবণ, নাইট্রেট অব সোডা এবং এমোনিরা ইত্যাদি সংযোগে ও ফসফেট যে প্রকারে বিস্তীর্ণ হইরা পড়ে, তদ্বিষয় প্রকাশ করিতেছি।

কিন্তু ঐ সকল ভক্ষা দ্রব্য উদ্ভিদগণ যে প্রকারে ভক্ষণ করিয়া থাকে তদ্বিষয় বিবেচনা করিলে এই নিরূপণ হয় যে মনুষ্য জাতির ভক্ষা দ্রব্য যে প্রকারে অথ্যে প্রস্তুত হইয়া গৃহীত হইয়া থাকে। উদ্ভিদদিগের ভক্ষা দ্রব্য সকল সেই প্রকারে পরিপাক করিয়া গ্রহণ করিবার উপযুক্ত করিতে হয়। উদ্ভিদদিগের শিকড়ের অগ্রভাগে ইহাদিগের মুখের স্বরূপ যে সকল স্ক্রম ছিদ্র আছে তাহা দেখিয়া স্পষ্ট প্রতীয়মান হইতেছে যে কোন বস্তু জল-দ্রাব্য না হইলে

ইহাদিগের ভিতরে যাইয়া কখনই প্রবেশ করিতে পারে না। এই জন্য ভক্ষা প্ৰব্য সকল স্বাভাবিক কৌশলে জল প্ৰাব্য इहेल निकड़ मकल आंकर्षण कतिया लग्न, এই मकल डेপोमान মৃত্তিকার ভিতর রাসায়ণিক যোগে এমৎ দুঢ়বন্ধ আছে যে তাহাদিগের চিহ্ন কিছুমাত্র দেখিতে পাওয়া যায় না এবং উদ্ভিদ্দিগের কোন শক্তি দ্বারা ইহাদিগের যোগ বিচ্ছেদ করা হইতে পারে এমত কিছুই দেখিতে পাই নাই, তৎ-প্রযুক্ত স্বাভাবিক কৌশলে উদ্ভিদ্দিগের ভক্ষ্য দ্রব্য সকল প্রস্তুত হইয়া থাকে, সভাবিক কৌশলে ভক্ষ্যদ্রব্য প্রস্তুত হইলে জল বায়ুর উত্তাপ এই তিন বস্তু মৃত্তিকার সহিত সংলগ্ন হুইলে ইহার রাসায়ণিক যোগা বিচ্ছেদ হুইয়া একরূপ মিশ্রিত অবস্থা প্রাপ্ত হয় এবং তাহাতে উপাদান সকল এমত বিভিন্ন হইয়া পড়ে যে উদ্ভিদ সকল তাহাদিগকে অনায়াসে গ্রহণ করিতে পারে। র্টিরজন মৃতিকার উপর পড়িলে ইছার কার্ব্যণিক এসিড সংযোগে মৃত্তিকার উপা-দান দিগের যোগ বিচ্ছেদ হইয়া যায় এবং উত্তাপ ও বায়ু সহকারে উক্তরূপ যোগ বিচ্ছেদ ক্রিয়া নির্বাহ হইরা शांक। कान ऋल मुख्कि। রाশি একত্র করিয়া রাখিলে তাহাতে জল বায়ু ও উত্তাপ লাগিয়া অত্যা এবং বিশেষ উর্বর। হইর। উঠে। যেমন স্বীভকা নির্মিত গৃহের প্রাচীর বহুকালে বায়ু ও উত্তাপ সংলগ্ন ছও-শীত্র তাহা গলিয়া যায়, ক্লযকেরা এ সকল মৃত্তিকা ক্ষেত্রে ব্যবহার করিয়া থাকে এবং ইষ্টক নির্মিত প্রাচী-

রের নিম্নভাগের ইফক সকল কার্কনিক এসিডসংযোগে কখন২ গুড়া হইয়া খদিয়া পড়িতে থাকেএবং মৃত্তিকা নিৰ্দিত প্রাচীরের নিম্নভাগেও কখন কখন ও প্রকারে মৃত্তিকা খদিয়া যাইতে দেখা যায়। পর্বতের উপরিভাগে র্ফির জল পড়িলে ও क्रमभंड वांग्ल मश्नद्यं इंख्याटि थे जन ও वांग्लूद्र कार्व्यानिक এসিড সহকারে প্রস্তর সকল স্তরে স্তরে কুদ্র২ অংশ হইয়া খিসিয়া প্রে। সেই সকল অংশ র্ফির জলের সহিত মিলিত হইয়া নিম্নভাগে আসিয়া উপস্থিত হইলে মৃত্তিকারপে পরিণত হয়। এইরপে পর্বতের উপরিভাগ ক্রমশঃ খসিয়া পড়াতে কোন কোন পর্বতের উপরিভাগে রহৎ গহ্বর উৎপন্ন হয়। অনন্তর উৎপন্ন নুতন মৃত্তিকার উপরিভাগে শৈবলাদি উৎপন্ন হইয়া যখন মরিয়া যায় তৎকালে ইহা-দিগের কার্বণ মৃত্তিকার সহিত মিশ্রিত হইলে ঐ মৃত্তি-কায় অন্যান্য উদ্ভিদ স্মচাক্রপে উৎপন্ন হইতে থাকে। কখন কখন এ নব মৃত্তিকার কিয়দংশ র্ফির জলের সহিত ধৌত হইয়া প্রান্তরে আসিয়া উপস্থিত হইলে ইহাদিগের উপাদান সংযোগে দেই স্থানের মৃত্তিকা উর্বরা শক্তি প্রাপ্ত হয় 1

এই প্রকারে মৃতিকার উপরে র্ফিপাত হইলে ইহার উপরিভাগের যে সকল অংশ বায়ু ও উত্তাপ সংলগ্ন হও-য়াতে আল্গা হইরা ধূলার ন্যায় হইয়াছিল। তাহা একণে জলের সহিত মিশ্রিত হইয়া স্থানে স্থানে বিত্তীর্ণ হইয়া পড়ে। পরে ইহার কতক অংশ যে স্থলে আসিয়া সঞ্চয় হয় সেই ভূমি অপোকায়ত শস্যশালিনী কল

এবং ইহার অবশিষ্ট ভাগ মৃত্তিকার ভিতর প্রবেশ করে। এইরপে অম্বাদ্দশীয় আমের উপরিভাগ ধৌত হইয়া ধানা ক্ষেত্রে আসিয়া উপস্থিত হয়। এবং তদ্ধারা ঐ ক্ষেত্র স্বাভাবিকী উর্বরা শক্তি প্রাপ্ত হয় ও তথায় অন্য কোন উপায় করিবার আবশ্যক থাকে না। মৃত্তিকায় জল পড়িলে প্রথমে কাদার ন্যায় হইয়া উঠে পরে ইহার যে সকল অংশের যোগ বিচ্ছেদ হইয়াছে সেই সকল অংশ জলের সহিত মিশ্রিত হইয়া জল ঘোলা হইয়া যায়। এবং অবশিষ্ট অংশ কাদা হইয়া পড়িয়া থাকে। এই কারণ বর্ষাকালে অম্ব-(मानीश निनेत जल शिला इश। श्रत निनेत जल श সকল ভূমি প্লাবিত হয়; এ সকল ভূমিতে নদীর জলের পালি পড়াতে বিশেষ উর্বর। হইয়া উচে। নদীর জলের পলি কোন স্থানে ক্রমশ আপিয়া সঞ্চিত হইলে চর উৎপন্ন হয়। ঐ চরের মৃত্তিকা এরূপ উর্বর। হয় যে তথায় অক্ষটাবস্থাতেই অনেক উদ্ভিদাদি স্বভাবিক উৎপন্ন হইয়া থাকে। পরে তথায় যে কোন উদ্ভিদ রোপণকরা যাইবে তাহা স্মচারু রূপে উৎপন্ন হইতে পারিবে পুফর্ণির পঙ্ক এইরূপ মৃত্তিকা এই জন্য ইহার मः (योश द्रक्तानि द्रिक्तिनील इहेग्रा थोरक। एय श्रक्ति उट कालाविधि পलि मिक्षिङ इहेशा পরিপূর্ণ इहेश इ यिन मिहे পুদ্ধরি পক্ষ কার্টিয়া কোন উদ্যানে বিভীন করিয়া দেওয়া यात्रः; তবে ঐ উদ্যানের উৎপাদিকা শক্তি রিদ্ধি হইয়া উঠে। উত্যানের উপরি ভাগ হইতে বর্ষার জলে পলি ধেতি হইয়া পাগারের ভিতর ক্রমশঃ সঞ্চিত হইয়া থাকে। এই জন্য প্রতি वरमङ भगोद्रित मृखिका को छित्रा छेनाद्र फिलिटन के छेना-

নের মৃত্তিকা তেজস্বর হয়। এই কারণে উন্নত স্থান অপেকা নিম্ন ভূমি সকল অপেকান্ধত তেজস্বর হয়।

পরে পলির যে অংশ মৃত্তিকার ভিতর যাইয়া প্রবেশ করে; তাহা মৃত্তিকার সকল স্তর আক্ষণ করিয়া লয় যেমন কয়লাতে জল মিশ্রিত কোন রঙ্গ পতিত হইলে কয়লা ले तक आंकर्षन करिया नय अन्य किया वक लोड़ा-ইলে যে ছিদ্র বিশিষ্ট কয়লা উৎপত্তি হয়; তাহার যেমন রঙ্গ আকর্ষণ শক্তি অন্য কয়লা অপেক্ষা অধিক হইয়া থাকে; সেই রূপ উর্বরা মৃত্তিকা অন্য মৃত্তিকা অপেক্ষা অধিক পলি গ্রহণ করিয়া থাকে। কয়লার রঙ্গ আকর্ষণ শক্তি যে রূপ खलत लग् जाकर्गिकि मिरे थकात। काम लग् जल গুলিলে ইহার রসায়নিক গুণ কিছুই পরিবর্ত্তন হয় না। কয়লা कान बद्ध जाकर्ग कदिल, भे ब्रह्मद्र अन मकन ममजारि शास्क। यि कश्रनात्र जाकर्यभगे कि कल जरभक्का जिथक इशः তবে জল হইতে কয়লা সমূদয় রঙ্গ টানিয়া লয়। কিন্তু উভ-(য়র শক্তি তুলা হইলে ঐ রঙ্গ ছুয়ের মধ্যে বিভাগ হইয়া পড়ে। যে রঙ্গ কয়লার দ্বারা আকর্ষণ করা হয়, তাহার রসা-য়নিক গুণ কিছুই পরিবর্ত্তন হয় না; কেবল ইহা আর জল जावा इहेट भारत ना। किन्छ कोन वञ्च मश्यार्थ जल्ब আকর্ষণশক্তি রদ্ধি করিলে কয়লার দ্বারা যে রন্ধ আকর্ষণ क्रवा इहेशार्छ; जाङा र्थ जल मगूम्य दोनिया लहेर भारत। य जन इरेट कशना तक आकर्यन कतिशाद्धः मिरे जल यिन কোন এলকেলাই বা খার দ্রব্য মিশ্রিত করা যায়; তবে क्यला इहेट जल म्यूम्य दक्ष देविया लय।

উর্বান দৃত্তিকা কয়লার সদৃশ। কোন সার এবা, যেমন গোবর কিম্বা অন্য কোন বস্তু; জলে গুলিয়া যদি এ মৃত্তিকার উপর ঢালিয়া দেওয়া যায়; তবে ইহা রজও গদ্ধ বিহীন হইয়া তলভাগে পতিত হয়। ইহার রজও গদ্ধ ও এমোনিয়া ও পোটাশ এবং ফশফরিক এসিড এ মৃত্তিকা টানিয়া লয়।

কয়লার আদৎ অবস্থায় যে রপ আকর্ষণশক্তি থাকে,
ইহাকে ওঁড়া করিলে সেই রপ শক্তি আর থাকে না। যে
প্রস্তারের যোগ বিচ্ছেদ হইয়া উর্বরণ মৃত্তিকা উৎপতি হয়;
যদি সেই প্রস্তার ওঁড়া করা যায়; তবে তাহার আকর্ষণশক্তি
কয়লার ওঁড়ার সদৃশ অতি অপ্প হইবে। যদি সেই প্রস্তার
ওঁড়ারে সদৃশ অতি অপ্প হইবে। যদি সেই প্রস্তার
ওঁড়ারে সদৃশ অতি অপ্প হবিব। যদি সেই প্রস্তার
ভালিয়া দেওয়া যায়, তবে প্রস্তারের ওঁড়ার সিলিকেট অফ
পোটাশ সোডাও অন্য অন্য উপাদান ঐ জল টানিয়া
লইবে। কিন্ত জল হইতে উক্ত উপাদান সকল প্রস্তার ওঁড়া
কখনই আকর্ষণ করিতে পারে না।

মৃত্তিকার উপাদানের যোগও ইছার পোটাশ এমোনিয়া ও ফশফরিক এদিড আকর্ষণশক্তি এই ছয়ের বিশেব কোন সংযোগ দেখিতে পাওয়া যায় না। যে মৃত্তিকায় এটেলের ভাগ অধিক আছে, তাছাতে কিঞ্চিৎ চুন শিশুত করিলে যে পরিমাণে ইছার আকর্ষ ণশক্তি রন্ধি ছাতে কিঞ্চিৎ দেই বিশিষ্ট এটেল মৃত্তিকায় চুণের ভাগ অধিক আছে, তাছাতে এটেল মৃত্তিকা কিঞ্চিৎ সংযোগ করিলে দেই রূপ আকর্ষণশক্তি ছইবে। কিন্তু উক্ত মৃত্তিকাদ্বের মধ্যে উদ্ভিদসার থাকিলে এই আকর্ষণশক্তি পরিবর্ত্তন ছইয়া যাইবে। আর বিশেষ রূপ নিরূপণ করিলে এই

দেখিতে পাওয়া যায়, যে মৃত্তিকার অত্যন্ত কঠিন ও আল্গা গুণানুসারে এই আকর্য গশক্তি বিভিন্ন হইয়া থাকে। কঠিন এটেল ও অত্যন্ত আলগা মৃত্তিকার আকর্ষ গশক্তি অতি অপ্শ আছে। মৃত্তিকার আকর্ষণশক্তি অংশ ইহার সকল উপাদানে অবশ্য থাকিতে পারে।

যে প্রস্তর গুড়া হইয়া উর্বরণ মৃত্তিকা হইয়াছে; সেই প্রস্তর ঐ উর্বরণ মৃত্তিকার সম্বন্ধে যে রূপ কার্চ কার্চপচা সারের পক্ষে তর্জ্ঞপা

य मकल कांत्रर्भ जल्ला नहमरत्त्र मर्था कार्छ পচিत्र। সার উৎপত্তি হয়, সেই সকল কারণ যদি প্রস্তরের উপর নিকেপ করাহয়; তবে বহু বৎসরে এ প্রস্তর গুঁড়া হইয়া ननी ११एडं अकछत डेर्स्त्र। मृजिका डेर्शिक कतिर्व। अनर চারাদিগের পুর্ন্টির জন্য ইহার রাদায়নিক ও স্বাভাবিক গুণ উপযুক্ত পরিমাণে থাকিবে। করাতের ওঁড়া যে পরিমাণে কার্চ পদা দারের গুণ ধারণ করে, প্রস্তারের ওঁড়াতে সেই পরি-मार्ग डेका त। मुखिकात छन मकिन जारह। कांत्रन कतार्डत ওঁড়া পচিয়া সার উৎপত্তি হয়। এবং প্রস্তর ওঁড়া হইয়া উর্বরা মৃত্তিকা উৎপত্তি হয়, নানাবিধ প্রস্তর ওঁড়া হইয়া যে উর্বানা মৃত্তিকা হইয়াছে; তাহাও জলদাব্য উপধাতু-দিগকে আকর্ষণ করিতে যে রূপ সক্ষম যে কাষ্ঠ পচিয়া সার রূপে পরিণত হইয়াছে, তাহার উদ্ভিদ সার বস্তু-দিগকে ধারণ করিবার শক্তি তজপ। ইহা কথিত হইয়াছে य कार्यमि जिक পारी किया अस्मिनियात जल इहेर्ड অথবা কার্যণিক এসিড মিশ্রিত ফশফেট অফ লাইমের জল

উর্বেরা মৃত্তিকা পোটাশ এমোনিয়া ও ফশফরিক এসিড টানিয়া লয়। এবং তাহাতেও এ মৃত্তিকার উপাদানের কোন রসায়নিক পরিবর্ত্তন হয় না। এই বিষয়ে কয়লা অপেক্ষা উর্বরা মৃত্তিকার গুণ অতি প্রবল কারণ; ইহা পোটাশ এমো-নিয়া ইত্যাদি সকল বস্তুর যোগ বিচ্ছেদ করিয়া গ্রহণ করে অन्धि कराला ও উर्का मृ जिका এই इहे जूला अन्धि कराला उ कर्भारक हे मकल थोकोर्ड य मकल वख्न योश विष्ठ्रिन करत्र, ফশফেট বিহীন উদ্ভিদ কয়লার দ্বারা সেই কার্য্য কখন নির্বাহ হইতে পারে না। উর্বরা মৃতিকায় চুণ ও ম্যাগ-নিসিয়া থাকাতে ইহার আকর্ষণ শক্তির কিছু অংশ অবশা রদ্ধি হইতে পারে। আমরা অনুমান করিতে পারি যে, মৃত্তিকার প্রমাণুর আকর্ষণশক্তি এমত প্রবল নহে যে, নাইটেট অফ পোটাশের যোগ বিচ্ছেদ করিয়া নাইট্রিক এসিড হইতে পোটাশ সংগ্রহ করে। কিন্ত हेशां नाहम अ मार्गानिमा थाकां मारे हिंदे अक (भोडोर्गंद्र योगं विष्कृत कार्या अनाग्नारम इहेर्ड भारत। এक मिरक मुखिका পোটाশকে টানিয়া লয়; जना मिरक हुन मार्गार्गिया नारे कि अमिएक आकर्षण करत। किछ अरे কার্য্য কেবল একাকী মৃত্তিকার দ্বারা কথনই হউতে পারেনা।

উর্বার মৃত্তিকার দ্বারা কোন বস্তুর যোগ বিচ্ছেদ হইয়া থাকে; এবং রাসায়নিকও অন্য অন্য উপায় দ্বারা সেই স্তুরব যোগ বিচ্ছেদ হয়। কিন্তু এই হুই প্রকারের মধ্যে বিভিন্ন এই মাত্র দেখিতে পাওয়া যায় যে, দ্বাব্য বিহিন চুনের দ্বারা দ্বাব্য পোটাশের যোগ বিচ্ছেদ এমত প্রকারে নির্বাহ হয় যে তাহাতে পোটাশ জাব্য বিহীন ও চুন জাব্য হইয়া যায় ইহাতে অনুমান হইতেছে যে আর কোন আকর্ষণীশক্তি ইহার ভিতর থাকিতে পারে তদ্বারা এ রূপ পরিবর্তন হইয়া যায় যদি এক চোন্ধা মৃত্তিকা পরিপুরিত করিয়া তাহার উপর জল ও কার্বণিক এসিড মিশ্রিত কশফেট অফ লাইম ঢালিয়া দিলে এ মৃত্তিকার উপরি ভাগের শুর প্রথমতঃ এ জল মিশ্রিত ফশফেট অফ লাইম হইতে ফশফরিক এসিড টানিয়া লইবে পরে ঐ জল দ্বিতীয় স্তরে যাইয়া উপস্থিত হইলে তথায় কিঞ্চিৎ অংশ ফশফরিক এসিড সঞ্চিত হইয়া থাকে এই রূপ নিমুস্থ স্তার যত যাইতে থাকিবে ততই ফশফরিক এসিড বিস্তার্ণ হইয়া মৃত্তিকার এক এক প্রমাণুতে সমভাগো मिश्रिक इहेशा शांकित यिन कर्नाकि जिक लाहेम तक्तर्न " হইত ও মৃত্তিকা স্বচ্ছ হইত তবে সমুদয় মৃত্তিকা রক্তবর্ণ দেখাইত এই প্রকারে যদি কার্ব্যণেট অফ পোটাশ জলে গুলিয়া মৃত্তিকা পূরিত চোন্ধার উপর ঢালিয়া দেওয়া যায় তবে উক্ত প্রকারে ইহার পোটাশ মৃত্তিকা মধ্যে বিস্তীর্ণ হইয়া যায় এবং নিম্ন শুরে পোটাশের ভাগা অধিক সঞ্চয় হইয়া থাকে।

উদ্তিদদিগের ভক্ষা দ্রব্য সকল উক্ত প্রকার মিশ্রিত অব-স্থায় থাকিলে শিকড় মৃত্তিকার যে স্থলে যাইয়া সংলগ্ন হইবে তথা হইতে ভক্ষা দ্রব্য সকল অতি সহজে গ্রহণ করিতে পারিবে ইহারা জল দ্রাব্য অবস্থায় যে ক্লপে গ্রহণ উপ-যোগী এই অবস্থাতে ও সেই রূপ হইয়া থাকে।

উর্বাণ ও অনুর্বরা মৃত্তিকাতে এই ভেদ দেখিতে পাই

যে উর্বর। ভূমিতে ভক্ষা দ্রব্য সকল এমত আলগা ভাবে থাকে যে উদ্ভিদ সকল তাহা অনায়াসে গ্রহণ করিতে পারে কিন্তু অনুর্বর। ভূমিতে পোটাশ শিলিশিক এসিড শিলিকেটিদিগের ভিতর এমত দৃঢ়হ বন্ধ থাকে যে শিকড় সকল সেই যোগ কোনক্রমে ভঙ্গ করিতে পারে না এই জন্য মৃত্তিকা খনন করিয়া রাখিলে শ্লতু প্রভাবে উপধাতুদিগের যোগ বিচ্ছেদ হইয়া স্থানে স্থান সমান রূপে বিস্তীর্ণ হইয়া পড়ে।

যে ভূমিতে কোন কালে কোন উদ্ভিদ উৎপন্ন হয় না সেই স্থান কালেতে পরিবত্তন হইয়া ক্লফি কার্যোর উপযোগী হইয়া উঠে কিন্তু ঐ ভক্ষ্য স্তব্যের যোগ বিক্ষেদ হইবার যে রূপ আপত্তি হইবে সেই অনুযায়ী উক্ত রূপ পরিবর্তন হই-বার বিলম্ব হইবে।

ভূমি যত কর্ষণ করা হইবে, ততই ইহার পুরিকর দ্রবা সকল রাসায়নিক যোগ হইতে পরিবর্তন হইরা মিশ্রিত অবস্থা প্রাপ্ত হইবে। এবং উদ্ভিদ সকল তাহাতে রিদ্ধি প্রাপ্ত হইতে পারিবে, ভূমি শসাশালিনী করিতে হইলে, ইহার যে অংশে শিক্ড সকল আসিয়া সংলগ্ন হইবে, তথায় কিঞ্চিৎ মাত্র ভক্ষা দ্রব্য অবশ্য থাকিবে। মিশ্রিত অবস্থায় পুর্ফিকর দ্রব্য সকল যত পরিমাণে মৃত্তিকার থাকিবে। তদাসুযায়ী ইহার উৎপাদিকা শক্তি হইবে যখন পুর্কিত্র দ্রব্য সকল ক্রমশঃ রোপিত চারার দ্বারা আকর্ষণ করিয়া লওয়া হয়; তথন অন্য অন্য উপাদান সকল রসায়নিক যোগে মৃতিকায় বিস্তৃত না থাকিলে, পূর্বকার মিশ্রিত অবস্থা কথনই পুন

যে সকল রক্ষের শিকড় মৃতিকায় অতি নিম্ন স্তর অবধি গমন করিয়া থাকে, তাহাদিগের দারা মৃত্তিকার উপরিভা-গের উৎপাদিকা শক্তি কিছুই হীনতা হয় না। কিন্তু তথায় শमानित्र ठांत्रा (तार्शन कतित्न, इहे ठांति व शत्त्रत मर्शा ইহার উর্বেরা শক্তি আর কিছুই থাকে না কিন্তু কিয়ৎ ভূমির ঐ রূপ উর্বর। শক্তির হীনত। কখনই চিরস্থারী থাকে না। যে চারার শিক্ড নিম্ন তার অবধি গমনকরে শা, তাহার পক्ष्म क्षेत्र क्षित्र कथन छेथाराशी नरह, कार्र नाहरू हिए जन বিশিষ্ট যে ভক্ষা দ্রব্য তাহা ক্রমশঃ ঐ মৃত্তিকায় অভাব হওয়াতে ইহার উর্বার শক্তি আর কিছুই থাকে না। কোন ক্ষেত্রে এক জাতি চারা ক্রমশঃ রোপণ করিলে সেই জাতি চারার যে প্রধান ভক্ষ্য দুব্য, তাহার অভাব হইয়া পড়ে। এই জন্য ভজ্জাতীয় চারার পক্ষে দেই ভূমির উর্বরা শক্তি আর কিছুই থাকে না, যেমন কোন কোত্রে ফশফরিক এসিড অভাব হইলে, এ দুব্য যে চারা অধিক পরিমাণে গ্রহণ করিয়া থাকে, তাহাদিগের পক্ষে ও ভূমি কখন উর্বরা গুণ প্রকাশ করিবে না। যে ভূমিতে পোটাশের ভাগ কিছু মাত্র मां शांक, यनि छारा छ जना छे भानान প्राकृत भित्रमान থাকে, তথাপি তাহাতে পোটাশ ভক্ষক চারা সকল কখনই উৎপত্তি হইতে পারিবে না।

মৃতিকা মিশ্রিত ফশফেট সকল, জল এবং কার্বণিক এসিড সংযোগে যে প্রকারে মৃতিকায় বিস্তীর্ণ হইয়া পড়ে তদ্বিরণ আমরা পূর্বে প্রকাশ করিয়াছি এক্ণণে ক্লোরাইড অব্ সোডিয়াম অর্থাৎ লবণ। নাইফেন্ট অব্ সোডা এবং এমোনিয়া ইতাদি সংযোগে লাইম ও ফসফেট সকল যে প্রকারে বিস্তার্ণ হইয়া পড়ে তদ্বিরণ প্রকাশ করিতেছি কার্বনিক এশিড জলের সহিত মিশ্রত হইয়া মৃত্তিকার ভিতর ফশফেট দিগকে দ্রবীভূত করিয়া স্থানে স্থানে বিস্তর্গ করিয়া থাকে আর কতিপয় বস্তু আছে যাহাদিগের দ্বারা ঐ রূপ কার্যা নির্বাহ হইয়া থাকে যেমন লবম মাইট্রেট অফ সোডা এবং এমোনিয়া কিন্তু লবন ও নাইট্রেট অব সোডা এই বিষয়ে যে রূপ কার্য্য কার্রি এমোনিয়া সেই রূপ শক্তিধারণ করে না কারন ইহা মৃত্তিকার ভিতর প্রকেশ করিবা মাত্র মৃত্তিকার প্রথমস্তর ইহাকে আর্কশণ করিয়া লয় এবং তাহাতে সেই স্থানে অতিশয় তেজক্ষর হয় এবং নিম্নন্থরে কিছুমাত্র যাইতে পারেনা কিন্তু অপর ত্লই বস্তুরকার্য্য নিম্ন স্তর্যাব্রি যাইয়া থাকে।

मृजिका शतीका कतिवांत शृख जाएगाजन।

মৃত্তিকার যোগ বিচ্ছেদ করিতে প্রবৃত্ত ছইবার পূর্বের যে সকল যন্ত্র ও বস্তু সংযোগে যোগ ভঙ্গ করিতে হয়, তদ্বিরণ অত্যে প্রকাশ করিয়া পরে অন্যান্য বিষয় লিখিতে আরম্ভ করিব। প্রথমতঃ, মৃত্তিকা ও ডাইয়া প্রস্তুত করিবার জন্য এক খানি খল আবশ্যক করে। ইহার দ্বারা মৃত্তিকাকৈ চূর্ণ করিয়া ধূলার ন্যায় করিতে হয়, দ্বিতীয়তঃ, নিক্তি অতি সূক্ষয়পে মৃত্তিকাকে ওজন করিবার জন্য আবশ্যক করে। ইহাতে টাকা ফেলিয়া ওজন করিতে হইবে তৃতীয়তঃ, ধৌত করিবার পাত্র কাঁচের গ্রাম হইলে অতি উত্তম হইতে পারে। চতুর্থ

ছাকিবার যন্ত্র, বোতলে তৈল পুরিবার জন্য যে চুলি ব্যবহার হইয়া থাকে, তাহার সদৃশ এক কাচ চুলি প্রস্তুত করিতে হইবে। পরে ছাকনি নামে এক প্রকার কাগচ আছে, তাহা এ চুলির উপর বসাইয়া জল ছাকিতে হইবে। পরে লোহ নির্মিত হই তিনটি আংটা আবশ্যক করে। ইহাদিগের নিম্নভাগে তিনটি পায়া থাকিবে। পঞ্চম, মৃত্তিকা শুক্ত করিবার জন্য ছয়খানি চিনে সানকি আবশ্যক করে। এক-খানি সানকির উপর ভিজা মৃত্তিকা উক্ত আংটার উপর বসাইবে; এবং ইহার তলভাগে প্রদীপের উক্তাপে দিলে মৃত্তিকা শুক্ত হইয়া যাইবে। কিয়া এক লোহ নির্মিত বাটির ভিতর বালিতে পরিপূর্ণ করিয়া অগ্রর উক্তাপে উক্তাপিত করিবে। পরে ঐ মৃত্তিকা শুক্ত সানকি উহার উপর বসাইয়া রাখিলে মৃত্তিকা শুক্ত হইয়া যাইবে।

মৃত্তিকা জলে ফেলিয়া ও ছাকিয়া লইবার পর ইহার জন্য ১২টি কাচ নির্মিত অর্দ্ধ হস্ত পরিমাণ নল আবশ্যক করে। ইহাদিগকে এক খানি তক্তায় ছিদ্র করিয়া সাজাইয়া রাখিবে।

মৃতিকা গোলা জলে কোন অমু রস কিবা কোন খার দ্রব্য আছে কি না, নিরপণ করিতে হইলে মুই প্রকার কাগচ আবশ্যক করে। প্রথমতঃ, লিটমশ কাগচ, দ্বিতীয় টরমরিক। এই মুই কাগচ যে প্রকারে প্রস্তুত করিয়া বাজারে বিক্রেয় করে; তাহা এই স্থলে লিখিবার আবশ্যক করে না, একখানি কাগচে জবাফুল ঘসিলে ইহা নীলবর্ণ হইবে; এবং ইহাতে অমু রস লাগিলে লালবর্ণ হইবে এই কাগচকে লিটমশ কহে আর একথানি কাগচে হরিদ্রা লেপণ করিয়া রাখিলে কোন অমু নাশক দ্রের্য (যেমন চুন) ইহাতে লাগিলে লালবর্ণ হইবে; এই কাগচকে টরমরিক কহে।

মৃত্তিকা পোড়াইবার জন্য মূচি আবশ্যক করে। প্রাটনম ধাতু নির্মিত মুচি অতি উৎক্লফট; কিন্তু ইহা প্রস্তুত করিতে অধিক ব্যয় হইতে পারে; এই জন্য চিনে কাচের বাটিতে উক্ত কার্য্য নির্ম্বাহ করিবে। মৃত্তিকাকে অন্য প্রকারে,পোড়া-ইতে হইলে, তামু নির্মিত এক বক্র চুলি আবশ্যক করে। স্থবর্ণ কার যে প্রকারে সোণারূপা এক খানি কয়লার উপর রাখিয়া পোড়াইয়া থাকে; সেই প্রকারের এই চুলির দ্বারা মৃত্তিকাকে পোড়াইতে হইবে। প্রাটনম ধাতুর তার যৎকিঞ্চিৎ আব-শ্যক করে। মৃত্তিকা গোলা জল ছাঁকা হইলে, ইহার এক কোঁটা ঐ তারে লাগাইয়া প্রদিপের শিখায় পোড়াইলে যদি কিছু অবশিক্ত থাকে, তবে ঐ জল উত্তম রূপে ছাঁকা হয় নাই বোধ হইবে।

এই জগতের উপাদান সকল হুই শ্রেণিতে বিভক্ত হইরাছে, প্রথমতঃ, অমু বস্তু; (ইংরাজি ভাষায় ইহাকে এসিড
কহে) দ্বিতীয় অমুনাশক দ্রব্য (ইহাকে ইংরাজি ভাষায় এলকেলাই কহে) এই বায়ুর উপাদান অকশিজন বাছু যে বস্তুর
সহিত মিশ্রিত হইবে, তাহাতে এক প্রকার অমু উৎপত্তি
হইবে। যেমন গন্ধকের সহিত মিশ্রিত হইরা দ্রানক উৎপত্তি
হইরাছে, কিন্তু অমুনাশক দ্রব্য সংযোগে ইহার অমুতা আর
কিছুই থাকে না; এই হুই প্রকার পদার্থ মধ্যে এক বস্তু অপর
আর এক বস্তুর সহিত এমত রসায়নিক সহদ্ধে আবদ্ধ আছে

যে উভয়ের সংস্পর্শ হইলে মিলিত হইয়া আর এক পদার্থ
উৎপন্ন হয়। যেমন মৃত্তিকার ভিতর দ্রাবক আছে,
ইহাকে জলে গুলিরা যদি ইহাতে বারিটা মিলিত কর্ম
যায়; তবে দ্রাবক বারিটার সহিত মিলিত হইয়া আর
এক পদার্থ হইবে। ইহাকে ছাঁকিলে মৃত্তিকার জল হইতে
বাহির হইয়া আদিবে। এই রূপ যে বস্তুর সহিত যাহার
সম্ম আছে, তাহার সংযোগে ইহার অপর বস্তুর যোগ
হইতে বিচ্ছেদ হইয়া অন্য প্রকারে পরিণত হইয়া বাহির
হইবে। অতএব বস্তু সকলের এই সহম্ম কোন্ বস্তুর সহিত
আছে ও তাহারা কি প্রকার বস্তু এই সকল বিষয় আমরণ
বিশেষ রূপে প্রকাশ করিব।

मालकि छेतिक श्री मावक।

ইহা আংগ্রাণিরি প্রদেশে লমেক প্রকার জলের ভিতর থাকে ইহার সহিত জন্য বস্তু সংযোগ হইলে তাহাকে সলফেট্কহে যেমন সলফেট্ অফ্লাইন অর্থাৎ চুনের সহিত সলফিউরিক এসিড মিশ্রিত হইরা উক্ত বস্তু হইরাছে। সলফেট্ অব পোটাশ অর্থাৎ ক্রাবক এবং পোটাশ; সলফেট অব সোডা অর্থাৎ মোডা এবং ক্রাবক এই তিন প্রকারে সলফেট সকল রক্ষনিগের ভিতর থাকে। সলফেট তাব্য অবস্থার জলের ভিতর থাকিলে তাহাকে জানিবার জন্য ক্রোরাইড অফ বেরিরম জলে ওলিরা তাহাতে দিলে পালি রূপে পরিণত হইরা তলভাগে পতিত হইবে। এই পালি ভারি খেত বর্ণ ইহাকে সলফেট অফ ব্যারিটা কহে। যদি

ইহাকে কয়লার সহিত পোড়ান যায় তবে ইহার যোগ ভঙ্গ হইয়া সলফিউরেট অবস্থা প্রাপ্ত হয়, তাহাতে যদি হাইডুকুোরিক এসিড দেওয়া যায়, তবে হাইড্রোসলফিউরিক এসিড উৎপন্ন হইবে। এই বস্তর ডিম্ব পচা গদ্ধের দ্বারা জানা যায়। কোন কাগচ এশিটেট অফ লেডের জলে ভিজাইয়া উক্ত বস্তু তাহাতে লেপন করিলে কালি বর্ণ হইবে।

কোন যোগিক পদার্থে গন্ধক আছে কিনা নিরপণ করিতে হইলে ঐ বন্ত ওঁড়া করিয়া কান্টিক পোটাশ এবং জলের সহিত সিদ্ধ করিতে হইবে পরে ছাকিয়া ইহাতে একটি টাকা ফেলিয়া দিলে যদি ইহাতে গন্ধক থাকে তবে ঐ টাকা ক্ষাবর্ণ হইবে।

गाइ ऐक धनिए।

নাইট্রেজন হুই ভাগ ওপঞ্চাগ অক্সিজন মিলিত হইয়া এই বস্তুর উৎপত্তি হয় ইহার অন্য বস্তুর সহিত যোগ হইলে তাহাকে নাইট্রেট কছে; যেমন পোটাশ ও নাইট্রিক এসিড মিলিত হইয়া নাইট্রেট অব পোটাশ বা সোরা হইয়াছে, মাগনেশিয়ার যোগে নাইট্রেট অব ম্যাগনেশিয়া হইয়াছে, এবং চুনের ও সোডার যোগে নাইট্রেট অব লাইম ও নাইট্রেট অব সোডা হইয়াছে। এই চারি প্রকার অবস্থায় এই এসিড মৃত্তিকার ভিতর থাকে কিন্তু নাইট্রেট অব পোটাশ ও নাইট্রেট অব লাইম এই ছই অবস্থায় ইহা রক্ষের ভিতরে শাকে। ইহাতে ফেলিলে সকল বস্তু গলিয়া যায় কিন্তু

বিনকজাইড অব টিন এবং অকজাইড অব টিন ইহাতে দ্রব হয় না যদি তিন গুণ হাইডুক্লোরিক এসিড ও এক গুণ নাইট্রিক এসিড মিলিত করা যায় তবে তাহাতে সোণার পাত ফেলিবামাত্র গলিয়া যায়। জল মিল্রিত নাইট্রিক এসিড এক ফোটা ইম্পাতের উপর লাগাইলে সেই স্থান ক্ষম্বর্ণ হইবে, কিন্তু লোহার উপর পড়িলে এক রূপ পাটল বর্ণ হইবে।

যদি কোন জনীয় বস্তুতে নাইট্রিক এসিড থাকে তবে তাহাকে নিরপণ করিতে হইলে প্রথমতঃ ইহাকে শুষ্ক করিয়া ইহাতে সলফিউরিক এসিড ও জল মিশ্রিত সলফিউরেট অব আইরণ মিশ্রিত করিয়া দিলে নাইট্রিক এসিডের পরিমাণানুসারে ইহার বর্ণ অধিক কিন্ধা অপা রংড়াটিরা হইবে।

श्रेषुक्षातिक अभिष्ठ।

ইহা আগ্নেয় গিরি প্রদেশে এমোনিয়ার সহিত মৃত্তিকার ভিতর থাকে; ইহা জন্ত দেহে পাকস্থলির ভিতর যে রস আছে তাহার এক প্রধান উপাদান। ইহার সংযোগে যে যেগিক পদার্থ হয় তাহাকে ক্লোরাইড কহে, যেমন রূপার সংযোগে ক্লোরাইড অব সিল্বর হইয়াছে। যদি ইহা কোন বস্তুতে থাকে তবে তাহাতে নাইট্টে অব সিলবর অর্থাৎ কাফকির জল দিলে এক রূপ পলি বহির্গত হইবে ইহাকে ক্লোরাইড অব সিলবর কহে। ইহা শ্বেত বর্ণ এবং বায়তে বাহির করিয়া রাখিলে কৃষ্ণবর্গ হয় এই দ্রব্য নাইট্রিক এসিডে জাব্য নহে কিন্তু এমোনিয়ার জলে দ্রব হইয়া যায়।

এই এসিডের প্রধান উপাদান ক্লোরিন যদি ইহা কোন বস্তুতে থাকে তবে তাহাকে বাহির করিতে হইলে কোমেট অব্পোটাশ ও বিশুদ্ধ সলকিটরিক এসিড এই জুয়ের সহিত মিশ্রিত করিয়া উত্তাপিত করিলে এক প্রকার क जे। वर्ग गान छे थ स इय़। यनि धरे गान गोड़ करो यात ज्य दक्तनर् धक क्रम ज्यम भागर देशभा क्रीत। इश्टा अप्यामिशा मार्याश कतिल इति जान वा अ इश्त, এवः श्रम ३ इशां कांग अभिष्ठ मश्याभ कतित लोलवर्ग थाछ इरे.न। यनि कान वज्जा किंभा निमा ७ भारा शांक उत्व हेरांक जान अनिया राहेर्जातिक अगिर्ध সহিত মিঞিত করিলে রূপ। পারা ও শিশা পলি রূপে পরিণত হইরা তলভাগে পতিত হইবে, রূপার সহিত मश्रागरिंग द्वित्राहिष्ठे जन मिल्ड इहेर्न। हेहा छ ल जाना गाह किन्छ आभागिता मश्याता छोता इहेशा थाता। শিশার সহিত সংযোগে ক্লোরাইড অব লেড হইবে ইহা आसिनात प्रांता महि किन्छ छाल जि अ । अतिमारिश ভাব্য হইয়া থাকে। পারার সহিত সংযোগে ক্লোরাইড जय भारतकति छे९शंत इत इंडा ज्वान जाना नाइ किन्छ अभिनिया मर्यार्ग क्रम वर्ष था छ इय।

এসিটিক এসিড্।

জন কার্বন চারি ভাগ হাইডুজন তিন ভাগ অক্সিজন
তিন ভাগ এই কয়েক বস্তুর সংযোগে এই এসিড উৎপর
হয়। ইহা একাকি কিম্বা পোটাশ লাইম এবং এমোনিয়ার সংযোগে অনেক রক্ষের ফলের রসে থাকে কিন্তু
মৃত্তিকার সহিত কখনই থাকে না। লেবুর রস তাড়ি ইহারা
সকলি এসিটিক এসিড। ইহাতে অনেক এসিড, তামা, টিন
শিশের সহিত মিশ্রিত হইয়া থাকে, এবং যাহার যে যোগ
ভঙ্গকারি বস্তু তাহার সহিত সংযোগ করিলে ইহারা
বাহির হইয়া আসিবে। যেমন সলফিউরিক এসিড থাকিলে
ব্যারিটা সংযোগে, মিউরিএটিক এসিড থাকিলে নাইট্রেট
অব শিলভর সংযোগে বাহির হইবে।

টারটেরিক এসিড।

ইহা কেবল তেতুল আনারস ও আছুর ইত্যাদি ফলের রসে থাকে; কিন্তু মৃত্তিকার ভিতর থাকে না। চুনের জলের সহিত এই বস্তু সংযোগ করিলে এক প্রকার শ্বেত বর্ণ পলি বহির্গত হয় তাহাকে টারটেট অব লাইম কহে; কিন্তু সলফেট অব লাইমের জলে মিশ্রিত করিলে কথন পলি বহির্গত হইবে না।

অক্জেলিক এসিড্।

ইহা তিনভাগ জল ও হুই ভাগ কার্বন ও তিন ভাগ অক্সিজন যোগে উৎপন্ন হইয়াছে কামরাঙ্গাও আমকল শাকে ঐ অম প্রচুর পরিমাণে থাকে কিন্তু মৃত্তিকার ভিতর থাকে।

ইহা থেত বর্ণ ও সতত দানাবিদ্ধিইয়া থাকে।

ইহার সংযোগে এলুমিনা দ্রব হইয়া যায় এবং ঐ জল
শুক্ষ করিলে হরিদ্রাবর্ণ স্বক্ত মিন্ট এবং কশা এক বস্তু

উৎপন্ন হইবে। ঐ বস্তুর সংযোগে লিট্ম্শ কাগজ লাল
বর্ণ হয়। অগ্নির উত্তাপে ইহা কুলিয়া উঠে এবং ইহার অম

নন্ট হইবা থায় এবং এলুমিনা বহির্গত হইয়া পজে ব্যারিটা
ও ব্রোমিনিয়া বাহির করিতে হইলে ইহার দ্বারা হইতে পারে।

এনোনিয়া।

এমোনিয়া এক প্রকার বায়ুবং পদার্থ, নাইট্রোজন ও হাইডুজন বোগে উংপর হইয়া থাকে। ইহা জল সংযোগে বাবহার বোগা হইয়া থাকে। আগ্রেয় গিরি প্রদেশে দলকেট্ অব্ এমোনিয়া ও মিউরিয়েট্ অব্ এমোনিয়া এই ছই অবস্থায় মৃত্তিকার ভিতর থাকে। উদ্ভিদ কিয়া কোন জন্ত পচিলে ইহার উৎপত্তি হইতে থাকে এবং জন্তুদিগের মৃত্র ও বিষ্ঠার ভিতর ইহা বহু পরিমাণে থাকে। ইহার বাঙ্গালা নাম নিশেদল। ইহার সংযোগে অক্জাইড্ অব্ এলুমিনা, অক্জাইড্ অব্ ক্রামিয়ম্ এবং গরেক্জাইড্ অব্ আইয়ণ এই কয়েক বস্তর পলি বিভিত্ত হয় কিন্তু পোটাশ, চুন, সোডার পলি বহির্গত হয় না।

कार्गनिक अभिष अस्मानियात महिल मश्युक इहेगा औ जना छेर्शन इहेगाएए हेहात मश्याला नात्रिका, दोन- भित्रा, हुन, अनुमिना, क्याभित्रम, পরেকজাইড অব্ আই-রণের পলি বহির্গত হইয়া থাকে।

मलकारेष व्यव (धर्मानियम ।

সাভাবিক ইহা পঢ়া জন্তর দেহ হইতে উৎপন্ন হইয়া পাকে, প্রস্তুত করিতে হইলে হাইড্রো সলফিউরিক এসিড গানেশ এমোনিয়ার জলের ভিতর দিয়া চালনা করিলে উভয়ে মিশ্রিত হইয়া এই দ্রবার উৎপত্তি হইবে, ইহার সংযোগে কোবালট, নিকল, ম্যাঙ্গেনিশ এবং দন্তার পলি বহির্গত হয়, ইহার বর্গ হরিদ্রা ও হরিত মিশ্রিত, তুর্গন্ধ এবং খাইলে ঝাল লাগে। ইহা বায়ুতে থাকিলে অক্সিজন আকর্ষণ করিয়া থাকে এবং ইহার তলভাগে গন্ধক জমা হয়।

ङ्गादा इंड जव् अध्यानियम।

হাইজুলোরিক এদিড এবং এমোনিয়া সংযোগে উৎপন্ন হইরাছে, ইহা লবণ সদৃশ বস্তু, গোবরের ভিতর বহু পরি-মাণে থাকে, ঘুঁটে পোড়াইলে ইহার ধূমেতে উনুনের মৃত্তিকা লবণাক্ত হইরা যায়, ইহা শ্বেত বর্গ, উড়ে যায় এবং প্রদী-পের শিখায় পোড়াইলে দানাবন্ধি হয়, ইহার সংযোগে এলুমিনা, কোমিয়ম, লৌহ, দন্তা, ম্যাঙ্গেমিশ, নিকেল, কোবালট, ফশফেট অব্ এলুমিনা, ফশফেট অব্ আইরণ এই সকল বস্তুর পলি বহির্গত হয়। ক্ষার দ্রব্যের জলে এলু-মিনা থাকিলে ইহার সংযোগে এলুমিনার পলি ইহার এমোনিয়ার সহিত মিশ্রিত হইয়া বাহির হইয়া আদিবে, পরে ইহাকে জলে ধৌত করিয়া শুষ্ক করিলে বিশুদ্ধ এলুমিনা বাহির হইবে।

(भाषामा

সলফিউরিক্ এদিড, নাইট্রিক্ এদিড্ বা সিলিসিক্ এসিডের সহিত সংযুক্ত হইয়া এই ক্ষার দ্রব্য মৃত্তিকার ভিতর বহু পরিমাণে থাকে। জন্তু দেহ অপেক্ষা রক্ষের ভস্মের ভিতর ইহা অধিক থাকে, ইহা খেত বর্ণ। ইহা জলে ওলিলে উত্তাপ উৎপন্ন হয়। পোটাশ মিশ্রিত জল সাবানের ন্যায় বোধ হয়, ঐ জলে এলুমিলা দ্রব হইয়া বায়।

नारेट ए जव (भाषाना।

ইহা মৃত্তিকায় উৎপন্ন হয়, ইহাকে বঙ্গভাষায় সোরা কহে।

क्तारमणे जव् পाणे।

কোমিক এসিড এবং পোটাশ এই হুই সংযোগে এই বস্তুর উৎপত্তি হয়। ইহার ভিতর কোমিয়ম নামক এক রঙ আছে ইহার দারা সংযোগিক বস্তুদিগকৈ বাদত করে এই বস্তু সংযোগে শিশা ও বিশমদের পলি বাহুর্গত হয়।

मलदक्षे अव् (भाषामा

দ্রাবক এবং পোটাশ এই গ্রহ বস্তু সংযুক্ত হইয়া ইহার উৎপত্তি হইয়াছে, ইহার সংযোগে ষ্ট্রোনসিয়ার পলি বহির্গত হইতে পারে আর কোন প্রকার জলের ভিতর যদি শিশার অংশ থাকে তবে ইহার সংযোগে বাহির হইতে পারিবে।

क्टितामाहरामाहेफ जाव (পाछानियम।

ইহার সংযোগে জলের ভিতর লোহের অংশ থাকিলে বাহির হৃইতে পারিবে। এই পলি শ্বেত বর্ণ ও বাতাদে বাহির করিয়া রাখিলে নীল বর্ণ হৃইয়া যায় কিন্তু যদি জলে তামাথাকে তবে ইহার সংযোগে লাল বর্ণ পলি বহির্গত হয়।

माই য়েনাইড অব্পোটাশিয়ম 1

ইহা নিকেল এবং কোবাল্টকে বিভিন্ন করিবার জন্য ব্যবহৃত হইয়া থাকে। যে জলে এই হুই দ্রব্য আছে তাহাতে হাইড্রোক্লোরিক এনিড কিঞ্চিৎ সংযোগ করিবে পরে এই দ্রব্য বহু পরিমাণে ঢালিয়া নিবে, পরে এ জল সিদ্ধ করিয়া হাঁকিবে ও তাহাতে কিঞ্চিৎ সলফিউরিক এনিড ঢালিয়া দিবে। ক্ষণেক কাল পরে যদি ইবং হরিদ্রা বর্ণ পলি বাহির হয় তবে ইহাতে নিকেল আছে নিশ্চয় হইবে; কিন্তু এ জলে কার্বনেট্ থাকিলে ইহা রাংডাটিয়া হরিদা বর্ণ পলি বহির্থত হইবে।

कार्वरगढे खव् (भाषाभा

কার্যনিক এসিড ও পোটাশ সংযুক্ত হইয়া এই দ্রব্য

উৎপন্ন হয়, ইহার সংযোগে সলফেট অব্ ম্যাগনেশিয়া হইতে শ্বেত বর্ণ এক প্রকার পলি বহির্গত হয়।

कार्वरवि अव (माछ।।

কার্বনিক এসিড এবং সোডা এই ছই সংযুক্ত হইয়া এই দ্রব্য উৎপন্ন হয়, ইহার সংযোগে লেহি, ম্যাঙ্গনিস্, নিকেল, কোবাল্ট এই কয়েক দ্রব্যের পলি বহির্গত হয়।

नार्टिष्ठे अव मिल्डत ।

নাইট্রিক এসিড এবং রূপণ সংযুক্ত হইরা এই দ্রব্য হয়,
কোন বস্তুতে ক্লোরিন্ থাকিলে ইহার দ্বারা নিরূপণ হইতে
পারে। যদি জলের ভিতর যৎসামান্য অংশ ক্লোরিন
গাকে, তবে ইহার সংযোগে মেঘের ন্যায় পলি বাহির
ছইবে।

नाइरिष्ठे अव् क्षा

নাইট্রিক্ এসিড্ এবং লেড্ এই হুই বস্তুতে ইহা হইয়া থাকে, যে জলে এই দ্রব্য থাকে তাহাতে ক্ষার পদার্থ সকল, কার্বনেট সকল, সলফিউরিক এসিড কিছা সলফেট সকল ও ফিরোসাইয়েনাইড পোটেশিয়ম সংযোগ করিলে শ্বেত বর্ণ পলি বহির্গত হয়; কোমেট অব পোটাশ এবং আইওডাইড অব পোটাশিয়ম সংযোগে হরিদ্রা বর্ণ পলি বহির্গত হয়। হাইড্রোসলফিউরিক এসিড কিছা হাইড্রোসলফিউরেট সংযোগে কৃষ্ণবর্ণ পলি বাহির হয়।

ক্রোইড অব্ বেরিয়ম।

হণইভুক্লোরিক্ এসিড্ এবং বেরিয়ম্ এই হুই একত্র ছইয়া এই দ্রব্যের উৎপত্তি হইয়াছে, কোন বস্তুর ভিতর সলফিউ-রিক্ এসিড্ থাকিলে ইহার সংযোগে বাছির করা যাইতে পারে।

পরক্ষোরাইড অব্ প্রটোনম্।

প্লাটীনন্ ধাতু ও হাইড্রেলারিক এসিড একত্র হইয়া এই দ্রোর উৎপতি হয়। কোন বস্তুতে পোটাশ থাকিলে ইহার সংযোগে বাহির হইতে পারে। পোটাশ কোন এসিড্ সংযুক্ত জলে থাকিলে ইহার দ্বারা হরিদ্রা বর্ণ পলি বহির্গত হয়।

পরক্রোইড অব্ আইরণ।

লৌহ এবংহাইডুক্লোরিক এসিড একত্রিত হইরা এই

দ্রেরর উৎপত্তি হয়। ইহার সংযোগে ফশফেট অব্ লাইম

বিভিন্ন হইরা পড়ে। প্রথমতঃ ঐ ফশফেট্কে হাইডুক্লোরিক

এসিডের দারা দ্রব করিবে পরে তাহাতে এশিটেট্ অব্
পোটাশের জল সংযুক্ত করিবে পরে তাহাতে দুই চারি
ফোঁটা পরকোরাইড অব্ আইরণ দিলে ফশফেট লোহার

সহিত সংযুক্ত হইয়া পলি রূপে পরিণত হইবে। কিন্তু চুন

ঐ জলের ভিতর থাকিবে। পরে ঐ জলে সলফাইড্ অব্

এমোনিয়ম সংযোগ করিলে ইহার ভিতর লোহের অংশ

ঘাহা থাকিবে তাহা তলভাগে পতিত হইবে। পরে ঐ জলে

অকজেলিক এসিড দিলে যদি তাহার পালি উৎপন্ন হয় তবে চুন তাহার ভিতর আছে নিশ্চয় হইবে।

যদি কোন জলে ফশফরিক এসিড থাকে তবে তাহাতে যৎকিঞ্চিৎ হাইডুক্লোরিক এসিড সংযোগ করিবে পরে তাহাতে ছই চারি ফোটা পরক্লোরাইড অব্ আইরণ মিশ্রিত করিলে অবশেষে তাহাতে এশিটেট্ অব্ সোডা বহু পরিমাণে দিলে আটার ন্যায় শ্বেত বর্ণ পালি বহির্গত হুইবে।

পরক্লোরাইড অব্মার্কর।

হাইডুক্লোরিক এসিড এবং পারা একত্রিত হইয়া এই জব্যের উৎপত্তি হয়। যদি কোন জলে আইয়োডিড্ থাকে তবে ইহার সংযোগে লাল বর্গ এক রূপ পলি বহির্গত হয়।

প্রোটো সলকেট অব আইরণ।

সলফিউরিক এসিড এবং লৌহ এই চুই সংযুক্ত হইয়া উক্ত বস্তুর উৎপত্তি হইয়াছে। কোন বস্তুতে যদি সোণা থাকে তবে তাহাকে জলে ওলিয়া এই বস্তু সংযুক্ত করিলে সোণার পলি বহির্ঘত হইবে।

এশিটেট অব সোডা।

এশিটিক এসিড এবং সোডা একতে মিশ্রিত হইরা এই বস্তুর উৎপত্তি হইরাছে। যদি কোন কিরোসাইরেনাইড্ বস্তু হইতে লৌহ বাহির করিতে হয়। প্রথমতঃ উহাতে কোন প্রকার এসিড এমৎ পরিমাণে মিশ্রিত করিবে যে তাহাতে জায় ও অম নাশক গুণ কিছুই থাকিবে না আর এশিটেট অব্ গোড়া তাহাতে দিলে লৌহ বহির্গত হইবে।

ফশফেট্ অব্লাইম্ ও ফশফেট্ অব্মাণানেশিয়া ছইতে অকজেলেট অব্লাইম্বাহির করিতে হইলে ইছা-দিগকে হাইড্রোক্লোরিক্ এিসিডের জলে গুলিয়া উক্ত বস্তু সংযোগ করিলে চূর্ণের পলি বহির্গত হইবে। ইছাতে পর-ক্লোরাইড্ অব্ আইরণ্ মিশ্রিত করিয়া ফশফরিক্ এসিড্ নিরূপণ করা হইতে পারে।

(প্রাটো নাইটে ট অব্মার্থার।

দশ অংশ পারা ও নয় অংশ নাইট্রিক এসিড সংযোগে এই বস্তুর উৎপত্তি হয়। ইহার দারা এমোনিয়া ও ফশফেট্ অব্লাইম্নিরূপণ করা যাইতে পারে।

मलदक्षे वा वा श्रेम् वा शिशमम ।

সলফিউরিক এসিড্ ও লাইন্ এই ছুই মিশ্রিত হইরা ইহার উৎপত্তি হইরাছে। ইহাকে এসিটিক এসিডের জলে মিশ্রিত করিরা মৃত্তিকা হইতে ব্যারিটার পালি বাহির করা যাইতে পারে। যদি এই পালি তৎক্ষণাৎ বাহির হয় তবে সলফেট্ অব্ব্যারিটা আছে নির্মাপত হইবে, কিন্তু ইহাই নির্মাপত হইতে বিলম্ব হইলে তাহাতে ইোনশিয়া আছে কিন্তু ব্যারিটা নাই। অকজেলিক এসিড্ নির্মাণ করিতে হইলে ইহার দারা এক রূপ পালি বহির্মাত হয় তাহাকে অকজেলেট অব্লাইন্ কহে।

नाइरिष्ठे व व वर्गानिश।

নাইটিক এদিড এবং এমোনিয়া সংযুক্ত হইয়া এই বস্তুর উৎপত্তি হয়। কার্নেট অব্ এমোনিয়া সংযোগে এণ্টিমণি ও টিনের পলি বহির্গত হইলে এই বস্তু সংযোগে উহাদিগকে বাহির করা যাইতে পারে।

ক্লেরাইড অব্ কেলসিয়ম।

চুন এবং হাইড্রোক্লোরিক এ সিড একত্র হইয়া এই দ্রব্যের উৎপত্তি হইয়াছে। ইহার সংযোগে বোরেসিক, ফশফরিক, অকজেলিক ও হাইড্রোফ্লোরিক এসিডের পলি বহির্গত হয়, ইহার দাবা এলকেলাইন কার্যনেট দিগকে নিরূপণ করা যাইতে পারে।

অক্টিজন।

ইহা বায়ুবৎ পদার্থ, জন্য বস্তুর সহিত সংযোগ হইলে অমের উৎপত্তি হয়। ইহা বায়ুর এক প্রধান উপাদান নাইট্রোজেন এবং কার্ব্যণিক এসিডের সহিত সংযুক্ত হইয়া বায়ুর উৎপত্তি হইরাছে ইহার সংযোগে অভি প্রজ্বনিত হয়।

श्रदेखां एकन।

ইহা অতিশার লঘু বায়ুবং পদার্থ অগ্নি সংস্পর্শ হইলে জ্বলিয়া উঠে এবং অক্সিজনের সহিত মিলিত হইয়া জল উৎপন্ন করে।

नाईर्द्रारकन।

ইহা বায়ুবৎ পণার্থ এমোনিয়ার ভিতর বন্ত পরিমাণে থাকে এবং অক্সিজনের সহিত মিলিত হইয়া বায়ুর উৎপত্তি হইয়াছে।

ক্লোরিণ।

ইহা স্বং হরিদ্রা ও সবুজ বর্ণ কষা ও হুর্গন্ধ যুক্ত বায়ুবৎ পদার্থ, হাইড্রোজেনের সহিত মিলিত হইয়া হাইড্রোক্লোরিক এসিড উৎপন্ন হয়। ইহার সংযোগে নানাবিধ রং নফ হইয়া যায় এবং এই বস্তু অক্সিজনের সহিত মিশ্রিত হইয়া ক্লোরিক এসিসড উৎপন্ন করে। যদি এই এসিড অন্য কোন বস্তুতে থাকে তবে তাহা হইতে ইহাকে বাহির করিতে হইলে জাবক সংযোগ করিবে পরে ক্লোরিক এসিড গ্যাশ হরিদা ও সবুজ বর্ণ হইয়া বাহির হইবে।

ब्रामिन उ रारेषु ब्रानिक अमिए।

ইহা সমুদ্র জলে বহু পরিমাণে থাকে, এ জল সিদ্ধ করিলে দানাবন্ধি হইয়া লবণ বহির্গত হয় এবং অবশিষ্ট অংশে ক্লোরিন সংযোগ করিলে ব্রোমিন বাহির হইয়া পড়ে।

वारे अफिन।

ইহা দানাবিদ্ধি কোমল বস্তু শীস্ত্র ভাঙ্গিয়া যায় ইহার পাংশুও রুফ্ট বর্ণ কোন বস্তুর ন্যায় চক চক করে ইহার স্বাদ ঝাল অতি প্র্যান্ধ, সমুদ্র জন্ততে ইহা বহু পরিমাণে থাকে যে জলে এই পদার্থ থাকে তাহাতে নাইট্রিক এসিড ও ফার্চ সংযোগ করিলে নীল বর্ণ হয়।

क्षातिन उ श्रेष्ठ क्षातिन धिनष्।

কুোরিনের সহিতহাইড্রোজেন মিশ্রিত হইয়াহাইডুফ্রোরিন এসিডের উৎপত্তি হয়। যদি অন্য কোন বস্তুর সহিত মিশ্রিত থাকে তবে ইহাকে সল্ফেট অব্ পোটাসের সহিত মিশ্রিত করিয়া এক কাচের চুলির ভিতর পূরিবে পরে তাহাতে উত্তাপ সংলগ্ন করিলে ইহা বাহির হইয়া আসিবে এই বস্তু কোন প্রকার কাঁচে লাগিলে অন্ধিত হইবে।

मिलिकन।

এই বস্তুর সহিত অক্সিজন মিশ্রিত হইয়া দিলিকা বা দিলিশিক এসিড উৎপন্ন হয়। ইহা বালির সার অংশ কেবল হাইড্রোফ্রোরিক এসিডে দ্রব হয় কিন্তু যদি ইহা কোন ক্ষার পদার্থের সহিত মিশ্রিত থাকে তবে জলে দ্রব হইতে পারে।

कार्वन।

ইহার সহিত অক্সিজেন মিশ্রিত হইরা কার্বণিক এসিড উৎপন্ন হয়, ইহা কয়লার সার অংশ যদি কোন বস্তুতে কার্বণিক এসিড থাকে তবে তাহা নিরূপণ করিতে হইলে এক চুলির ভিতর রাখিয়া তাহাতে হাইড্রেলারিক এসিড মিশ্রিত করিলে গ্যাশ উদ্ভব হইবে এ সময় এ চুলির মুখ অঙ্গুলির দারা বন্ধ রাখিবে পরে অন্য আর এক চুজি
চুনের জলে অর্ধ পূর্ণ করিয়া তাহার ভিতর ঐ গ্যাশ
ছাড়িয়া দিলে ইহা চুনের জলের সহিত মিত্রিত হইয়া
এক রূপ শ্বেত বর্ণ পলি বহির্গত হইবে ইহাকে কার্বনেট অব্
লাইম কহে।

ফশফরস্ ৷

এই বস্তু বাহার ভিতর প্রচুর পরিমাণে থাকে তাহাই জ্যোতির্ময় হয় যেমন জ্যোৎসা পোকা। ইহা জন্তু দেহে অধিক পরিমাণে থাকে কিন্তু উদ্ভিদ ও মৃত্তিকা মধ্যে অতি অপপ পরিমাণে আছে, ইহা শ্বেত বর্ণ ও বায়ুতে বাহির করিয়া রাখিলে প্রজ্বলিত হইয়া উঠে কিন্তু জলে ডুবাইয়া রাখিলে সমভাবে থাকে। এই বস্তু যদি এক কাচ পাত্রে পোড়ান যায় তবে ইহা হইতে যে ধূম উদ্ভব হয় তাহা ঘনীভূত করিলে ক্ষণফরিক এদিডের উৎপত্তি হয়। যদি এই এদিড কোন ক্ষার পদার্থের সহিত (যেমন দোডা) মিত্রিত থাকে তবে তাহা নিরূপণ করিতে হইলে ইহাকে জলে গুলিয়া তাহাতে চূর্ণ, সীসা কিষা ব্যারিটা সংযুক্ত করিলে শ্বেত বর্ণ পলি বহির্গত হইবে, নাইট্রেট অব্ দিলভর যোগে হরিদ্রা বর্ণ পলি হইবে ক্লোরাইড অব ম্যাগনেশিয়া যোগে শ্বেত বর্ণ দানাবন্ধি পলি বাহির হইবে ইহার মিত্রিত অবস্থাকে ফ্শক্ষেট কহে।

वातिषा

ইহা থেত বর্ণ লবন সদৃশ বস্তু পোটাশ সংযোগে ইহার থেত বর্ণ পলি বহির্গত হয়। জাবক, কার্নেটে এলকে-লাইশ এবং ফশফেট অব্ সোডা সংযোগে উক্ত রূপ পলি বাহির হইয়া থাকে কিন্তু ক্রোমেট অব্ পোটাশ সংযোগে হরিজা বর্ণ পলি বাহির হয়।

लार्भ अर्थाए हुन १

পোটাশ, জাবক, কার্নেট এলকেলাইশ সংযোগে ইহা হইতে শ্বেত বর্ণ পলি বাহির হয়।

क् निशा।

উক্ত কয়েক বস্তু সংযোগে ইহার শ্বেত বর্ণ পলি বাহির হয়।

मागिरन िया।

ইহা চুনের সদৃশ শ্বেত বর্ণ বস্তু কিন্তু চুনের ন্যায় গুণ ইহার কিছুই নাই।

এলুমিনা 1

আটাল মৃত্তিকার সার ভাগকে এলুমিনা কহে, বিশুদ্ধ অবস্থায় ইহা শ্বেত বর্ণ কিন্তু যথন ইহাকে শুদ্ধ করা যায় তখন ইহা হরিদ্রা বর্ণ থাকে। ইহার মিশ্রিত অবস্থা হইতে বাহির করিতে হইলে কাঠিক পোটাশ ও ফশফেট অব্ সোডা সংযোগে ইহার শ্বেত বর্ণ পলিবাহির হয়।

गांगरशिन्।

প্রেটিকজাইড অব্ ম্যানগেনিশ ধূসর সবুজ বর্ণ কিন্তু জল মিশ্রিতাবস্থায় ইহা শ্বেত হইয়া থাকে। ইহাকে লবন সদৃশ করিলে মলিন গোলাপি বর্ণ হয় ইহার জল জাব্য অবস্থার কার্টিক পোটাশ বা এমোনিয়া সংযোগ করিলে শ্বেত বর্ণ পলি বহির্গত হইবে। যদি কোন বস্তুর ভিতর ম্যানগেনিশ অতি অপ্প পরিমাণে থাকে তবে ইহাতে প্রাটিন্ম ডাকে লাগাইয়া কার্নেট অব্ সোডা এবং যৎ-কিঞ্চিৎ নাইট্রেট অব্ পোটাসের সহিত পোড়াইলে নিরূপন করা যাইতে পারে।

দন্তা, লোহা, সীসা, স্বর্ণ, রোপ্য, রাঙ, তামা, পারা ইহাদিগের বিষয় বিশেষ রূপ লিখিবার আবশ্যক করে না কারণ ইহাদিগের বিষয় সকলে অবগত আছেন।

णार्भिनिक वा (मँदका।

যদি কোন বস্তুর যোগে আন্থিনিক থাকে তবে তাহা জলে গুলিয়া তাহাতে চুনের জল দিলে শ্বেত বর্ণ পলি বাহির হইবে। ইহা চুন এবং আন্থিনিক মাত্র।

गुखिकात (याश विष्कृप कतिवात श्रकत्।।

উদ্তিদ দিগের ভক্ষা দ্রব্য যে পরিমাণে ইহারা গ্রহণ করিয়া থাকে এবং মৃত্তিকায় যে যে অবস্থায় এ সকল বস্তু পাওয়া যাইতে পারে ইত্যাদি সমস্ত বিষয় নিরূপণ করিয়া এক্ষণে কোন্ উদ্ভিদ কোন্ উপাদান বিশেষ রূপে ভোগ

করিয়া থাকে ও কোন মৃত্তিকায় কোন উদ্ভিদের ভক্ষা দ্রব্য প্রচুর পরিমাণে আছে তাহা নিরূপণ করিতে হইলে উদ্ভিদ দিগের ভন্ম এবং মৃত্তিকার যোগ বিচ্ছেদ করিতে হইবে এই ছয়ের যোগ যে প্রকারে বিচ্ছিন্ন করিতে হইবেক তদ্বিয় লিখিতে প্রবৃত্ত হইলাম। তত্মের যোগ বিচ্ছেদ করিলে যে উপাদানের ভাগ ঐ ভঙ্গের ভিতর অধিক থাকিবে তাহাই এ উদ্ভিদের প্রধান ভক্ষা দ্রন্য বলিয়া পরিগণিত হইবে। যাস জাতীয় উদ্ভিদ দিগের ভিতরে मिलिकांत ভाগ अधिक পतिमार्ग थारक खुडतार मिलिकां हे ঘানের প্রধান ভক্ষা দ্রা। নারিকেল রক্ষের ভন্ম জলে छनिशा ७ পরে ছাকিয়া ছই চারি যণী রাখিলে ভশের ज्यानिक यादा के जतन थाकित्व मिट्ट ममूनग्र उन्नार्थ পতিত হইবে। পরে এ জল অগ্নিতে শুষ্ক করিলে লবণ বহিৰ্গত হইবে অতএৰ ভশান্থিত লবণ দেখিয়া অনুমান श्रुटिक् या लवर्ग अरे इस्कित विस्थि जका प्रवा अवर लवर्ग य ऋला ना शांक उशांश এই त्रक कथनई উৎপन्न इहेट পারে না। সরিষার ভিতর গন্ধকের ভাগ অধিক পরিমাণে আছে এই জন্য যে স্থলে গন্ধক কিছুমাত্র নাই তথায় সরিষা কখনই উৎপন্ন হইতে পারে না।

মৃত্তিকা ও ভন্মের যোগ বিচ্ছেদ করা প্রায় এক প্রকার।
অতএব মৃত্তিকার যোগ বিচ্ছেদ করিতে পারিলে ভন্মের
যোগ বিচ্ছেদ করা কখনই কঠিন হইতে পারে না এই
জান্য তদ্বিষয় না লিখিয়া কেবল মৃত্তিকার যোগ বিচ্ছেদ
করিবার প্রকরণ লিখিতে প্রবৃত্ত হইলাম। কোন ক্ষেত্রের

মৃত্তিকা পরীক্ষা করিতে প্রব্ত হইবার পূর্বে প্রথমে ঐ মৃত্তিকার স্বাভাবিক গুণ সকল পরীক্ষা করিয়া দেখিতে হইবে। আমাদিগের এই দেশে কোন স্থানের মৃতিকার চিক্কণ ও বালির অংশ সম পরিমাণে থাকে কোথায় বালির অংশ অধিক কোথায় চিক্তবের অংশ অধিক থাকে, কোন স্থানের মৃত্তিকা রুষ্ণ বর্ণ কোন স্থানের রক্ত বর্ণ কোন স্থানের মৃত্তিকায় রসের ভাগ অধিক পরিমাণে থাকে কোথায় অতি অপে, এই রূপ নানা স্থানের মৃত্তিকা নানা গুণ বিশিষ্ট হইয়া এই প্রদেশে রহিয়াছে। আমাদিগের কলিকাতা অঞ্চলে গন্ধার তীর সন্নিহিত প্রদেশে যে মৃত্তিকা দেখিতে পাওয়া যায় তাহা ঈষৎ শ্বেত বৰ্ণ ইহাতে শ্বেত বর্ণ বালির ভাগ অধিক আছে এবং চিক্কণের অংশ অতি অপপ পরিমাণে আছে কিন্তু গলার তীর হইতে যত পশ্চি-মাভিমুখে গমন করা যায় ততই শেত বর্ণ দিকভাময় মৃত্তিকা আর দেখিতে পাওয়াযায় না। এ অঞ্লে ঈষৎ হরিদ্রা বর্ণ বালুকাময় মৃতিকা দেখিতে পাওয়া যায় যেমন মগরার वालि এই मृखिकांत तम वर्ष्य लाशित्ल হतिया वर्ग पृष्ठे হয় এই রং ঈষৎ অক্সিজেন মিশ্রিত লৌহ হইতে উৎপন্ন হইয়া थारक, পরে ক্রমশঃ পশ্চিমাভিমুখে যাইলে দামোদর ও দারকেশ্বরের তীরে ঐ রূপ মৃত্তিকা সকল দেখিতে পাওয়া যায়। দারকেশ্বর হইতে আরও পশ্চিমাভিমুখে গমন করিলে কঠিন চিক্কণ মৃত্তিকার অংশ দেখিতে পাওয়া যায় इशांड नोतिरकल उ कमली त्रक छे० भन्न इशेड भारत ना কিন্তু অন্য রক্ষ যথা আত্র কাঁচাল ইত্যাদি অতি যত্নে তুই

একটি উৎপন্ন হইয়া থাকে। শীতকালে এই মৃত্তিকা এমত ফাটিয়া যায় যে তাহাতে এ রক্ষ দিগের শিকড় ছিড়িয়া ছিড়িয়া খণ্ড২ হইয়। পড়ে কিন্তু বর্ষার জলে এ মৃতিকা কাদার ন্যায় হইয়া যায় এই জন্য বর্যার ফদল ধান্য ইত্যাদি উত্তম রূপে জম্মে এবং রবি ফদল কিছুমাত্র হয় না এইরপে যত পশ্চিমাঞ্লে গমন করিবে ততই ঐ রূপ দেখিতে পাইবে কেবল পর্বত প্রদেশে সুর্কির বুর্ণ মৃত্তিকা দেখিতে পাওরা যায়। যদি বর্দ্ধনান অঞ্জের উত্তর পশ্চি-মাভিমুখে গমন করা যায় তবে তথায় উক্ত রূপ হরিদ্রা বর্ণ মৃতিকা ও ঘুটিং অধিক পরিমাণে দেখিতে পাওয়া যায়। পর্বত প্রদেশে রাজমহল, গয়া ও অন্যান্য স্থানে গমন क्रिल क्रमण नेयर लाल वर्ग मृजिका, यूरिंश अ अख्य मिथिए পাওয়া যায় কিন্তু মুঙ্গের হইতে বারাণদী পর্যান্ত প্রস্তর পাহাড়াদি কিছুই দেখিতে পাওয়া যায় না এই সুান গদার জলে বর্যাকালে সময়ে সময়ে প্লাবিত হওয়াতে এমত প্রাচুর রূপে পলি পড়িয়া থাকে যে ভাছাতে বর্ষা ও রবি শতা উত্তম রূপে জনিতে পারে। পাটনা হইতে গলা পার হইয়া যদি ত্রিহুত জেলায় গমন করা যায় তবে ৰঙ্গ দেশের সদৃশ মৃত্তিকা দেখিতে পাওয়াযায় িত মোজাফর-পুর অঞ্চলের মৃত্তিকায় খড়ির ভাগ অধিক দেখিতে পাওয়া যায় এবং ঐ অঞ্চলে সোরা উৎপন্ন হইয়া থাকে। এই ভূমিতে রবি এবং বর্ষার ফদল স্মচারুরপে জম্মে, জঝলপুর অঞ্চলে কোন কোন পর্বতের উপর শ্বেত, পীত, ক্লফ ও লোহিত বর্ণ মৃত্তিকা দেখিতে পাওয়া যায়। শ্বেত বর্ণ

য়তিকা বিশুদ্ধ খড়ি জ্ঞান হয় এবং লোহিত মৃত্তিকা বাহাকে বন্ধভাষায় গেরিমাটি কহে, পীত ও রম্বর্ধ মৃত্তিকা বোধ হয় লোহ হইতে উৎপন্ন হইয়াছে। পর্বতের নিকট কোন স্থানে সাবানের সদৃশ এক প্রকার থেত বর্ণ মৃত্তিকা দেখিতে পাওয়া যায় ইহা রুষিকার্য্যের উপযোগী নহে কিন্তু ইহাতে বন্ধ্র পরিষ্কার করা যাইতে পারে, সাজীন্মাটী পর্বত প্রদেশে উৎপন্ন হইরা থাকে; ইহাও রুষিকার্যের উপযোগী নহে ইহাতে কেবল কাপড় থৌত করা যাইতে পারে। এই ভারতবর্ষের হিমালয় হইতে রুমারীকা অন্তরীপ পর্যান্ত যেস্থানে গমন করিবে তথায় উক্ত কয়েক প্রকার মধ্যে কোন না কোন রূপ মৃত্তিকা লেখিতে পাওয়া যাইবে।

ভারতবর্ধের যে যে ছানে যে যে রূপ মৃতিকা দেখিতে
পাওরা যার ভাষা লিখিয়া একদে যে প্রকারে মৃতিকা
পরীক্ষা করিতে ছইবে তরিয়ে লিখিতে আরম্ভ করিলাম।
কোন ক্ষেত্রের মৃতিকা পরীক্ষা করিতে ছইলে প্রথমে ভাষার
ফাভাবিক গুণ নিরূপণ করিবে অর্থাং ঐ মৃতিকায় সিকতা
কিয়া চিক্লণের অংশ অধিক আছে; অথবা উহা শ্বেত,
পীত, রুক্ষ, লোহিত ইত্যাদি কোন বর্ণ বিশিক্ত এবং রসের
ভাগ কি পরিমাণে বা আছে ইত্যাদি সমস্ত বিষয় নিরূপণ
করিতে ছইবে এবং উক্ত গুণারুসারে যে মৃতিকার যেরূপ
উদ্ভিদ রোপণ করিতে ছইবে তাহা আমরা পুর্বে লিখিয়াছি
এক্ষণে যদি মৃতিকার স্থাভাবিক গুণ সকল কেবল দর্শনে

করিবে। প্রথমে এ স্থান হইতে এক সের ওজনে মৃত্তিকা লইয়া ইহাকে শুষ্ক করিবে পরে ইহাকে এজন করিলে যে অংশ কমিয়া যাইবে, তাহাই রসের ভাগ হইবে। তৎপরে ইহাকে এক লোহ পাত্রে রাখিয়া অগ্নিতে পোড়াইয়া লাল করিবে পরে ওজন করিলে ঘে অংশ কমিয়া যাইবে তাহাই সারের ভাগ হইবে। যদি এ মৃতিকায় জন্ত পচা সার থাকে তবে উহাকে পোড়াইবার সময়ে হুর্গন্ধ বাহির इहेर्न, किन्नु উদ্ভिদ সার থাকিলে সোদা গন্ধ বাহির হইবে। পরে অবশিষ্ট যে মৃত্তিকা থাকিবে তাহা জলেতে গুলিলে ইহার চিক্কণের অংশ জলের সহিত মিশ্রিত হইয়া যাইবে এবং বালির ভাগ তলভাগে পতিত হইলে ঐ জল আতে২ অন্য পাত্রে ঢালিবে পরে তলভাগের বালুকা সকল উত্তম क्राप भोज कतिल विख्क वोलुका दिश्व इस्त। र् বালুকা শুষ্ক করিয়া গুজন করিলে বালুকার ভাগ নিরূপিত হইবে এবং অবশিষ্ট যাহা থাকিবে তাহাই চিক্তণের অংশ इहरव।

এ মৃত্তিকায় চুনের ভাগ কি পরিমাণে আছে তাহা
জানিতে হইলে এই মৃত্তিকা অগ্নিতে পোড়ান হইলে ইহাকে
এক কাচের প্লামে রাখিয়া ইহার ছই গুণ হাই ব্রুক্লোরিক
এমিড ইহাতে ঢালিয়া দিবে এবং এমিড যত হংবে তাহার
চারি গুণ জল ইহাতে ঢালিয়া দিবে পরে এক ঘণ্টা প্র
বস্তু কাঠি দিয়া ঘাঁটিয়া এক ছাঁকনি কাগজে এই বস্তু
ছাঁকিবার জন্য কাচ নির্মিত এক ফনেল বা তৈলের চোলার
উপর ছাঁকনি কাগজ কিলা তদভাবে বলাটিং কাগজ স্মচাক-

রূপে বসাইয়া দিবে পরে ঐ চোন্ধা এক বোডলের উপর বসাইয়া রাখিবে এবং কাদার জল ছাঁকিতে হইলে এ চোষ্পার ভিতর জল আত্তে আতে দিবে এবং পরিষ্কার জল ছাকনি কাগজকে ভেদ করিয়া পড়িতে থাকিবে এইরপে मगूनग्र जन পতिত इहेल कानांत (य अश्म जल जांचा इग्न নাই তাহা ছাকনি কাগজের উপর থাকিবে এবং দ্রাব্য অংশ বোতলের ভিতরে পতিত হইবে পরে ছাঁকনি কাগজের উপর যে মৃত্তিকা আছে তাহা শুষ্ক করিয়া কাগজ সহিত अजन कत्रित পরে কাগজ ও জল বাদ দিলে যাহা থাকিবে তাহাই মৃত্তিকার ওজন হইবে পরে দ্রাব্য অংশ জল এবং এসিডের সহিত ওজন করিয়া এসিড এবং জল যে পরিমাণে আছে তাহা বাদ দিলে জাব্য অংশের ওজন পাওয়া যাইবে এবং ক্রাব্য ও ক্রাব্যবিহীন অংশের ওজন একত্র করিলে याद्रा किमिशा याद्दित जाद्राहे हूरने ब्राज्य जन्म इहेरत। जन्म स কাগজস্থিত জাব্যবিহীন অংশ, যাহা শুষ্ক করিয়াও জলযুক্ত করা হইয়াছে, তাহা এক গ্লাদে রাখিয়া জলে গুলিতে इहेट्य। श्रेट्स क्कर्णक काल क्रिस हहेटल हेहां स किस्रफ्रश তলভাগে পতিত হইবে, এবং অবশিষ্ট জল দ্রাবা হইয়া থাকিবে। এই সময়ে উক্ত জল আত্তে আত্তে ঢালিয়া এক ছাকনি কাগজে ছাঁকিলে জল বাহির হইয়া যাইবে কিন্তু কাদার অংশ কাগজে থাকিবে। পরে গ্লাসের ভিতর যে অবশিষ্টাংশ থাকিবে তাহা পুনশ্চ জল ঢালিয়া গুলিতে হইবে এবং উক্ত প্রকারে স্থিত হইলে ছাকিয়া লইবে এই রূপ তিন চারি বার করিলে, গ্রাদের ভিতর বিশুদ্ধ বালি বাহির

হইয়া পড়িবে। এই বালি শুষ্ক করিয়া ওজন করিলে বালি যে পরিমাণে ছিল, তাহা নিরপণ হইবে এবং ছাঁকনি কাগজে যে সকল কাদার অংশ থাকিবে, তাহা শুষ্ক করিয়া ওজন করিলে কাদার অংশ নিরপণ হইবে।

যদি ক্ষক মৃত্তিকা হইতে চুন বিশুদ্ধ অবস্থায় বাহির করিতে ইচ্ছা করেন তবে নিম্নলিখিত উপায় অবলম্বন করিতে হইবে। চারি শত কিশা পাঁচ শত এোণ মৃত্তিকা লইয়া অগ্নির উত্তাপে শুষ্ক করিবে; পরে এক রহৎ কাচপাত্রে রাখিয়া জল দিয়া গুলিতে হইবে। পরে ইহাকে উত্তমরূপে ঘাটিয়া জলের সহিত মিশ্রিত করিলে, ইহাতে পুনশ্চ অধিক পরিমাণে জল দিতে হইবে এই কাদা মিশ্রিত জল কিঞ্চিৎ कोरलं जना शिंठ इंडेएं मिल, मृखिकांत जारम জলের সহিত মিশ্রিত হইবে, এবং দ্রাব্য বিহীম অংশ मगून र उन्होर्ग পতिত इहरव। এक्स्ल डेপ बिङ्गार्ग इ धे जन मारेकन दाता পांज रहेए निर्गंड कतिल किया সাইফন অভাবে আত্তে আতে ঢালিয়া জন্য পাত্ৰে ঘোলা অংশ ফেলিয়া পুনশ্চ উক্ত পাত্রে জল ঢালিয়া এ মৃত্তিকা উত্তমরূপে গুলিতে হইবে এবং কিয়ৎকাল স্থির হইলে श्रनत्रोत्र शृर्द्यांक थकाद्र जाना जश्म निक्र निव कित्रित। ত্রই চারি বার এই রূপ করিয়া যখন জলের সহিত মিশ্রিত হইয়া কোন বস্তু এক মূত্র্ত থাকিতে পারিবে না জল जिन्नेमां ममुम्य उम्लाश शिंउ इहेता

এই জল মিশ্রিত মৃত্তিকার দ্রাব্য অংশ এই সময়ে এক বার ওজন করিয়া, ছাকনি কাগজে ছাকা যাইতে পারে

কিন্তু তাহা হইলে স্থবিধামত হয় না এই জন্য ইহাকে এক इंड९ (वोज्रान जोनियां क्रोथित। श्रात यथन व्यावनाक इरेरव उथन रेशांक होकिया ७ एक क्रिया रेशांव मकन निज़र्शन कतिर्व। यनि धे मृ छिकां ज्ञ कानां ज्ञ ज्ञान ज्ञानिक থাকে তবে ইহা বোতলের তলভাগে স্থিত হইতে কিছু मितम विलम **इ**हेर्त। পরে ইহা তলভাগে স্থিত হইলে ইহার উপরিভাগের পরিষ্কার জল সাইফন দারা কিম্বা তদভাবে আন্তেং ঢালিয়া ফেলিবে, কিন্তু মৃত্তিকার যে অংশ দ্রাব্য হয় নাই তাহা ঐ বোতলের তলভাগে কিঞ্চিৎ জলের সহিত মিশ্রিত হইয়া থাকিবে এক্ষণে ইহাকে উত্তম রূপে ঘাটিয়া এক ওজন করা কাগজে ছাকিলে ইহা হইতে পরিষ্ঠার জল বাহির হইয়া যাইবে। যদি ঐ জল পরিষ্ঠার রূপে বাহির নাহয় তবে ইহাকে পুনশ্চ ঐ বোডলে ঢালিয়া দ্রাব্য বিহীন অংশ সকল উত্তম রূপে ধৌত করিয়া এ ছাক্ষি কাগজে ঢালিয়া দিবে। একণে ছাঁক্ষি কাগজের অতি স্কা ছিজ সকল পূর্বস্থিত কাদার প্রমাণ দারা পরিপুরিত আছে এই জনা ইহার ভিতর দিয়া পরিষ্কার জল অবশা বাহির হইবে। যখন সমুদয় জল বাহির হইয়া যাইবে তখন ঐ ছাঁকনি কাগজ ও কাদা শুষ্ক করিতে হইবে। যে প্রকারে ইছাকে শুষ্ক করিতে হইবে তাহার বিবরণ এই— এক ক্ষুদ্র লৌহ কিশ্বা মৃত্তিকা পাত্র বালিতে পরিপুরিত इंदा निम्न डार्ग जक अनीर भन्न निश्चात छें छो भ मध्न भ করিলে উপরিভাগের বালি উত্তাপিত হইয়া উঠিবে। ছাকনি কাগজ ও কাদা শুষ্ক করিতে হইলে, এ উত্তাপিত বালির উপর রাখিলে শীদ্র শুক্ত হইরা যাইবে, পরে ছাঁকনি কাগজের ওজন বাদ দিলে দ্রাব্য বিহীন অংশের ওজন নিরূপণ হইবে মনে কর এই ওজনের পরিমাণ যেন ঘ রহিল।

দ্রাব্য বিহীন অংশ হইতে যে পরিকার জল বাহির হইয়াছে তাহার ভিতর কেবল দ্রাব্য ও লবনের অংশ রহিল ইহার নাম শ রাখা হইল।

যে পাত্রে প্রথমে মৃত্তিকা গোলা হইয়াছিল তাহা হইতে দ্রাব্য অংশ অন্য পাত্রে ঢালিয়া রাখিলে ঐ প্রথম পাত্রের তলভাগে কেবল বালি ও অন্যান্য দ্রাব্য বিহীন স্থূল অংশ থাকিবে। এক্ষণে ঐ পাত্র ধ্যেত করিয়া সমুদয় জল ও দ্রাব্য বিহীন অংশ এক ওজন করা ছাঁকনি কাগজে ছাঁকিলে ইহার সমুদয় অংশ বাহির হইয়া যাইবে এবং অবশিষ্ট যাহা কাগজের উপর থাকিবে তাহা শুক্ষ করিয়া ওজন করিবে পরে কাগজের ওজন বাদ দিলে দ্রাব্য বিহীন অংশের ওজন নিরপণ হইবে ইহা নাম গ রাখা হইল।

এই মৃত্তিকায় রদের অংশ যাহা ছিল তাহার নাম ক রহিল।

একণে অংশ থ অন্তরে রাখিয়া দ্রাব্য কিছান স্থুল অংশ এক লৌহ পাতে রাখিয়া পোড়াইলে ইহার সার ভাগ নফ হইয়া যাইবে। পরে ইহাকে ওজন করিলে যাহা কমিয়া যাইবে তাহা তাহার সারের অংশ হইবে, ইহার নাম চরহিল।

এই স্থুল অংশেতে একণে কোন স্ক্ৰা অংশ নাই এই জ্ঞ ইহাকে ভিন্ন প্রকার চালনীতে চালনা করিলে ভিন্ন প্রকার গুড়া বাহির হইবে এই চালনি যদি তারে নির্মিত হয় তবে এক ইঞ্চ মধ্যে দশ তার থাকিবে এবং দ্বিতীয় চালনীর এক ইঞ্চ মধ্যে ৪০ তার থাকিবে কিন্তু তৃতীয় চালনী অতি স্কা মলমল কাপড়ে প্রস্তুত করা আবশ্যক, ইহার এক ইঞ্চ मर्था ১०० जात शांकर्व। अथम जाननीर जो नितन जे মৃত্তিকার ঢেলা সকল উপরিভাগে থাকিবে এবং দ্বিতীয় চালনীতে চালিলে মৃত্তিকার সুল অংশ সকল ইহার উপর থাকিবে পরে তৃতীয় চালনীতে চালিলে মৃত্তিকার বালি অংশ সকল উপরে থাকিবে এবং তলভাগে অতি সূক্ষ বালি সকল পতিত হইবে। মৃত্তিকার উক্ত চারি অংশ (एल), जून जश्मे, नोलि धवर स्था नोलि नोहित स्टेल এ মৃত্তিকার স্বভাব কিরপ জানা যাইতে পারিবে পরে ঐ मकल जश्म (य (य উপধাতু, मश्राशाता छे९ भन्न इहेग्राह তাহাদিগকে নিরূপণ করিতে হইলে তাহাদিগের লক্ষণ দারা ধার্য করিতে হইবে। যদি ইহাদিগের ভিতর কোয়ার্জ প্রস্তারেয় গুড়া থাকে তবে ইহার দ্বারা জানা যাইতে পারিবে মাসের উপর ঘর্ষণ করিলে ইহার কিয়দংশ ক্ষয় হইয়া यादेव। किन्छ यनि मृखिका इय ७८व देशक (পाড़ाइवाর পর ইহার বর্ণ স্বর্ণ সদৃশ হরিদ্রা বর্ণ স্থিতি স্থাবক হইবে।

যদি ইহা ফেলপার হয় তবে কোয়ার্জ অপেক্ষা কোমল হইবে এবং ছুরি দারা ইহাকে চাঁচিতে হইলে কঠিন বোধ হইবে। একাকি অবস্থায় পোড়াইলে ইহার ধারল কোন সকল কেবল জ্বলিতে থাকিবে কিন্তু কার্বনেট অব্ সোডার সহিত পোড়াইলে দানাবন্ধি কাচের সদৃশ হইয়া পুড়িবে বোরের সহিত পোড়াইলে স্বচ্ছ হইয়া পুড়িবে। যদি ইহা চুন যুক্ত বালি কিন্তা স্থূল অংশ হয় তবে ইহা ছুরিতে অনায়াসে চাঁচা যাইতে পারে এবং ইহাতে কোন প্রকার এসিড ঢালিয়া দিলে বিশ্ব উদ্ভব হইতে থাকে এবং ইহাকে ভিজাইয়া থ্রে লিটমশ কাগচে সংলগ্ধ করিলে নীলবর্ণ দাগ হইবে।

যদি সমুদর স্থুল অংশের ভিতর কি পরিমাণে চুন আছে তাহা নিরপণকরিতে হয় তবে চালনিতে চালিবার পুর্বে ঐ সমুদয় সুল অংশেতে হাইড্ক্লোরিক এসিড্ ঢালিয়া চুনের ভাগ নিরপণ করিবে কিন্তু চুন কি পর্যান্ত বিভাগ হইরা ঢেলা সুল অংশ বালি ও স্কম বালির ভিতর আছে তাহা নিরপণ করিতে হইলে ইহানিগের এক২ তাংশে হাইড-ক্লোরিক এসিড ঢালিয়া পরীক্ষা করিতে হইবে, এই চারি অংশের মধ্যে যে অংশের পরীক্ষা প্রথমে করিতে হইবে তাহা হইতে ৫০ গোণ লইয়া তাহাতে হাইড্রোরিক এসিড ঢালিয়া দিবে মৃত্তিকা যত হইবে তাহার দ্বিওণ এদিড দিতে হইবে এবং ইহার চারি ওণ জল ভাহাতে মিভিত করিতে হইবে পরে ইহাকে উত্তমরূপে ঘাটিয়া ক্ষাভ কাল স্থিত হইতে দিবে। এসিডের ভাগ অধিক পরিমাণে আছে কি না তাহা লিটমশ কাগতে পরীক্ষা করিয়া দেখিবে এই কাদা शोला जल अकर्ष हैं। किल है होत सोवा जश्म उनर्धा পতिত হইবে এবং দ্রাব্য বিহীন অংশ ছাঁকনি কাগচের উপরে থাকিবে পরে জাবাবিহীন অংশ উত্তম রূপে ধ্যতি করিয়া এদিত হইতে মুক্ত করিবে, পরে শুক্ত করিয়া ওজন করিয়া ভাঁকিনি কাগচের পরিমাণ বাদ দিলে যাহা থাকিবে তাহাই জাব্য বিহীন অংশের পরিমাণ নিরূপণ হইবে এবং অবশিষ্ট সমুদয় জাব্য অংশের ভাগ হইবে এসিড প্রথমে সংযোগ করিবার পরে যদি বিশ্ব উদ্ভব হয় এবং ঐ জল যদি বর্ণ বিহীন হয় তবে তাহাতে কার্বনেট অব্লাইম ছিল বিবেচনা করিতে হইবে।

ঢেলা বালি ও স্ক্ষম বালি ইত্যাদি যে প্রকারে এসিড যোগে পরীক্ষা করা হইল সেই প্রকারে মৃত্তিকার দ্রাব্য বিহীন অংশ ঘ প্রতি করিতে হইবে। প্রথমে ইহাকে পোড়াইয়া ইহার সার বস্তু নফ করিবে পরে এসিড সংযোগে ইহাতে চুন কি পরিমাণে আছে তাহা নিরপণ করিবে অবশেষে কেবল উপধাতু সকল ইহার ভিতরে থাকিবে। এইরপ সকল অংশের পরীক্ষা করা হইলে তাহা-দিগের পরিমাণ নিম্নলিখিত প্রকারে এক কাগজে লিখিতে হইবে, যথাঃ—

- ১ক—তাং বায়ুতে শুদ্ধ করিলে ইহার ভিতর রস কি পরিমাণে জিল তাহা লিখিবে।
 - २ थ जन जोवा जश्म।
- ৩ গা—ঢেলা বালি এবং স্থক্ষ্ম বালি ইত্যাদি সকলের পরিমাণ এবং ইহাদিগের ভিতর চুনের অংশ।
 - 8 घ-जावा विश्वीम जाश्म जवश हेशांत हुत्मत जांगे।
 - ৫ চ-मात्त्रत जारा धर डेलधाजूत जारा।

মৃত্তিকার ভিতর চুন কি পরিমাণে ছিল তাছা বিশেষ क्रानियांत्र आवगाक इहेल এই अल फारा अश्ल हाईफु-ক্লোরিক এসিড ঢালিয়া দিলে ইহার চুনের অংশ হইতে কাৰ্ব্যণিক এসিড বহিৰ্গত হইয়া যাইবে এবং হাইড্ৰ-ক্লোরিক এসিডের ক্লোরিন চুনের সহিত মিশ্রিত হইয়া ক্লোরাইড অব্লাইম হইয়া থাকে। যদি ইহাতে এমোনিয়া অধিক পরিমাণে ঢালিয়া দেওয়া যায় তবে ইহা হইতে এক রূপ পলি বাহির হইবে এই পলির ভিতর অকজাইড অব व्यादेवन, अनुमिना अवर कर्भकविक अमिछ थोकिरव अकरन এই পলি ছাঁকিয়া বাহির করিবে পরে ইহাকে জলে ধৌত করিবে। যদি উহাতে কাফকি দিলে শ্বেত বর্ণ মেঘের ন্যায় পলি বাহির হয় তবে এই প্রকারে কাষ্টকি সংযোগে উক্ত এসিডের সমুদয় ক্লোরিন বাহির করিয়া দিবে। পলি ছাকিয়া नहेल य জল থাকিবে তাহাতে চুন, ম্যাগনেশিয়া ও ম্যানগোনেসি থাকিবে, এক্ষণে ঐ জলের ভিতর এমো-নিয়া ভিন্ন অবস্থায় আছে তাহা হরিজা লেপন করা কাগজে পরীক্ষা করিয়া দেখিবে পরে ইহাতে হাইডুক্লোরিক এসিড ঢালিয়া ইহার অম নাশক গুণ নম্ট করিয়া কিয়ৎ কণ রাখিবে। এক্ষণে ইহাতে অকজেলেট অব এমোনিয়া मः योगं कतिल इक्षवर পान विदर्शक इहेर । अहे शान ছাকিয়া তৎক্ষণাৎ বিভিন্ন করা যাইতে পারে না কারণ ইহা কাগজের ছিদ্র দিয়া বাহির হইয়া যায় এই জন্য ইহাকে রাত্রিতে অগ্নির উত্তাপে রাখিয়া প্রাতঃকালে ছাকিলে ঐ পলি বাহির হইয়া পড়িবে।

সলকার বা গন্ধক প্রস্তারের ভিতর অবস্থিতি করে এবং আয়ের নিরি হইতে সলফিউরস এসিড গাস উদ্ভব হর কিন্তু সলফিউরিক এসিড একাকি কিন্তা যৌগিক অবস্থার পাওরা যাইতে পারে। আয়ের নিরি প্রদেশে জলের ভিতর দেখিতে পাওরা যার হাইড্রো সলফিউরিক এসিড গ্যাশ মৃত্তিকা ও সলফিউরস জল হইতে উদ্ভব হইরা থাকে। উদ্ভিদ দিগের মধ্যে এই কয়েক রক্ষে (গন্ধক, সলফেট অব্লাইম, সলট পোটাশ, সলট অব্ সোডা এই তিন অবস্থার দেখিতে পাওরা যার) লিলিয়েসি জাতি মধ্যে রস্থনের ভিতর ক্রুকর্ষিকরি বা সরিবা মধ্যে অম্বিক্রির বা প্রার্থন কাতির মধ্যে হিংক্রের মধ্যে আছে এই বস্তু জলে জাতার মধ্যে হিংক্রের মধ্যে আছে এই বস্তু জলে জাব্য মহে কিন্তু এলকোহল ও ইথরে কিন্তিৎ পরিমাণে জাব্য হইরা থাকে এবং তৈলেতে অধিক পরিমাণে জাব্য হয়।

কোন বস্তুতে গন্ধক আছে এমত সম্পেই হইলে ইহা কোন এসিডের সহিত মিশ্রিত করিয়া বক যন্ত্রের ভিতর রাখিয়া উত্তাপ সংলগ্ন করিলে এক প্রকার গ্যাস উদ্ভব হইবে এই গ্যাস যদি এসিটেট অব্লেডের জলের ভিতর দিয়া চালনা করিলে রুক্ষ বর্ণ পলি উৎপন্ন হইবে কিন্ধা ঐ বস্তু কার্টিক পোটাশের এবং জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া ছাকিয়া লইলে যে জল থাকিবে তাহাতে টাকা কিন্ধা উজ্জল এক থণ্ড রৌপ্য ফেলিয়া দেওয়া যায় তবে ঐ জলে গন্ধক থাকিলে রৌপ্য রুক্ষ বর্ণ হইয়া যাইবে এবং যদি গন্ধক না থাকে তবে থেমন উজ্জ্বল রৌপ্য তক্রপ থাকিবে।

क्षिप्रश्न।

ভকার গুণ পরীক্ষা করা হইলে ইহাতে চিক্কণ বালি সার এবং রসের ভাগ কি পরিমাণে আছে তাহা জানা যাইতে পারিবে কিন্তু মৃত্তিকার উক্ত বস্তু সকল উপযুক্ত পরিমাণে থাকিলেও যদি ইহা কোন উদ্ভিদের প্রতি ইহার উর্বরতা গুণ প্রকাশ না করে তবে সেই কারণ নিরূপণ করিতে হইলে রাসায়নিক পরীক্ষা দ্বারা মৃত্তিকার যোগ বিচ্ছেদ করিতে হইবে। মৃত্তিকা যৌগিক পদার্থ উহা নানাবিধ উপাদানে স্ফ ইইয়াছে, এই উপাদান সকল সংখ্যাতে ষট পঞ্চাশতের অধিক হইবে। ইহারা বিশুদ্ধ বস্তু কিন্তু কথনই বিশুদ্ধ অবস্থায় থাকে না ইহারা তিন শেণীতে বিভক্ত হইয়াছে।

| বারুবৎ পদার্থ। | ধাতু। | উশধাতু। |
|----------------|---------|---------|
| > সঞ্জিন | ১ স্বৰ্ | > গন্ধক |
| ২ হাইডুজেন | ২ রৌপ্য | ২ দোরা |
| ० नाइट्योजन | ৩ তাত্র | ৩ চুন |
| | ৪ লৌহ | |
| | ৫ রাং | |

এই সকল বস্তু পরস্পার স্থানাবেত থাকাতেই ভৌতিক কার্য্য সমস্ত স্থচারুরপে নির্বাহিত হইতেছে এবং ইঃ দিগের যোগ বিচ্ছেদই কি সচেতন কি অচেতন তান ভৌতিক দেহের লয় হইতেছে যেমন এক অট্টালিকা ভাঙ্গিয়া যাইলে তত্নপাদানে কলাপ দারা অন্য অট্টালিকা নির্মাণ হইয়া থাকে সেই রূপ এক দেহের ধংশে অন্য দেহ উৎপন্ন হইয়া প্রকৃতির আশ্চর্য্য লীলা প্রকাশ ক্রিতেছে। এই সকল উপাদানেয় যোগ ছই প্রকার, মিশ্রিত ও
রসায়নিক। যখন এক বস্তুর প্রমাণু সকল অন্য বস্তুর
পরমাণুর সহিত কেবল মিলিত হইয়া থাকে তখন তাহাকে
মিশ্রিত যোগ কহে। হুদ্ধ এবং জল ইহাদিগের পরক্ষার
একত্রে যোগ উহা মিশ্রিত যোগা, কারণ ঐ রপ যোগা
কেবল উভয়ের পরমাণু একত্রিত হইয়া থাকে। তাত্র এবং
দন্তা একত্রে মিশ্রিত হইয়া পিতল হয়। অক্সিজন এবং
নাইট্রোজন মিলিয়া বায়ুর উৎপত্তি হইয়াছে, চিনির পানা
ও জল মিশ্রিত জাবক এমত সমস্ত মিশ্রিত পদার্থ যোগিক
নহে কিন্তু হই বস্তুর পরমাণু রসায়ণিক আকর্ষণে বন্ধ হইয়া
যদি যোগিক পদার্থ উৎপত্র হয় তবে তাহাকে রাসায়নিক
যোগ কহে।

অক্সিজন ও হাইডুজন একত্রে যুক্ত করিলে জল উৎপাদন করে ইহাতে অক্সিজন ও হাইড্রোজনের পরমাণু সকল নির্দিষ্ট পরিমাণানুসারে যুক্ত হইরাছে কিন্তু যদি উপযুক্ত পরিমাণ না থাকিত তবে কখনই জল উৎপন্ন হইত না, গদ্ধক এবং অক্সিজন উপযুক্ত পরিমাণে যুক্ত হইরা জাবক হয়। সোডিয়ম ও অক্সিজন যোগে সোডা উৎপন্ন হইন্য়াছে এই সকল যৌগিক পদার্থের নাম আইড ও ইউরেট প্রত্যয়ান্ত করিয়া প্রকাশ করিতে হয়। যেমন অকজাইড অর্থাৎ অক্সিজন যাহার সহিত যুক্ত হইয়াছে তাহাকে অকজাইড কহে এইরূপ ক্রোরাইড, ব্রোমাইড, আয়ওডাইড এবং আয়ওডিউরেট, সলফিউরেট, কার্কিউরেট, ফ্রাফিরেট অর্থাৎ ক্রোরিন, ব্রোমিন ও ফ্রোরিন ইত্যাদি বস্তুতে অন্য

ৰস্তু সকল আসিয়া যুক্ত হইলে উক্ত নামে আখ্যায়িত হয়।

দ্বিযোগিক পদার্থে অক্সিজন থাকাতে যদি অমগুণ প্রকাশ করে তবে ইক এবং অস প্রত্যয়ান্ত করিয়া প্রকাশ করিতে হয়। যদি এক ভাগ গন্ধক ও চুই ভাগ অক্সিজন থাকে তবে অস্প্রতায়ের দ্বারাপ্রকাশ করিতে হয়, যেমন সলফিউরস এসিড কিন্তু এক ভাগ গন্ধক তিন ভাগ অক্সি-জন থাকিলে ইক প্রত্যয়ের দ্বারা প্রকাশ করিতে হয় যেমন সলফিরিক এসিড এবং এক ভাগা নাইটোজেন ও তিন ভাগা অক্সিজেন মিশ্রিত করিলে নাইট্রস এসিড হয় এবং এক ভাগ नार्द्रोडिन ও পঞ্জাগ অক্সিজেন একত্রে মিজিত করিলে नारे कि अनिए इस, अरे योशिक शमार्थ मकल दियाशिक, ত্রিযোগিক ও চতুর্যোগিক পর্যান্ত হইয়া থাকে। গন্ধক এবং অক্সিজন একত্রে মিশ্রিত হইয়া যদি দ্রাবক উৎপন্ন হয় তবে তাহাকে দ্বিযোগিক কহে কিন্তু যদি দ্রাবক ও সোডা একত্র इहेग्रा मन एक वे जाक मांजा किन्ना कार्का कि जामिज अ नाहेग কার্বনেট অফ লাইম হয়, তবে তাহাকে তিয়োগিক কহে। যদি চারি প্রকার পরমাণুর যোগে এক বস্তু হয় তবে তাহাকে চতুর্যোগিক কহে। যেমন সলফেট অফ লে লুমিনা वा कहेकिति ७ मनदक्छे जक (পाष्ट्रांस इंडाामि।

নানা বস্তুর পরমাণু ওজনে নানাপ্রকার হইরা থাকে। পরমাণু পরিমিত হাইড্রোজনের সহিত পরমাণু পরিমিত অক্সিজন মিশ্রিত হইলে জল উৎপন্ন হয়, কিন্তু হাইড্রোজেন এমত হাল কা বস্তু যে ১০০ রতি পরিমিত :১.১ রতি হাই- ড্রোজেন থাকে এবং ৮৮,৮ অক্সিজন থাকে অর্থাৎ হাইড্রোজন যে পরিমাণে এক হইবে অক্সিজন সেই পরিমাণে অফ

হইবে এবং ইহাই ইহাদিগের রাসায়ণিক যোগের তুল্য
পরিমাণ হইবে। এই পরিমাণ না হইলে কখন জল উৎপন্ন
হইবে না এইরপ এক বস্তুর উপাদান অন্য বস্তুর উপাদানর সহিত যোগ হইবার এক রপ বিশেষ পরিমাণ
আছে তাহা না হইলে যোগ হইবে না যেমন ১০০ ভাগ
হাইডুক্লোরিক এসিড ৯৭,২৬ ক্লোরিন ২,৭৪ হাইড্রোজেন
১০০ ভাগ হাইড্রো সলফিউরিক এসিড ৯৪,১ গন্ধক ৫০৮
হাইড্রোজেন ১০০ ভাগ হাইড্রোওডিক এসিড ও আইওডিন
৯৯,২৮ হাইড্রোজেন ০০০৭।

কোন রাসায়নিক যে গিক বস্তুর এক উপাদানের স্থানে অন্য উপাদান স্থাপন করিতে হইলে যে পরিমাণে ইহারা যোগ হইরা থাকে, সেই পরিমাণ না হইলে ঐ বস্তুর কখনই স্থাপন করা যাইতে পারেনা। যেমন অক্সিজনের মিত্রিত কোন যে গিক পদার্থের যদি অক্সিজন বহির্গত হইয়া যায় এবং তাহার স্থানে যদি হাইড্রোজন স্থাপন করিতে হয়, তবে অফ্ট অংশ অক্সিজনের স্থানে একাংশ হাইড্রোজন স্থাপন করিতে হয়ে এবং ৩৫,৪ রতি পরিমিত ক্লোরিন ৬ রতি পরিমিত কার্ম্বন ১৬ রতি পরিমিত গল্পক ইহারা প্রত্যেকে এক রতি পরিমিত হাইড্রোজনের তুল্য হইবে।

এই জগতের উপাদান সকল ও যে প্রকারে ইহাদিগের থোগ হইয়া থাকে ভাহা সমুদয় অবগত হইয়া রুষক এক্ষণে ও যোগ যে প্রকারে বিচ্ছেদ করিতে হয় তাহাই করিতে

প্রবৃত্ত হইবেন, যে ক্ষেত্রের মৃত্তিকার যোগ বিচ্ছেদ করিতে হইবে, তথাকার চারি ভিন্ন স্থান হইতে এক এক সের मृजिका किश्विष् निम्न जार्ग इरेट जार्ग कतिए रहेर्त, श्रत ইহাদিগকে মিশ্রিত করিয়া পুনশ্চ ইহাদিগকে ভিন্ন২ চারি সমান অংশ করিবে, পরে এক অংশ লইয়া রৌদ্র কিম্বা অগ্নিদ্বারা সম্পূর্ণরূপে শুষ্ক করিবে পরে ইহাকে বিলোড়ন করিয়া উত্তমরূপে মিশ্রিত করিবে এবং স্থক্ষ চালনিতে চালিয়া গুড়া সকল বহির্গত করিবে এবং ঢেলা প্রস্তার ভঙ্গ বা খোলা কুচি ইত্যাদি চালনির উপর থাকিবে পরে উক্ত ত্রই অংশ ওজন করিয়া ওঁড়া অংশ কত হইল ও ঢেলা ইত্যাদি অংশ কত হইল তাহানিরপণ করিবে, অনন্তর মৃত্তি-कांत्र (एला मकल लहेग्रा अङ्गुलिए स्थान कितिल यिन किर्िन ও করকরে বোধ হয় এবং কাঁচের উপর ঘর্ষণ করিলে যদি ইহাতে রেখা অঙ্কিত হয়, তবে ইহাতে বালির তাংশ আছে নিরূপণ হইবে। আর যদি অন্ধুলিতে টিপিলে অতি সহজে ভালিয়া যায় কিম্বা ছুরিতে কাটিলে অতি সহজে কাটিয়া যায়, তবে ইহার ভিতর কঠিন চিক্কণের অংশ অধিক আছে নিরূপণ হইবে। যদি উক্ত ঢেলা সকল এক কাঁচের প্লামে রাখিয়া তাহাতে ভিনিগর কিম্বা হাইডে ক্রারিক এসিড ঢালিয়া দিলে বিশ্ব উন্তব হয় তবে ইহাদিগের ভিতর কার্ব-(न हे ज्यक न दिम जार्ष्ट श्रित कता इहर्त।

যৃত্তিকার গুঁড়া অংশ সকল চালনিতে চালিয়া যাহা বাহির ও ওজন করা হইয়াছে তৎসমুদয় লইয়া চোয়ান জলে গুলিতে হইবে এবং এ জল এমত পরিমাণে দিতে

হইবে যে তাহাতে তলভাগের সমুদয় মৃত্তিকা গুলিয়া পাতলা হইয়া যাইবে। পরে ঐ মৃত্তিকা গোলাজল ২০ মিনিট অবধি অগ্নিতে সিদ্ধ করিবে পরে ইহা স্থির হইলে कामा मकल उनजारा পि उठ इहेरव এवश উপরিভাগে জল থাকিবে তাহা লইয়া এক প্রকার ছাকনি কাগজ আছে তাহাতে ত্রই বার ছাঁকিতে হইবে, পরে কাদার অংশ যাহা কিছু ইহার ভিতরে থাকিবে তৎসমুদয় ঐ ছাকনি কাগজের উপর থাকিবে এবং পরিষ্কার জল বহির্গত হইবে কিন্তু এই জলের ভিতর কাদার অংশ আছে কিনা তাহা সপ্রমাণ করিবার জন্য ইহার হুই তিন ফোটা এক প্লাটিন্ম পাতে রাখিয়া অগ্নিতে শুষ্ক করিলে যদি ইহাতে কোন দাগ লাগিয়া থাকে তবে অনুমান হইবে যে ইহার ভিতর कामा वां नवर्णं अश्म आरम्। आंत्र क्षांिक्य भारत क कन শুষ্ক করিলে যদি কোন দাগ না থাকে তবে ইহার পরীক্ষা **छे श्रेष्ठ इहेग्राइ निक्त १० इहेरव।** यनि मृखिकात ভিতর গিপদম অর্থাৎ সল্ফেট অফ লাইম থাকে তবে ঐ পরীক্ষা অত্যন্ত কঠিন বোধ হইবে এই জন্য অকজেলেট अक लाइम সংযোগে চুন বাহির করিলে এবং বেরিটা সং-यार्श जावक वाश्ति कतिल পतीकार्ड जना जना जश्म সহজ হইয়া যাইবে পরে সমুদার জল অগ্নিতেশুক্ষ করিয়া घन करित्र। किन्छ अभद मायक्षांन इहेट इहेर्व य उपात्रां मगूमग्र जल एक इरेग़ किहूरे छिउ इरेट मा পाর यिन के जन क्रक्षवर्ग इय उत्व अनुमान इरेड शीदि य ইহার ভিতর কোন প্রকার সার বস্তু আছে এই জন্য এ সমুদয় জল প্লাটনম কিন্তা কাচের বাটিতে রাখিরা অগ্নিতে শুক্ষ করিবে পরে ঐ শুক্ত মৃত্তিকা এক মুচিতে রাখিরা অগ্নিতে পোড়াইলে ঐ মৃত্তিকার রুশ্বর্ণ আর থাকিবে না কিন্তু বারুতে উড়ে যায় এমৎ কোন বল্প যথা নাইট্রিক র্যাসিড কিন্তা এমোনিরা থাকে তাহা হইলে অগ্নি সমস্পর্শে নফ হইরা যাইতে পারে এই জন্য সকল বস্তু নিরীক্ষণ করিতে হইলে যে মৃত্তিকা পোড়ান হর নাই তাহা লইরা উক্ত হুই বস্তু পরীক্ষা করিবে আর সকল মৃত্তিকার ভিতর ক্লোরাইড অবশ্য থাকিতে পারে এই জন্য আর মৃত্তিকা পোড়াইবার সময়ে অগ্নি যত কম হইবে তুই ক্লোরাইড সকল নফ হইরা যাইতে পারিবে না।

মৃত্তিকা পোড়াইয়া ইহার সার বস্তু নফ হইলে ইহাকে জল মিগ্রিত নাইট্রিক এসিডের সহিত মিগ্রিত করিবে। যদি ইহাতে এমৎ কোন বস্তু থাকে যে তাহা ঐ র্যাসিডে ত্রব না হর তবে ইহা সিলিকা নিশ্চর হইবে পরে সেই সিলিকা ছাকিয়া ফেলিয়া ঐ র্যাসিড মিগ্রিত জলে এমোনিয়া এত পরিমাণে ঢালিয়া দিতে হইবে যে তাহাতে র্যাসিডের অন্ন শুণ কিছু না থাকে এবং এমোনিয়ার গুণ কিছুই না থাকে। অন্তর্ম প্রমাণ করিবার জন্য লিটন্মন কাগ্চ আবশ্যক করে। এবং অন্ন নাশা গুণ প্রনাণ করিবার জন্য লিটন্মন কাগ্চ আবশ্যক করে। এবং অন্ন নাশা গুণ প্রনাণ করিবার জন্য ইরম্বিক বা হরিদ্রা লিপ্ত কাগ্জ আবশ্যক অন্ন নিটন্মন কাগজেও অন্ননাশক ত্রব্য হরিদ্রা লিপ্ত কাগজে আবশ্যক অন্ন নিটন্মন কাগজেও অন্ননাশক ত্র্ব্য হরিদ্রা লিপ্ত কাগজে প্রকাগজে দিলে কাগজে লাল হইয়া উঠে যদি উভয় কাগজ ঐ জলে দিলে লাল না হয় তবে ঐ জলে অন্ন ও

অন্নশাশক দ্রব্য কিছু মাত্র নাই এই জল হুই গুণ বিহীন হুইলে পরীক্ষার যোগ্য হুইবে পরে এ জল লইয়া যে পরীক্ষা করিতে হুইবে তাহা হুই প্রকার প্রথমত গুণ পরীক্ষা দ্বিতীয় পারিমাণিক পরীক্ষা।

छन পরীক।।

এই পরীক্ষার দ্বারা মৃত্তিকার যোগা বিচ্ছেদ করিয়া যদি কেবল গুণের দার। ইহার উপাদান সকল নিরূপণ করিতে হয়, তবে তাহাকে গুণ পরীক্ষা কহে। যদি এ মৃত্তিকায় নাই-টেট সকল থাকে তবে এ মৃত্তিকাকে শুষ্ক করিয়া পোড়াইলে পট পট শক উৎপন্ন হইবে কিন্তু বিশেষ রূপ সপ্রমাণ করিতে হইলে যখনই মৃতিকা শুষ্ক করা হইয়াছিল তখনই ইহাতে দ্রাবক ও গ্রিন প্রোটসলফেট অফ আইরণ জল মিশ্রিত করিয়া দিলে উহাতে যে পরিমাণে নাইটিক য়্যাসিড থাকিবে তত পরিমাণে ইহা কটা বর্ণ হইয়া উঠিবে। নাইটেট অর্থাৎ নাইটিক য়্যাদিড যাহার সহিত মিশ্রিত থাকে যেমন নাইট্রিক য়্রাসিড্পোটাসের সহিত মিশ্রিত হইয়া সাল্টপিটর বা সোয়ারার উৎপত্তি হইয়া মৃত্তিকার ভিতর কোন কোন স্থানে দেখিতে পাওরা যায়। নাইটেট ज्यक (माण ना ज्यक्लाइम, ना ज्यक मार्गानिमिय़ा धरे সকল পৃথিবীর নানাস্থানের মৃতিকায় দেখিতে পাওয়া याग्र। किन्छ इत्कात्र जिंडत नाइट्रिंगे जक् नाइम এवर নাইট্রেট অফ পোটাশ দেখিতে পাওয়া যায় না। নাইট্রিক য়্যাসিড জলের সহিত মিশ্রিত করিলে উতাপ বহির্গত হয়। এবং যে শিশির ভিতরে ইহাথাকে ইহার
ছিপি খুলিলে খেতবর্ণ ধুম বহির্গত হয় ইহা আমাদিগের
চক্ষুর কোন স্থানে লাগিলে সেই স্থান হরিদ্রাবর্ণ হইয়া যায়
স্বর্ণ এবং প্লাটিনম ভিন্ন অন্য কোন ধাতুর সহিত মিশ্রিত
করিলে ইহার অক্সিজনের কিয়দংশ ঐ ধাতুর সহিত মিশ্রিত
হইয়া যায় ইহা তদবস্থায় নাইট্রুম অকজাইট রূপে পরিণত হইয়া থাকে। এই বস্তুতে বায়ু সংলগ্ন হইলে লালবর্ণ
হইয়া যায়।

বিনকজাইড অফ টীন ও অকজাইড অফ এণ্টিমণি ব্যতিত আর সকল ধাতু ইহাতে তাব হইয়া থাকে। স্বৰ্ণ এবং প্লাটিন নম ইহার সংযোগ কিছু পরিবর্ত্ত হয় না। এই জন্য নাইন ট্রিক য়াসিড সংযোগে উক্ত ভূই ধাতুতে অন্য কোন ধাতু মিশ্রিত থাকিলে তাহা তাব হইয়া যায় এবং স্বর্ণ ও প্লাটিনম তদবস্থায় থাকে কিন্তু যদি চারি অংশ হাইড্রোক্লোরিক এসিড এবং এক অংশ নাট্রিক য়াসিড মিশ্রিত করা যায়, তবে এক তাব্যকর বস্তু প্রস্তুত হইবে। ইহাকে একোয়ান রিজিয়া কহে। ইহার সংযোগে স্বর্ণ ও প্লাটিনমের পাতা ত্রব হইয়া যায়।

যদি পূর্বে উক্ত দৃত্তিকায় এমোনিয়া থাকে তবে প্রস্তুত করা জল এক কাচের চুক্তিতে রাথিয়া ইহাতে প্রশা কিষা কাফিকপোটাশের জল মিশ্রিত করিয়া অয়ির উত্তাপ সংল্লয় করিলে এমোনিয়ার গন্ধ বহির্গত হেইবে কিন্তু যদি ঐ গন্ধ বহির্গত না হয় তবে কাচের ছড়ি হাইড্রোক্লোরিক এসিডে ভিজাইয়া এই চুক্তির মুখে ধরিলে ধুম উদ্ভব হইতে

থাকে এবং ত্রে লিটমশ কাগজ ইহার মুখে ধরিলে নীলবর্ণ হইবে এবং চূঙ্গির মুখ হইতে ঐ কাগজ অপাদারিত করিলে ইহার স্বাভাবিক বর্ণ প্রাপ্ত হইবে।

যদি ঐ জলে দ্রাবক কোন মিশ্রিত অবস্থায় থাকে তবে ঐ জলের এক অংশ অন্য চূচ্চিতে রাখিয়া তাহাতে নাই-ট্রেট অফ ব্যারিটা সংযোগ করিলে শ্বেতবর্ণ পলি বহির্গত इहेल এবং তাহা ছাকিয়া লইলে সলফেট অফ ব্যারিটা দেখিতে পাওয়া যায় কিন্তু মদি ঐ জলে কোন প্রকার কারব্যনেট থাকে তবে পলি বহির্গত হইবার অনেক প্রতি বন্ধকতা হইতে পারে এই জন্য ব্যারিটা সংযোগ করিবার পূর্বের এ জলে ত্রই চারি কোটা নাইট্রিক র্যাসিড তালিয়া দিলে ঐ প্রতিবন্ধকতা আর থাকিবে না যদি ঐ জলে ক্লোরিন কিন্তা হাইড্রোক্লোরিক য়্যাসিড থাকে তবে ইহার এক অংশ এক কাচের চুন্সিতে রাখিয়া তাহাতে প্রথমে ত্বই চারি ফোটা নাইট্রিক য়্যাসিড ঢালিয়া দিবে পরে ইহাতে নাইট্রেট অব দিলভর বা কাফকির জল মিশ্রিত করিলে সরের ন্যায় বস্তু উপরে বাহির হইবে এই সর আলোতে বাহির করিলে কৃষ্ণবর্ণ প্রাপ্ত হইবে ইহা নাইট্রিক য়্যাসিডে জাব্য নহে কিন্তু এমোনিয়াতে জব হইয়া থাকে ক্লোরাইড অফ সোডিয়ম বা লবণ প্রায় সকল মৃত্তিকায় थारक এই জন্য नाइट्रिंग्डेंग्ड जिंक जिल्ला मिल्डांत मश्राशिक उरक्तांर কিঞ্চিৎ ঘোরবর্ণ দেখায় কিন্তু আলোতে বাহির করিয়া वाथित क्षवर्ण প्राथ इरेत यनि जे जतन कार्यति मकन থাকে তবে তাহাতে কার্কনিক র্যাসিড থাকা প্রযুক্ত হাই- ভ্রোক্লোরিক য়্যাসিড সংযোগে বিশ্ব উদ্ভব হয় কিন্তু কার্ব্ব-নেট সকল অতি অপপ পরিমাণে থাকিলে বিশ্ব উদ্ভব হয় না কারণ ইছা অতি অপপ প্রযুক্ত জলে দ্রব হইয়া থাকে যদি চ্নের জল ইছাতে মিশ্রিত করা যায় তবে ইছা কার্ব্ব-নেটদিগের সহিত মিশ্রিত হইয়া শ্বেত্বর্ণ পলি বহির্ন্ত করিবে এই কার্ব্বণেট অফ লাইম য়্যাসিডে দ্রব হইয়া যাইবে।

যে সকল বস্তু পরেতে পরীক্ষা করিতে হইবে তাহাদিগের জন্য ঐ জল ভিন্নং পাত্রে রাখিয়া উপযুক্ত বস্তু সংযোগে তাহাদিগকে বাহির করিতে হইবে কিন্তু ঐ জলের
যে বস্তু প্রথমে না করিলে অন্য সকল বস্তু কখনই বাহির
করা যাইতে পারে না। তাহাদিগকে অত্যে বাহির করিবার
একটি প্রণালি অবলয়ন করিয়া পরীক্ষা কার্য্য নির্মাহ
করিতে হইবে অর্থাৎ যে বস্তু অত্যে বাহির করা আবশ্যক
তাহার জন্য পরীক্ষা অত্যে করিতে হইবে এবং দিতীয়
তাহার পরে বাহির করিবে এই রূপ ক্রমশঃ একটির পর
আর একটা বাহির করিতে হইবে। এই পরীক্ষার জন্য উক্ত
জল অধিক আবশ্যক করে এবং ইহাতে সার বস্তু কিছুমাত্র
থাকে না।

যদি পূর্বের পরীক্ষায় নিরপণ হয় যে ঐ জলের ভিতর দাবক আছে তবে ইহাতে ক্লোরাইড শফ বেরিটা ক্রমণ সংযোগ করিয়া সমুদয় গন্ধকের ভাগ বহিচ্চ্ ত করিবে পরে ইহার পলি ছাঁকিয়া লইলে যে জল থাকিবে ইহাতে অধিক পরিমাণে এমোনিয়া সংযোগ করিলে যদি ইহার বর্ণ ভাত্রের ন্যায় হইয়া উঠে তবে ইহাতে পরেক

জাইড অফ আইরণ আছে নিরূপণ হইবে এবং বায়তে বাহির করিলে যদি ইহ। অধিকতর রক্ষবর্ণ হয় তবে ইহাতে मानिरानिमि जाए निक्रभन इरेट किन्छ यनि रेश (शंज्यन অাঠার ন্যায় হয় তবে ইহার ভিতরে এলুমিনা বা ম্যাগনে-দিয়া আছে অথবা এই ছুই বস্তুই আছে বুঝিতে ছইবে কিন্তু যদি ইহাতে উক্ত চারি বস্তুই থাকে তবে ঐ জলের রঙ্গ কিছু ঘোর বর্ণ হইবে যদি এই জলে হাইডেুাক্লোরিক র্যাসিড এবং এমোনিয়া অধিক পরিমাণে সংযোগ করা হয় তবে ম্যাগনে সিয়া ওম্যানগোনিসি দ্রব হইয়া যাইবে কিন্তু এলুমিনা ও পরেকজাইড অফ আইরণের পলি বহির্গত रहेता। ५३ পिलिएक भीख छाकिया के छाकिनीत छे भन्न छे छम রূপে চোয়ান জলে ধেতি করিবে যদি ঐ পালি মিশ্রিত জলে কাফিক পোটাশ অধিক পরিমাণে ঢালিয়া দেওয়া যায় তবে এলুমিনা দ্রব হইয়া যাইবে এবং পরেকজাইড অফ আইরণ বহির্গত হইবে একণে ইহাতে জল ঢালিয়া নিবে নতুবা কাষ্টিক পোটাশ দ্বারা ছাকনি কাগজ नके रहेशा याहरव পরেকজাইড অফ আইরণ এই क्र. ११ विভिन्न रहेश। পড়িলে অবশিষ্ট জল যাহ। (পोरोम मश्योरी एव इहेशाए जोहार होहेए राजा-রিক এসিড এমৎ পরিমাণে সংযোগ করিবে যে তাহাতে পোটাশের অমনাসক এবং য়্যাসিডের অম গুণ কিছুমাত্র থাকিবে না এবং তাহা পূর্বোক্ত হুই প্রকার কাগজে পরীক্ষা कतिया (मिथित পরে এ জলে এমোনিয়া সংযোগ করিলে শ্বেত্বর্ণ আঠার ন্যায় এলুমিনার পালি বহির্গত হইবে যদি

জলে ফদফেট দকল থাকে তবে পরেকজাইড অফ আই-রণ এলুমিনার ফশফরিক এশিডের সহিত সংযুক্ত হইয়া थाकित। इंडािनगरक रा श्रकात वार्डित कतिए इंडेरव তাহা পরে লিখিব। এলুমিনা বাহির করিবার জন্য এমো-निय़ा मश्यार्थ य जल अमनांगक इहेग्राइ डाइरिड श्रनक হাইড্রোক্লোরিক য়্যাসিড এমৎ পরিমাণে যোগ করিবে যে তাহাতে এমোনিয়াও য়্যাসিডের গুণ কিছুমাত্র থাকে না পরে इशां मनका इंड जक अत्यानिया मश्याभ कतिल मन एक है অফ ম্যানগোনিসের পলি সকল মাংসবর্ণ ধারণ করিরা বহি-ৰ্গত হইবে। যদি এই বস্তু অতি অপা হয় তবে যদবধি উহা স্থিত না হয় তদবধি ইহা দেখিতে পাওয়া যাইবেনা। পরে रेश हैं। किल मलिए देव विक मानिश्वाम विश्वि रश এবং অবশিষ্ট যে জল থাকিবে যদি তাহাতে চুন থাকে তবে তাহাতে হাইড়োক্লোরিক য়্যাসিড সংযোগ করিয়া অগ্নি উত্তাপ সংলগ্ন করিলে সলফাইড অফ এমোনিরম **रहेर जनिक हैर इन्हेर है अब शक्त रिक्र इंग्र** शहर के গন্ধ নিবারণ হইলে যদি এ জল ঘোলা বোধ হয় তবে গন্ধকের পলি পড়িয়া এরপ হইয়াছে ইহাকে ছাঁকিলে গন্ধক বহি-ৰ্গত হইয়া যাইবে। পরে অবশিষ্ট যে জল থাকিংৰ তাহাতে এমোনিয়া সংযোগ করিলে কিঞ্চিৎ অমনা ক হইবে এবং ইহাতে অকজেলেট অফ এমোনিয়া দিলে অকজেলেট অব लाहेरमत शिल विदिर्गा इहरत। हेहा उएक्स गिए हैं। किएल কখনই বহিৰ্গত হইবেনা। কিঞ্ছিৎকাল ইহাকে উত্তপ্ত স্থানে রাখিয়া ছাকিলে পলি নির্গত হইবে পরে এ জল সাবধানে

এক কাচের কিম্বা প্লাটিমম পাত্রে রাখিয়া উত্তাপ দ্বারা एक कतित्व धार्मानियात अश्म नके इहेश याहत्व। भारत रेर्राट जल जिल्ला मिटल ममूनांश छिलिशा यारेट यिन ইহার কোন অংশ জলে দ্রবনা হয় তবে দুই চারি ফোট। হাইড্রোক্লোরিক য়্যাসিড ইহাতে দিলে সমুদয় এব হইবে পরে যে লাল অকজাইউ অফ মর করিতে নাইট্রিক র্যাসিড কিয়া অন্যকোন দ্রব্য মিশ্রিত নাই তাহা এ জলের সহিত মিশ্রিত করিয়া শুষ্ক করিবে পরে ইহা জলে গুলিলে ম্যাগ-নেসিয়া ও অকজাইড অফ মরকরি দ্রব হইবে না কিন্তু পোটেসিয়ম ও সোডা দ্রব হইরা যাইবে পরে ঐ জল ছাকিলে যে পলি বহিৰ্গত হইবে তাহা ধৌত করিয়া অগ্নিতে শুষ্ক করিলে অকজাইড অফ মরকরি নষ্ট হইয়া যাইবে এবং ম্যাগ্নেশিয়া বহিগত হইবে। ম্যাগ্নেশিয়া বহিৰ্গত হইলে অবশিষ্ট যে জল থাকিবে তাহা অগ্নিতে শুক্ষ করিয়া ইহার কিয়দংশ প্লাটিনম তারে সংলগ্ন করিয়া অগ্নির শিখায় ধরিলে যদি ইহা হরিদ্রাবর্ণ হয় তবে ইহাতে সোডা আছে নিরূপন হইবে কিন্তু পোটাশ বহির্গত করি-বার জন্য ইহাকে পুনশ্চ জলে গুলিতে হইবে এবং তাহাতে টারটেরিক য়াসিড সংযোগ করিলে ইহাতে পোটাশ शक्ति इंश्व शिल मकल माना वाधिया वाहिषेत्रि जक পোটাশ রূপে পরিণত হইবে কিয়া পরক্লোরাইড অফ প্লা-টিনম সংযোগ করিলে হরিদ্রাবর্ণ পলি সকল পূর্কস্থিত ত্বই চারি ফোঁটা হাইডোক্লোরিক য়াসিড সহকারে ক্লোরা-ইড অফ পোটাসিয়ম এবং প্লাটিনম উৎপন্ন হইবে।

সোডার পলিজযুক্ত অবস্থায় বাহির হইতে পারে বাইটারট্রেট অফ পোটাশ ছাঁকিয়া লইলে অবশিষ্ট যে জল
থাকিবে তাহাতে কফিক পোটাশ সংযোগ করিলে ইহা
অম নাশক ও অমকর গুণ হইতে বিরত হইবে পরে ইহাকে
ছাঁকিলে বাইটারট্রেট বিভিন্ন হইয়া যাইবে এবং ইহাতে
জল মিশ্রিত এণ্টিমণিয়েট সোডা বহির্গত হইবে ইহা বাই
টারট্রেট অফ পোটাশের সদৃশ।

যদি প্র মৃতিকায় ফসফরিক য়্যাসিড বাহির করিতে হয় তবে পূর্বেতে প্র মৃতিকা পোড়াইয়া যে প্রস্তুত করা হইয়াছিল তাহার এক অংশ এক কাঁচের চুলিতে ঢালিয়া তাহাতে পরক্রোরাইড অফ আইরণ মিশ্রিত করিবে যদি পূর্বেকার পরীক্ষায় নিরপণ হইয়া থাকে যে পরেকজাইড অফ আইরণ ও এলুমিনা অতি অপ্য পরিমাণে আছে তবে তাহাতে এমানিয়া অধিক পরিমাণে ঢালিয়া দিলে পলি বহির্গত হইবে এবং অবশিষ্ট জল আত্তে আতে ঢালিয়া ফেলিবে পরে ইহাতে চোয়াম জল ঢালিয়া ফেলিবে এবং ইহাতে এসিটিক য়াসিড যোগ করিলে যদি প্র পালির কোম অংশ দ্রব না হয় তবে ফসফরিক এসিড আছে নিরপণ হইবে।

যদি সৃত্তিকার ভিতর তাম বেরিটা প্রভৃতি অন্যান্য বস্তু থাকে তবে ইহাদিগের পরীক্ষার জন্য যে সকল বস্তু ইংরাজী রাসায়নিক গ্রস্থে অবধারিত আছে তাহাদিগের সংযোগে উক্ত বস্তুদিগকৈ নিরূপণ করিবে পরে সকল বস্তু নিরূপণ করা ছইলে তাহাদিগের নাম এবং তাহাদিগের পরীক্ষায় যে সকল সিদ্ধান্ত হইয়াছে তাহা সমুদয় লিখিয়া রাখিবে।

পরিমাণিক পরীকা।

ওণ পরীক্ষার দ্বারা মৃত্তিকায় যে সকল উপাদান নির-পণ হইবে তাহারা মৃত্তিকার ভিতর কি পরিমাণে আছে তাহা অবগত হওয়া অত্যন্ত আবশ্যক। এই পরীক্ষায় মৃত্তিকার হুই অংশ লইবে। এক অংশ জল দ্রাব্য এবং অন্য অংশ জল দ্রাব্য নহে। অর্দ্ধ কিম্বা এক পৌও মৃত্তিকা পূর্বেবাক্তরূপে চোয়ান জলে গুলিয়া সিদ্ধ করিবে পরে ছাকিয়া কেবল ইহার জল দ্রাব্য অংশ লইবে। কিন্তু দ্রাব্য বিহীন অংশ শুষ্ঠ করিয়া ওজন করিলে হুই অংশের পরি-মাণ জানা জাইতে পারিবে, পরে জল দ্রাব্য অংশ এক কাচের কিন্তা প্রাটিনম নিমিত্ত এক মুচিতে রাখিয়া অগ্নির উত্তাপে শুষ্ক করিলে ইহার ভিতর যে সকল উদ্বায়ু দ্রব্য আছে তৎসমুদয় বহিৰ্গত হইয়া যাইবে কিন্তু ইহাতে উদ্ভিজ ও জন্তু পচা সার থাকিলে তাহা ঐ সামান্য উত্তাপে নফ इरेरव ना। এই छूटे वस अर्थाए मात्र अवा अ छेवात्र वस नाह-টেট সকল এমোনিয়াও লবণের পরিমাণ ভিন্ন ভিন্ন রূপে জানা যাইতে পারিবে না। এই জন্য ইহাদিগের পরিমাণ একত্রে ধরিয়া লইতে হইবে। মুচির ভিতর যে শুষ্ক মৃত্তিক। আছে তাহা পোড়াইয়া লাল করিবে এবং যে অবধি ইহার ক্ষধ্বর্থ না যায় ভদব্ধি অগ্নিভে রাখিতে হইবে। পরে

আয় হইতে ইহাকে স্থানান্তরিত করিয়া ওজন করিলে যাহা
কিছু কমিয়া যাইবে তাহাই সার এবং উদ্বায়ু বস্তুর পরিমাণ
হইবে, পরে যে সকল পরীক্ষা করিতে হইবে তাহাতে
ছাকনি কাগচের পরিমাণ বাদ দিতে হইবে এই জনা
আফিন সাহেবের রুত যে ছাকনী কাগজ আছে তাহাই
এই সকল পরীক্ষার ব্যবহার করা কর্ত্তর। এই সকল
কাগজ গোলাকার ও ওজনে সকলের পরিমাণ সমান
আছে। যথন ছাকনী কাগজে ছাঁকা দ্রব্য সহিত পোড়াইতে হইবে তথন প্রথমে ঐ কাগজের কিনারা সকল একক্রিত করিয়া ঐ ছাঁকা দ্রব্য সকল এক মুচিতে ঢালিতে
হইবে এবং অবশিক্ত যাহা কিছু কাগজে লাগিয়া থাকিবে
তাহা ঐ কাগজ সহিত এক চিমটাতে ধরিয়া অয়ির শিখায়
পোড়াইয়া ইহার ভন্ম সকল ঐ মুচিতে রাখিবে।

মৃতিকার জল দ্রাব্য অংশ পোড়াইয়া ইহার সার বল্প
নাট করিয়া ওজন করা হইলে যদি ইহার ভিতর বালির
অংশ কিছু মাত্র থাকে তবে ইহাতে তুই চারি ফেঁটা নাইট্রিক য়াসিড সংযোগ করিয়া তাহাতে কিঞ্চিৎ জল মিশ্রিত
করিবে। পরে উত্তাপ সংলগ্ন করিলে যদি দ্রাব্য বিহীন
কোন বস্তু থাকে তবে তাহা বালির অংশ ইবৈ সন্দেহ
নাই, পরে ইহাকে ছাকনি কাগজে ছালিয়া পৃথক করা
হইলে অবশিফীংশকে ধৌত করিবে অনন্তর পোড়াইয়া
ইহার কাগজের ভন্মের ওজন গ্রহণ করিবে পরে
অবশিষ্ট যাহা কিছু থাকিবে তাহা তরল অবস্থায় কিয়া শুক্ষ
অবশ্বায় ওজন করিয়া তিন সমান অংশে বিভাগ করিবে।

উক্ত তিন অংশের মধ্যে এক অংশ লইয়া ইহার ভিতর
সলকিউরিক য়াসিড আছে কি না তাহা নিরপণ করিবার
জন্য ইহাতে নাইটেট অফ বেরিটা ওজন করিয়া সংযোগ
করিলে যদি ইহাতে সলফিউরিক য়াসিড থাকে তবে সান্
মান্য উত্তাপ সংলগ্ধ করিলে বেরিটা গন্ধকের সহিত মিশ্রিত
হইয়াপলি বহির্গত হইবে।এই পলিকে সলফেট অফ বেরিটা
ক:হ, পরে এই জল ছাকনী কাগজে ছাঁকিলে পলি সকল
বাহির হইবে এবং পলি সহিত কাগজ পোড়াইয়া ভন্মের
পরিমাণ বাদ দিলে পলির পরিমাণ নিরপণ হইবে, পরে
ইহাকে .১৪৩২২ গুণ করিলে সলফিউরিক য়াসিডের পরিন্
মাণ নিরপণ হইবে।

ক্লোরিণ – ছাকনি কাগজে ছাকিয়া অবশিষ্ট যে জল গাকিবে তাহাতে নাইট্রেট অফ সিলবর অর্থাৎ কাষ্টকির জল সংযুক্ত করিরা অগ্নিতে ছুই চারি মিনিট সিদ্ধ করিলে যদি ইহাতে ক্লোরিণ থাকে তবে পলি বহির্গত হইবে পরে ঐ পলিকে ছাকিয়া ধেতি করিয়া শুদ্ধ করিবে এবং ছাকনী কাগজ হইতে এক কাচের মুচিতে ঢালিয়া পোড়াইবে পরে ওজন করিয়া কাগজের পরিমাণ বাদ দিলে যাহা অবশিষ্ট থাকিবে তাহাকে .২৪৬৯৫ দারা গুণ করিলে ক্লোরিণের পরিমাণ নিরূপণ হইবে। অকজাইড অফ আইরণ—অবশিষ্ট থে জল থাকিবে তাহাতে নাইট্রেট অফ বেরিটা ও নাইট্রেট অফ সিলবরের অংশ কিছু থাকিতে পারে কিন্তু ইহাদিগকে বাহির করিয়া নিবার জন্য যদি ঐ জলে হাইড্রোক্লোরিক রাণিড ঢালিয়া শেওরা যায় তবে সিলবার পৃথক হইবে

এवर किष्ठिर मलिक देतिक ग्रामिक जालिया मिल (वितिषे) স্থানান্তরিত হইবে। উক্ত গ্লই র্যাসিড ঐ জলে মিভিত করিয়া উত্তাপ সংলগ্ন করিলে পলি বহির্গত হইবে এই পলি मकल ছাকিয়া জলে ধেতি করিয়া লইবে পরে অবশিষ্ট যে জল থাকিবে ভাছাতে এমোনিয়া সংযোগ করিলে ইহার ভিতর যে নাইট্রিক য়্যাসিড উৎপত্তি হইয়া থাকিবে তাহার অমগুণ সমুদয় নফ হইয়াযাইবে এবং নাইট্রেট অঞ अस्मिनिया छे९ পতি इहेया गानिस्तिनित अ गार्शितिमार्थ পলি বহির্গত হইতে নিবারণ করিবে। পরে যদি ঐ জলে অধিক পরিমাণে এমোনিয়া ঢালিয়া দেওয়া যায় তবে অক-জাইড অফ আইরণ ও এলুমিনার পলি বহির্গত হইবে। উক্ত পলি ছাকনি কাগজে ছাকিয়া কাচ পাত্রে সংস্থাপন করিবে এবং যাহাতে ইহার মধ্যে বায়ু প্রবেশ করিতেনা পারে তজ্জনা অন্য একখণ্ড কাঁচের দারা তৎক্ষণাৎ আর্ভ করিয়া রাখিবে পরে ওজন করিয়া মিউরিয়েটিক য়্যাসিড দারা কাগজ হইতে এ পলি দ্রুব করিয়া অন্য পাত্রে রাখিবে এবং ইহাদিগের ছাকনি কাগজ জল মিশ্রিত য়াপিড দারা ধৌত করিয়া ঐ পাত্তে ঢালিয়া রাখিবে পরে এ মিউরিয়েটিক র্যাসিড মিশ্রিত জলে কঠিক পোটাশ मश्युक कत्रित्न অধिक পোটাদের দারা अविमा जाना হইয়া যাইবে এবং অকজাইড অঞ্চ আইরণ বহির্গত হইবে পরে ইহাকে ছাকিয়া ধেতি করিবে অনন্তর অগ্নাতাপে শুষ্ক করিয়া ওজন করিবে।

অকজাইড অফ আইরণ ছাকিয়া অবশিষ্ট যে জল

था किरव তा হাতে হাইডে । ক্লোরিক য়াসিড ডালিয়। ইহার অমনাশক গুণ সমুদয় নফ করিবে। তৎপরে কার্কনেট অফ এমোনিয়ার জল ইহাতে ঢালিয়া দিলে এলুমিনার পলি বহিৰ্গত হইবে কিন্তু এই পলিতে পোটাশ থাকিতে পারে। এই জন্য পলি ছাকিয়া ধৌত করিবে এবং পুনশ্চ इंशेट राईए क्रिकि ब्रामिए मः योग क्रिल छेर। जित इहेश्री योहेर्द अवश क्षे क्षांकिन कांगक क्षीं कि कित्रिश তাহার জল উহাতে সংযুক্ত করিবে পরে ইহাতে কার্বনেট অফ এমোনিয়া সংযুক্ত করিলে এলুমিনার পলি বহির্গত পরে ইহা ছাকিয়া ধৌত করিলে বিশুদ্ধ এলুমিনা বহির্গত হইবে। এই এলুমিনা শুষ্ক করিয়া পোড়া-इत्न শ्विज्वर्ग इहरन अवर हेहारक उज्जन क्रिय़ा छाकनि কাগজের ভদ্মের পরিমাণ বাদে ইহার পরিমাণ জানা যাইতে পারিবে। লাইম অর্থাৎ চুন যে জল হইতে এলু-মিনা ও অকজাইড অফ আইরণ বহির্গত হইয়াছে। তাহাতে जकरक्राल जिक अस्मानिया मश्याम करितल य পनि वहि-र्गठ इस्टि ठाइ। जक जिल्ला कि ठाक लास्म। स्टाक ३२ घणे। উত্তাপিত স্থানে রাখিয়া ছাকনি কাগজে ছাকিয়া ধৌত করিয়া শুষ্ক করিবে। পরে অগ্নিতে পোড়াইয়া কাগজের ज्या अ कार्काता ज्या नाहम अहे इहे अजन वाम मिल याहा অবশিষ্ট থাকিতে তাহাকে ৫৬৬৫৭ দিয়া গুণ করিলে চুনের ওজন জানা যাইতে পারিবে।

অকজাইড অফ মাানগোনেসি—অকজেলেট অফ লাইম বাহির করিলে অবশিষ্ট যে জল থাকিবে তাহাতে সল- काइंड जक अधानिया मश्यां कतिल एय शल विदर्शंड इहेर्य जोश्री मलिकिউরেট অব ম্যানগোনেসি ইহাকে ছাকনি কাগজে ছাকিয়া জলে ধেতি করিবে পরে ইছার আত্র অবস্থায় ইছাতে হাইড্রোক্লোরিক য়্যাসিড ঢালিয়া ইহাকে কাগজ হইতে পৃথক করিবে এবং কাগজ খৌত করিয়া জল এমং পরিমাণে দিতে হইবে যাহাতে ঐ য়াদিডের কার্যা नियांत्र श्रहेरव। यमि ओ शिम भिमिष्ठ खरन मनक्छिरद्रिष्ठ शहरणारकात्वत गन्न विश्वि इश उत्व हेशांक मिक क्रिशां ্র গন্ধ নিবারণ করিবে এবং গন্ধকের কোন অংশ যদি इशां भारक जाद जाश क्रांकिश शृथक क्रिया এ পলি মিশ্রিত জল এক কাচের বাটিতে রাখিয়া ইছাতে অধিক পরিমাণে কার্কনেট অব পোটাশের জল মিশ্রিত করিয়া সমুদয় শুষ্ক করনান্তর তাহাতে গ্রম জল মিঞিত क्रिल मगूम्य अन्याना वस्तु जाव रेरेया कार्यान ज्वा मान-গেনেসি বহির্গত হইবে এ পলি এক ওজন করা ছাকনি কাগজে জমা করিয়া ধৌত করিবে এবং শুক্ক করিবে পরে এক কাঁচের কিন্তা প্লাটনম মুচিতে রাখিয়া পোড়াইলে অকজাইড অব ম্যানগোনিসি বহির্গত হইবে পরে ইহাকে उद्धन करियो . ১००८১ मिया छन करितन हेरां अरियान পाইবে পরীকার জন্য জল মিগ্রিড মৃত্তিক ভিন অংশে विजाग करा इहेशां हिल छाइ। र मध्य ध्रथम जश्म इहेट করেক উপাদান বাহির করা ছইয়াছে তাহা সংগ্রহ করিয়া এক্ষণে শ্বিতীয় অংশ হইতে আর কএক উপাদান नाहित कतिए इहेर्न।

ম্যাগনেসিয়া ও অন্যান্য এলকেলাই অর্থাৎ অন্ন নাশক দ্রব্য সকল ক্লোরাইড হইয়া থাকিলে অতি সহজে পৃথক করা যাইতে পারে যদি এই পরীক্ষার্থ জলে দ্রাবক থাকে তবে ইহাকে বিভিন্ন করিবার জন্য ক্লোরাইড অব বেরিয়ম এমৎ পরিমাণে দিতে হইবে যাহাতে কেবল সমু-দয় দ্রাবক বিভিন্ন হইয়া পড়িতে পারে। এই জন্য ক্লো-রাইড অফ বেরিয়ম জল মিশ্রিত করিয়া অপ্প অপ্প করিয়া উহাতে দিবে যদি অধিক পরিমাণে মিশ্রিত হয় তবে ইহাকে বিভিন্ন করা স্বক্তিন হইবে।

ম্যাগনৈসিয়া এবং এলকেলাই ভিন্ন অন্য যে সকল বস্তু থাকিবে তাহাদিগকৈ বিভিন্ন করিবার যে সকল উপায় আমরা পূর্ব্বে প্রকাশ করিয়াছি তাহা অবলম্বন করিয়া উহাদিগকে বিভিন্ন করিতে হইলে এমত সাবধান হইতে হইবে যে ইহারা বিশুদ্ধরূপে ও নিশ্চিত পরিমাণে বিভিন্ন হইতে পারে এবং তাহাতে ম্যাগনেসিয়া ও এলকেলাই-দিগের কোন অংশ নম্ভ হইতে পারে না।

উক্ত উপাদান সকল বিভিন্ন ক্রিবার পরে ঐ জলে কেবল ম্যাগনেসিয়া ও এলকেলাই ক্লোরাইড সকল থা-কিবে। এক্ষণে ঐ জল শুক্ত করিয়া এক মুচিতে রাখিয়া পরে পোড়াইয়া ইহা এমৎ অপ্প লাল করিবে যে তাহাতে কেবল ইহার উদ্বায়ু বস্তু নফ্ট হইয়া যাইবে এবং ক্লোরাইড সকল এক্ষণে অতি অপ্প জলে গুলিয়া যাইবে। যদি ইহাতে ম্যাগনিসিয়ার কোন অংশ না গুলিয়া যায় তবে ইহাতে হুই চারি কোঁটা হাইডোক্লোরিক য়্যাসিড ঢালিয়া জব করিয়া

দিবে পরে সমুদয় একত্রিত করিবে এই জলে লাল অকজাইড অফ মরকরি মিশ্রিত করিয়া শুষ্ক করিবে পরে ইহাকে পুনশ্য धिं कतित्व (य जाशांक क्रांतिन किहूमां व शांकित्व ना। একণে এই জলে মাগানে সিয়া ও অকজাইড অফ মারকরি আছে এই জল শুষ্ক করিয়া পোড়াইলে ইহার পারার ভাগ ও কাগজ নম্ভ হইয়া যাইবে এবং অবশিষ্ট যাহা থাকিবে তাহা হইতে কাগজের ওজন বাদ দিলে মাাগনেসিয়ার माजा मः योगा मार्गानिमा वाहित क्रिए इहेरव छेल জলে ক্লোরাইড অফ এমেশনিয়ম এমৎ পরিমাণে সংযোগ করিতে হইবে যাহাতে এমোনিয়া সংযোগ করিলে পলি বহির্গত হইবে না। পরে ঐ জলে এমোনিয়া অধিক পরি-মাণে ঢালিয়া দিবে ও তাহাতে ফদফেট অব দোডা কিঞ্ছিৎ পরিমাণে মিভিত করিবে। ইহাকে উত্তমরূপে নাড়িতে ও বিলোড়ন করিতে হইবে পরে স্থিত হইলে ফসফেট অব পলির ভিতর শতকরা ৩৫,৭ পরিমাণে ম্যাগনেসিয়া शिक्टिं।

পোটান এবং সোডা—ম্যাগনেদিয়া বার্তি হইলে যে জল থাকিবে তাহা একণে শুষ্ক করিয়া অগ্নিতে পোড়া-ইলে মারকরির যে কিছু অংশ থাকিবে তৎসমুদয় নইট হইয়া যাইবে এবং এলকেলাইন ক্লোরাইড নকল অধিক ভাগ্নি উন্তাপে কিয়দংশ নই হইয়া যাইতে পারে এই

खना हेशिभारक অতি অপ্প পোড़ाईटिंड इहेरव। এक्स्ति ले মিশ্রিত ক্লোরাইড অব পোটাশিয়ম ও সোডিয়ম ওজন করিতে হইবে। পরে ইহাদিগকে বিভিন্ন করিতে হইলে ইহারা ওজনে যত হইবেক তাহার ৩০,৭৫ পরিমাণ প্লাটিনো বাইক্লোরাইড অব সোডিয়ম সংযুক্ত করিয়া मित्र भित्र मिखिङ खत्रा किश्विष छल मिल् शिलिय्रा याहित পরে ইহাতে অপ্প উত্তাপ সংলগ্ন করিয়া শুষ্ক করিবে এবং ले एक वखरक जनरका इन जिल्ला भिर्त भकन वख जव হইয়া যাইবে কেবল প্লাটিনো বাইক্লোরাইড অব পোটা-সিয়ম জব হইবেক না। পরে ইহাকে ডাকিয়া এবং এলকোহোল দিয়া ধৌত করিয়া ইহাতে অপা অগ্নির উত্তাপ দিলে ইহার পরিমাণ আর কমিয়া যাইতে পারিবে না এই বস্তু ওজনে যাহা হইবে তাহাকে .১৯৩০৭ দিয়া গুণ করিলে পোটাদের পরিমাণ নিরূপণ হইতে পারিবে। কিম্বা ৩০৫৩৫ দিয়া গুণ করিলে ক্লোরাইড অব পোটাসিয়মের পরিমাণ নিরূপণ হইবে পোটাসের পলি বহির্গত হইবার পূর্বের্ঘদি সমুদয় ক্লোরাইড দিগের ওজন হইতে ক্লোরাইড অব পোটাদিয়দের ওজন বাদ দেওয়া যায় তবে সোডার পরিমাণ নিরূপণ হইবে যে ক্লোরাইড অব সোডিয়ম উপস্থিত আছে তাহা .৫৩০০০ দিয়া গুণ করা যায় তবে সোডার পরিমাণ নিরূপণ হইবে। পরীক্ষার তৃতীয় অংশ জল হইতে ফসফরিক য়্যাসিড বাহির করিতে इइरित এই জল এমং পরিমাণে লইতে হইবে যে ইহা হইতে পলি বাহির হইলে তাহা ওজন করা হইতে পারিবে যদি

পূর্বকার পরীক্ষায় নিরূপণ হইয়া থাকে যে ইহার ভিতর ি লোহ আছে তবে ইহাতে লোহ মিশ্রিত করিবার আব-শাক নাই। কেবল ইহাতে চুই চারি ফোটা নাইটি ক য়াসিড সংযুক্ত করিয়া অগ্নিতে সিদ্ধ করিলে পূর্বের অক্সিজন মি-ভ্রিত লৌহ রক্ষিত হইবে কিন্তু যদি ইহার ভিতর না থাকে তবে ইহাতে এসিটেট অব পরেকজাইড অব আইরণ মিশ্রিত করিয়া অধিক পরিমাণে এমোনিয়া ঢালিয়া দিলে পলি বাহির হইবে এ পলি ধৌত করিয়া এদিটিক য়াদিডে ভিজাইয়া রাখিলে সকল উপাদান দ্রুব হইবে কেবল ফসফেট দিগকে ধৌত করিয়া শুষ্ক করিনে। পরে পোড়া-ইয়া ওজন করিবে। অনন্তর এই মিশ্রিভ ফশফেট দিগকে কষ্টিক পোটাসের জলে ভিজাইয়া রাখিলে ফসফেট অফ अनुमिन। अनः फनाएक । जान आहेत्। जाधिक आश्न फन-ফরিক এসিডে দ্রব হইয়া যাইবে পরে জল মিগ্রিত করিয়া ছাঁকিয়া ধৌত করিলে পরেকজাইড অফ আইরণ বহির্গত হইবে কিন্তু এই সকল কার্যের পর ইহার ভিতরে ফসফরিক शामिष थात्क এই जना हैशात्व राहे प्राप्ति का शामिष ঢালিয়া কাগজ হইতে পৃথক এবং ছাক্নি কাগা 🐙 (धोड করিয়া য়্যাসিড হইতে মুক্ত করিবে পরে ঐ য় সিড জলে এমোনিয়া এবং সলফাইড তাফ এলুমিনম সংযোগ করিয়া ইহার অম্রগ্রণ হইতে রহিত করিলে লৌহ সলফিউরেট किन्ना मनकाइँ इरेशा शिन विश्वि रहेरव अकर्ण अ मगूनत खल्ल कर्नकोल मार्गाना छेखांन मश्लध क्रिल

সমুদয় সলফিউরেটে তলভাগে স্থিত হইবে যদি জল সবুজ না হইয়া হরিদ্রাবর্ণ হয় তবে ইহা তলস্থ হইয়াছে যানা যাইতে পারিবে এক্ষণে ঐ সমুদয় সলফিউরেট এক ছাকনি কাগজে ঢালিয়া জমা করিবে এবং সলফাইড অব এমোনিয়ার জলে ধৌত করিয়া পরে সম্পূর্ণ রূপে ধৌত হইলে ঐ আর্দ্র অবস্থায় ইহাতে হাইড্রোক্লোরিক য়াসিড ঢালিয়া কাগজ হইতে পৃথক করিবে এবং ঐ কাগজকে ধুইয়া মেই জলদিবে। এক্ষণে ঐ য়াসিড মিশ্রিত জলে উত্তাপা সংলগ্ন করিয়া সলফিউরেটেড হাইড্রোজেনের গন্ধ নিবারণ করিবে। পরে ছাঁকিয়া গন্ধককে বিভিন্ন করিবে এবং কাগচকে ধেতি করিয়া পরিক্ষার করিবে। পরে অবশিষ্ট জলে ছই চারি ফোটা নাইট্রক য়াসিড সংযোগ করিয়া সিদ্ধ করিলে লোহ অক্সজনের সহিত আরও মিশ্রিত হইবে।

এক্ষণে ইহাতে অধিক এমোনিয়া সংযোগ করিলে পরেকজাইড অব আইরণের পলি বিশুদ্ধ অবস্থায় বাহির হইবে। পরে সমুদয় জলে উত্তাপ সংলগ্প করিলে পলি সকল পৃথক হইবে এই পলি সকল ছাকিয়া ধৌত করিবে পরে শুদ্ধ করিয়া পোড়াইলে বায়ুতে বাহির করিয়া গুদ্ধন করিবে এবং কাগজের ভন্ম বাদ দিয়া যাহা থাকে তাহাই পরেকজাইড অব আইরণ হইবে। পোটাসের দায়া যে ফসফেট অফ এলুমিনা দ্রাব্য হইয়াছিল এক্ষণে পরীক্ষার দায়া তাহা হইতে এলুমিনার ভাগ নিরপণ করিতে হইবে এই জন্য ইহাতে সিলিকেট অব পোটাসের জল মিশ্রিত করিয়া শিদ্ধ করিলে সিলিকেট অব এলুমিনা পৃথক হইতে

পারে ঐ জল ছাকিয়া পলি বাহির হইলে ইহাকে ধোত করিবে পরে উহাকে হাইডোক্লোরিক য়াদিডের সহিত মিশ্রিত করিয়া সাবধান পূর্বাক শুষ্ঠ করিলে শিলিকা मकल जारा विशेष आकारत পরিবর্তন হইবে। এই শুষ অবশিষ্টাংশ যৎকিঞ্চিৎ হাইডোক্লোরিক য়্যাসিডের সহিত ভিজাইয়া ক্ষণেককাল স্থিত হইলে ইহার দ্রাব্য অংশ জলে (धीं कित्रिय। अक्तर्ग अलुमिना ओ जनजारा अश्मित्र ভিতর ফদফরিক এসিড হইতে বিভিন্ন হইয়া থাকে ইহাতে कार्यान जिया अधानिया निल পनि विश्वि इहेरि। अहे পলিকে ধেতি করিয়া শুষ্ক করিবে পরে অগ্নিতে পোড়াইয়া उज्जन कतिरा। এই ऋপে लोছ এবং এলুমিনার ওজন যাহা পাওয়া হইল তাহা মিশ্রিত ফদফেট হইতে বাদ দিলে ज्यानिक योश थे। विद्य जोश रे फमफ्रिक ग्रामिए इ उजन হইবে। 🤚

জল দ্রাব্য অংশের পরিমাণিক পরিকা যে প্রকারে করিতে হইবে তৎসমুদয় সমাপ্ত করিয়া দ্রাব্য বিহীন অংশের পরিকা যে প্রকারে করিতে হইবে তাহার বিষয় এই স্থলে লিখিবার প্রয়োজন অভাব কারণ এই শ্রীকায় উক্ত সকল করিতে হইবে কেবল ভিন্ন প্রকরণ শান্ত।

माद्रत विषय १

যে বস্তু মৃত্তিকার সহিত মিশ্রিত হইলে মৃত্তিকার উৎ-পাদিকা শক্তি রৃদ্ধি পায় তাহাকে সার বলা যায়। এবং शांजु, डेर्रशांजु डे खिन् छछ हे जािनि नाना विध वस्तु विक्र इहेश। সাররপে পরিগণিত হয়, এই জন্য সার নানা একার। ক্রি-কার্য্যে সার ব্যবহারের প্রয়োজন এই যে উদ্ভিজ্ঞের মৃত্তিকার রস পান করিয়া থাকে কিন্তু উহাদের গতিশক্তি না থাকায় স্থানান্তর হইতে পানীয় বস্তু সংগ্রহ করিতে অক্ষম তৎ-श्रयुक मूलाप्ता मात श्रमान कतिला उमान महकाति তত্রতা মৃত্তিকার রস র্জি পাইয়া উদ্ভিজ্ঞাদিগকে পরিত্প करत। मात्र डेख्डिक इक्तित थाभाग कात्रन। यमि उर्कान কোন त्रक्षमृत्न गांत ना मित्न । তोश विक्रिं इहेर पृष्ठे হয় কিন্তু গ্রীম্মকালে তাহাদের বহুসংখ্যক পত্র তলায় পতিত হইয়া বর্ঘাকালে জলে পচিয়া মৃত্তিকার সহিত মিশ্রিত হইরা থাকে তাহাতে তথাকার রস রাদ্ধি পায় এবং জল প্রধান সার, তাহা বর্ষাকালে নিরন্তর মূলদেশে সংলগ হওয়াতে তাবদপ্ততেই রস যোজিত হয়।

জন্তুর সার।

জন্তর চর্ম, মাংস ইত্যাদি পচিয়া উত্তম সার হয়।
এতদ্যতিরিক্ত রক্ষ্যুলে রক্ত প্রদান করিলে তাহাও উক্ত
রপ সার হইয়া উঠে। যে হেতু রক্তই চর্ম মাংসের মূল
এই নিমিত্ত চারার পক্ষে সকলেই সমান উপযোগী। অন্তি
শৃদ্ধ, নখ, ইত্যাদিরও উক্তরূপ গুণ আছে।

जहात (मर, मर्मा अङ्डि পहारेश मोत कतिए रहेल তাহাদিগকে গর্ভে ফেলিয়া ত্রায় জীর্ণ হইবার নিমিত্ত তাহার উপরিভাগে চূণ ছড়াইয়া তহ্পরি মৃতিকা দিয়া পুতিয়া রাখিবে পরে ছুই তিন মাস গত হইলে তাহা তুলিয়া হুর্গন্ধ নিবারণ জন্য পুনর্কার চুণ দিয়া ক্ষেত্রে ছড়া-इशं मिद्र ।

অন্তি সকল ধূলার ন্যায় অভ্যন্ত চূর্ণ করিয়া দিলে প্রথম বংসর বিশেষ উপকালক হয় কিন্তু দ্বিতীয় বংসর তাদৃশ হয় मा धकार्य छेशिनिशा के जामृग हुन मा करिया প্রস্তারোপরি রাখিয়া লেছি নির্মিত কঠিন বস্তুর আঘাতদ্বারা কিছু স্থ ল রাখিরা ওঁড়া করিবে, পরে তাহা এক বৎসর ক্ষেত্র মধ্যে ছ ए दिल वहकान ममान छे भका इ देव। এই मात्र जनाना শमारिशका हेकू जरर (शंषु इहेट य मकन डेसिक डेर-পন্ন হয় তাহাদের পক্ষে অভান্ত উপযোগী। ইহার বিশেষ अन अरे (य स्ट्रांत मश्मर्ग मृक्ति। जाजान जाना थारक। যে ক্লেরে মৃত্তিকা স্বভাবতঃ আল্গাও উত্তাপিত তাহার পক্ষে देश महाश्रकातक। किन्छ (य क्लिक किन मृ लिकां त অংশ অধিক ভাহাতে অপেকাক্ত অধিক দিতে হইবে তাহা ना निम् अधिक छेशकांत नृष्ठे इस मा। वालुकामस क्लित धक वरमत धरे मात क्रमायं छ छ होति हुई जिन বৎসর উত্তম শস্য হইতে পারে।

ग्राम्बर ए ए। धर थए। पत (वीन कू नित्न (य मकन অবশিষ্ট ও ড়া থাকে তাহা তাহি গুড়া অপেক্ষা উৎক্লয়,

ভাষার ব্যবহার করিতে হইলে অগ্রো ভাষাকে গর্ভ মধ্যে পূর্বোক্তরূপ পঢ়াইতে হইবে।

অস্থি ভস্ম ও সিদ্ধা করিয়া সার করিলে তাহার স্বেহ দ্রব্য এবং অন্যান্য সারাংশ ন্ফ হওয়াতে তাদৃশ উপ-কার দর্শে না, এই নিমিত্ত তাহা না করিয়া গুড়া করাই সর্বতোভাবে বিধেয়।

মৃত দেহ, অস্থি ইত্যাদি সংস্পর্শ করা হিন্দু শাস্ত্র বিরুদ্ধ এই সকল ব্যবহার এদেশে প্রচলিত নাই, কিন্তু ক্ষবিকার্য্যের উন্নতি বিধানে কৃষকগণের ইহার ব্যবহার করা কর্ত্ব্য।

উদ্ভিজ্ঞ সার।

রক্ষের পত্র, শাখা প্রভৃতি গর্ত্ত মধ্যে পচাইলে গোম-গ্রের মত তেজস্বর সার হয় ক্ষবিকার্য্যে তাহার ব্যবহার অত্যন্ত আবিশ্যক।

মৃত্তিকার অনেক অধোভাগে যে বোধ মৃত্তিকা আছে তাহাও চারার পক্ষে অশেষ উপকারক। ঐ মৃত্তিকা রক্ষের পত্র, শাখা, প্রকাণ্ড, ইত্যাদি পিচিয়া উৎপাদিত হয়, ইহার বিষয় ভূতত্ত বিদ্যায় বিশেষ বর্ণিত আছে।

প্রকানী খনন করিয়া উদ্যান করিতে হইলে অগ্রে ঐ মৃত্তিকা সমভাবে চারাইয়া পশ্চাৎ চারা রোপণ করিবে ঐ মৃত্তিকার সংসর্গে উদ্যান ভূমির উৎপাদিকা শক্তি সাতিশয় রিদ্ধি পাইয়া চারাদিগকৈ অনায়াদে পরিপ্রট করে। অন্যান্য সার অপেক্ষা ইহার বিশেষ গুণ এই যে চারার মূলদেশে পচা পত্র গোময় প্রভৃতি সার প্রদান করিলে উই প্রভৃতি কয়েক প্রকার কীট উৎপন্ন হইরা চারার অভিনব কোমল শিকড় সকল কাটিরা কেলে, তাহাতে উন্যান সমূলে বিনফ হইবার বিলক্ষণ সন্তাবনা। কিন্তু বোধ মৃত্তিকা দিলে তাহার কোন শক্ষা থাকে না। এই নিমিত্ত গামলায় বীজ বপন করিতে হইলে অন্য সার না দিয়া বোধ মৃত্তিকা চিক্রণ মৃত্তিকা এবং বালি সমান অংশে মিশ্রিত করিয়া তাহাতে বীজ বপন করিবে। যখন এ মৃত্তিকা উদ্যানস্থ অন্য চারার মূলে দিতে হইবে তখন তাহাকে উত্তম গুড়া করিয়া দিবে।

উদ্ভিক্ত সারের মধ্যে খোল সর্ব্বাংশিকা উৎক্রয়। রক্ষ
মূলে খোল প্রদান করিলে তাহাতে তৈল থাকায় তত্রতা
মৃতিকার উৎপাদিকা শক্তি অতিশয় উত্তেজিত হয়, বিশেবতঃ সাস্থ্যরিক চারা খোল সম্পর্কে সরায় রিদ্ধি পায়।
রুষিকার্য্যে খোল ব্যবহার করিতে হইলে প্রথমতঃ ইহাকে
শুক্ষ করিয়া গুড়া করিতে হইবে। পরে যে ক্ষেত্রে চাস
দেওয়া হইয়াছে তাহাতে ঐ গুড়া ছড়াইয়া তাহার উপরিভাগে পুনর্বার লাক্ষল দারা যাহাতে খোল চাপা মাত্র
পড়ে, এইরপ অপা চাস দিবে। ঐ খোলের গুড়া সুটের
গুড়ার সহিত মিশ্রিত করিয়া ছড়াইলে বিশেষ উপকার
দর্শে। অনন্তর রুক্তির দারা বা জল সেচন করিয়া ঐ
মৃতিকা ভিজাইয়া রাখিবে। কিছু দিন ভদবস্থায় রাখিয়া
যখন চারা রোপণ করিতে হইবে তখন পুনর্বার কিছু
খোল ছড়াইতে হইবে, পরে চারা সকল বাড়িলে পুনর্বার
কিছু খোল দিতে হইবে। এইরপ তিন বার খোল দিলে

মূল দারা ভূমির উৎপাদিকা শক্তির আধিক্য দেখিতে পাওয়া যাইবে। কিন্তু খোলের অংশ অধিক হইলে চারা নফ হইবার সম্ভাবনা, এই নিমিত্ত বিঘা প্রতি এক মণ বা আবশ্যক হইলে ছই মণের অধিক কথন দিবে না।

মানিনার খোল তিল বা সর্বপ খোলের তুল্য। তেরা-ভার খোল সর্ব্বাপেকা উত্তম। উহার রস আকর্ষণ শক্তি অপেকারত অধিক থাকার উদ্ভিজ্ঞের মূল দেশে অধিক রস যোগাইরা তরার পরিবর্দ্ধিত করে এবং উহার সংসর্গে রক্ষের মূল সকল অপেকারত বড় হইরা থাকে। দোষের মধ্যে আস্বাদের বৈলক্ষণ্য হয়। আলু ক্ষেত্রে উক্ত খোল দিলে আলু সকল আকারে বড় এবং শ্বেত্বর্ণ হয়, কিন্তু ভাহার তাদৃশ আস্বাদ থাকে না।

ধাতু সার।

ধাতু সারের মধ্যে জল প্রধান বলিয়া গণ্য করিতে হইবে। কারণ জল ব্যতীত কবি কার্য্য কোনরপেই সম্পন্ন হইতে পারে না। জলের বিষয় পূর্ব্বে সবিস্তার বর্ণন করি রাছি তরিমিত তদ্বনি কান্ত না হইয়া যৎকিঞ্চিৎ প্রকাশ করিব। র্য্যির জল শিশীর ও নদীর জল এই তিন প্রকার বিশেষ সারের গুণ প্রকাশ করে। র্য্যির জলে ও শিশীরে যে এমোনিয়া আছে এই জন্য ইহায় এমোনিয়ার গুণ সহকারে সারের কার্য্য করে তরিমিত র্য্যি পজিলে উদ্ভিদ সকল র্ম্বিশীল হর কিন্তু শীতের প্রভাবে র্য্যি পতন হয় না। কেবল শিশীরের জলে উদ্ভিদসকল জীবিত থাকে। পরে গ্রীম্ম আসিয়া উপস্থিত হইলে র্থ্যি ও শিশীর অভাবে

ऐसिन সকল गृতবৎ হয় পূ**र्वकोल धोना (क**ा जनन ननीत जल भ्रोविङ इहेड जवर जे जल्ब शिल शिर्वा मृजिकांव উষ্যোশক্তি এমৎ প্রবল হইত যে তাহাতে প্রতি বৎসর সম পরিমাণে শাগা উৎপত্তি হইতে এবং সার দিবার প্রথা প্রচলিত ছিল না। ধাতু সকল নানা প্রকার কিন্তু এদেশে সমগ্ররূপে ত্তপ্রাপা হওয়ায় তাবতের নাম উল্লেখ मा कतिहा (कवल कूर्णंत विवश लिबिए धहु इडेलोम, শীত প্রধান দেশে মৃত্তিকার কার্চিন্য হেতু উৎপাদিকা শক্তির রিদ্ধি হয় না। তাহা বাড়াইবার জন্য দেই দেশে চুণ ব্যবহার করা আবশ্যক। বঙ্গরাজো মৃত্তিকায় বালির তাংশ অধিক থাকায় চুণ অব্যবহার্য্য, নহে কিন্তু যে ক্ষেত্র বহু কাল পতিত থাকে তাহাতে কৃষিকার্যা সম্পাদন জন্য অত্যে लाइल द्वारा कर्यन करिया रूडन हुन इड़ारेया निर्व शहर তত্নপরি ভাগে পুনর্কার এমত চাস দিয়া মই দ্বারা মৃতিকা চারাইবৈ যাহাতে চুণ মৃতিকার অধিক নিম্পত না হয় এবং এক বংসর তদবস্থায় রাখিলে চুণের প্রভাবে ঘাস প্রভৃতি অকর্মণা উদ্ভিজ্ঞ সকল বিনষ্ট হইয়া যাইবে পরে তান্য দার দিয়া কবিকার্যা করিলে ক্রমাগত ২০ বৎসর ज्ञान ने जा ज्याहिए भारत। कृत्व विष्य अन अरे एय मुखिका एक इरेल वायु इरेट बमाकर्ग का अप मुखिकारक मद्रम कर्त्र এवर मृखिक। निव्रस्त कल मरमार्ग ह्यिङ इन्हेल রস আকর্ষণ পূর্ব্বক তাবৎ দোষ বিনষ্ট করে।

বিঘা প্রতি কত পরিমাণে চুণ দিতে ছইবে তাহা ভূমির দোষ গুণ বিবেচনা করিয়া ধার্য্য করিবে।

মিশ্রিত সার।

জন্ত সার, উদ্ভিজ্ঞ সার কিন্তা ধাতু সার একত্রিত হইলে মিশ্রিত সার বলা যায়। জন্তনিগের বিষ্ঠাই স্বভাবতঃ মিশ্রিত সার। তদ্বাতীত মনুযোরা হুই তিন প্রকার সার একত্রিত করিরা মিশ্রিত সার করিয়া থাকে। এদেশে গো, গদ ভ, ঘোটক, মেয়, শৃকর এবং কপোত প্রভৃতি কতক-গুলি জন্তুর বিষ্ঠা মিশ্রিত সারের মধ্যে প্রধানরূপে প্রচলিত আছে। ইহাদের মধ্যে গোময় অতি প্রসিদ্ধ। কিন্ত প্রথমাবস্থায় উহার মধ্যে অনেক অপরিপক বস্তুর অংশ थाकात्र ना পठाइटल क्रिकाट्यंत डेशट्याशी इहेट शाद्र ना, একারণ প্রথমতঃ এক গর্ভ খনন করিয়া তাহার অধোভাগ इक्टेक्नानि घारा वाकिया अक्रिक अल्पिकाक्र निम्न राथित পরে ঐ গর্ভ গোময়ে পূর্ণ করিয়া কিছু দিন রাখিলে যে সকল রস ক্রমশঃ অপস্ত হইয়া নিম্ন ভাগে একত্রিত হইবে তাহা তুলিয়া ক্ষেত্র মধ্যে ছড়াইবে। গোময় শুফ হইলে কিয়া অত্যন্ত পচিলে তেজোহীন হয়, এই নিমিত্ত যে স্থানে (दों माशिए नाशिए व अगड स्थान द्रुप कतिरव, अवश मर्था मर्था जञ्जभित्र शोभूज जोलिशो मिर्व।

সাতিশয় পচিবার সন্তাবনা হইলে দিন থাকিতে তুলিয়া জলে গুলিয়া ক্ষেত্র মধ্যে ছড়াইলে বিশেষ উপকার জন্মায়। বিশেষতঃ গামলায় যে সকল চারা থাকে তাহাদিগের মুলে ঐ সারদিলে ঐ সকল চারা আশু বর্দ্ধন শীল হইয়া উঠে।

(भागाज स्थालित एए। जवर यथाम भागानि शह

তথাকার মৃত্তিকা মিশ্রিত করিয়া ক্ষেত্রে ছড়াইলে ভূমির অত্যন্ত উৎপাদিকা শক্তি জন্মাইয়া চারা সকলকে বরায় পরিপৃষ্ঠ করে।

এই সার ক্ষেত্রে দিবার পূর্বের্ব লাজল দ্বারা ভূমি কর্ষণ করিয়া মই দ্বারা তাহার মৃত্তিকা সমানরপে চারাইবে। উন্নতানত থাকিলে এই সার তরলতা প্রযুক্ত উন্নত স্থান হইতে নিম্ন স্থানে আদিয়া একত্রিত হইবার সম্ভাবনা। পরে বোমা দ্বারা ছড়াইয়া বিদা টানিয়া সর্ব্বে সমভাবে মৃত্তিকা বিলোড়িত করিবে।

গোসূত্রে অর্দ্ধপূর্ণ এক কলস রক্ত, মাংস কিন্তা মৎস্য দারা পরিপূর্ণ করিয়া তাহার মুখ বন্ধ করিয়া রাখিবে, ইহাতেও এক প্রকার মিশ্রিত সার হইতে পারে। পরে এ৬ মাস গত হইলে মুখ উদ্ঘাটন পূর্বক এ সার জলের সহিত গুলিয়া চারার মূলভাগে ঢালিয়া দিবে। এই সার উদ্যান কার্য্যে মহোপকারক।

গোস্তের ন্যায় অপর জন্তর প্রস্রাবন্ত শস্যের প্রতি উপকার জনক, কিন্তু প্রথমাবস্থায় ইহার তেজ হঃসহ, চারায় দিলে জ্বলিয়া যাইতে পারে। অতএব উহাকে কিছু দিন কলসে রাধিয়া পচাইবে,পরে তাহার চতুর্তু ণ জালের সহিত মিপ্রিত করিয়া ভূমিতে ছড়াইলে যে মৃত্তিকা স্বক্তাবতঃ আল্গাতাহার পক্ষে প্রতিক হইবামাত্র মৃত্তিকার অধ্যাতাগে প্রবিক্তাহাণ পতিত হইবামাত্র মৃত্তিকার অধ্যাতাগে প্রবিক্তাহাণ চারার মূল দেশে সংলগ্ধ হওয়ায় চারা সকল অপ্যাক্তাবার মূলে দিশে সংলগ্ধ হওয়ায় চারা সকল অপ্যাক্তাবার মৃত্তিকা

অতি কঠিন তাহার পক্ষে তাদুশ উপকার দর্শে না।

মনুষ্যের বিষ্ঠা অতি চমৎকার সার। ইহা মৃত্তিকার প্রদান করিলে তত্ত্বস্থ রক্ষ সকল অতি শিঘু রিদ্ধিশীল হয়। প্রথম অবস্থায় ইহা অতি অনিষ্টকর বস্তু কিন্তু পচাইরা মৃত্তিকাস্যাৎ করিলে অতি উত্তম সার হইতে পারে।

এই চতুর্বিধ সারের বিষয় যৎকিঞ্চিণন করিয়া এক্ষণে " কোন সময়ে ও কি প্রকারে উহাদের ব্যবহার করিতে হইবে ডিছিয়ে কিঞ্ছিৎবর্ণন করিতে প্রয়ত হইলাম। বীজ বর্ণন করিবার পূর্বের লাজল দ্বারা ক্ষেত্র কর্যণ পূর্বেক সার ছড়াইয়া পুনর্কার লাজন ও মই দারা মৃত্তিকা সারের সহিত মিশ্রিত করিয়া এমত চাপা দিবে তাহাতে ঐ সার মৃত্তি-কার অত্যন্ত নিম্নাত না হয় এবং নিতাত উপরি ভাগো না থাকে। যদি অধিক নিম্পাত হয় তবে চারার মূল আপাততঃ তত চুর যাইতে না পারায় সারের রস আকর্ষণ করিতে অক্ষম হইয়া থাকে। যদিও উপরিভাগে থাকায় র্ষির জলে গলিয়া সৃত্তিকার ভিতরে প্রবিষ্ট হইতে পারে কিন্তু অধিক র্টি হইলে তাহার অধিকাংশই ভাসিয়া यादेवांत विलक्षन मद्यावना। এই मकल विद्युचना कतिशा যে ক্ষেত্রে সাস্বৎসরিক চারা রোপাণ করিতে হইবে তাহাতে চারা রোপণের পূর্বের চাস দিয়া একবার, রোপণ সময়ে একবার এবং চারা বড় হইলে একবার, এই তিন বার সার দিতে হইবে। ভদ্বতীত পূর্বোৎপন্ন চারার দার দিতে হইলে নিতান্ত গোড়ায় না দিয়া তাহার চতুদ্দি কৈ কিয়-দ্ধরে অর্থাৎ মূল হইতে বহির্গত শিকড় সকলের অপ্রভাগ

পার্থ বর্তী হইয়া যে যে স্থানে বিস্তীর্ণ হইয়াছে সেই স্থান সকল খনন করিয়া সার দিতে হইবে।

মৃত্তিকা কোন দোষে দূষিত হইলে অত্যে পূর্বেজ প্রকারে সংশোধন পূর্বাক তাহাতে নার প্রদান করিবে नजुरा मात्र मानित कोन कल मुखे इहेटर ना। यहमद्रुत मधा मुखिकांश मात्र निवांत इहे ममश जाएছ। वर्षाय श्यान्त क्रमा वर्षात शृत्व धवः तिश्यानत क्रमा वर्षात जाव-শানে সার দিতে হইবে কিন্তু অন্য সময়ে দিলে তাহা कार्याकत इहरव ना। मुखिकांत्र मात अनान कतिल हहा তৎক্ষণাৎ কার্য্যকারি হয় না কিন্তু পরে ইহার উপাদানের (यांग एक इरेशा यथन जलामां वा रश उथन रेर्गित्रात দ্রাব্যাবস্থার মৃত্তিকা শোষণ করিয়া লয়। যে মৃত্তিকা তালগা যেমন বালুকাময় ভূমি তাহা তাধিক পরিমাণে এ डेशानांन मकल डोनिया लय किछ कठिन मृडिका (यमन এটেল ইহার ভিতর ঐ উপাদান সকল অতি অপে পরি-মাণে প্রবেশ করিতে পারে। এই জন্য উর্বরা শক্তি অতি অপ रहेशा थात्क जात मुखिका कर्यन ना कदिशा यिन मात দেওয়া যায় তবে তাহাতে কার্যাকারি হইতে পারেনা কারণ ইহার ভিতর এ সার দ্রব্য যাইয়া প্রবেশ করিং জ পারে না धरे जना मृजिका कर्षन करिया माद्र नित्न हैरा मर्काज বিস্তীর্ণ ছইয়া পড়ে এবং পুনশ্ত কর্মণ করিলে মৃত্তিকার मकल পরমাণুর मহিত দার মিখ্রিত হইরা যায় কিন্তু রুক্ বিশেষ মৃতিকা কর্ষণ করিবার তাৎপর্যা আছে যে সকল রক্ষের শিকড় বহুদূর নিমে গামন করে ভাহাদিগার জন্য

ততদূর অবধি কর্মণ করিয়া সার উপস্থিত করিয়া দিবে যদি সার কেবল মৃত্তিকার উপরি ভাগে থাকে তবে উক্ত চারা-দিগের শিকড় যখন রন্ধি হইয়া ঐ সারময় উপরিভাগের মৃত্তিকা অতিক্রম করিয়া নিম্নগামী ইইবে তখন সারাভাব थ्रयुक कथन इकिनील इहेर ना। रामन धाना हरकत শিকড় মৃত্তিকার উপরি ভাগের চতুদিগে বেষ্টন করিয়া থাকে ইহাদিগের জন্য অপা কর্যণ করিয়া সার প্রদান করিলে প্রচুর পরিমাণে ধান্য উৎপত্তি হইবে কিন্তু কলাই সুটির শিকড় বহুদূর নিয়ে গমন করে এই জন্য অধিক দূর অবধি সার যাইয়া উপস্থিত না হইলে কখনই উৎপত্তি হইবে না যদি ভূমি কোন রক্ষের পক্ষে উকারা না হয় তবে ইহার শিকড় কতনূর অবধি গমন করেও সারময় মৃত্তিকাইছার কোন স্থানে আছে তাহা নিরপণ করিলে কি কারণ প্রযুক্ত র্জ ভূমি অনোক্ষর। হইয়াছে তাহা ধার্য্য হইবে। বিক্ষাপ্রতি সার কত পরিমাণে দিতে হইবে তাহা নিশ্চয় করা যাইতে পারে না যদি সার অপা কিমা রাশিকত দেওয়া यांश তবে এই छूरे शंकादि कार्याकाति रहेदन।। किन्छ छे भेयुक भित्रियां । भोरेल छे ९ क्रिक्ष फ म न जिन्हा रहेर व धरे উপযুক্ত পরিমাণ আমরা কথায় বলিতে পারি না কিন্ত কার্য্যকালে বুঝিতে পারি। মৃত্তিকায় সার দিবার প্রোজন এই যে ইহার যে উপাদানের ভাগ অতি অপ আছে তাহাই মৃত্তিকায় প্রদান করিলে সারের কার্য্য অবশ্য করিবে কিন্তু যে উপাদানের ভাগ অধিক পরিমাণে আছে তাহা थमान कतिल कान कार्या मर्भित ना यमि मृखिकांत्र लिशित्मंत छोगे जल्म थात्क ७ हून्नत छागे जिथक थात्क তবে श्री मृजिकांग हून श्रमान कितिल कथन है देखता हहेर्वना किन्छ मामानाकाल लिशिंग मिल्ल छोहार श्रहत श्रीतमाल मेगा छेर्शत हहेर्व।

চারা উৎপত্তির বিষয়।

খতু পরিবর্তনে জল, বায়ু এবং উত্তাপ এই কয়েক বস্তুর कथन हा कि कथन भाग इस्ता थारक। उनन्याती छे छि-(क्तर) खीश खीश खलावानुगात डेशयुक मगग्र शाहरलह উৎপন্ন इहेट्ड भारत। याङ्चित अधिक छल এवर बाग्नु मङ्ग করিতে পারে তাহার। বর্ধাকালে জ্যায়। এবং যাহার। अधिक জল लागितल পि जिला यांत का का वाता भी उकारल छे९-भन्न इस्ता थात्क, अरे जना क्रिकार्या हरे अकात। किन्छ णिविदिक हरेल क्रिकार्यात जनभा याचा हरेड भारत, अकारण जोक्ने निर्शत कि शतिभारण अवश कि व्यक्तार नान-हात कदित्म পर्गाथ हरेए भारत छाहा भूरक कहिशाहि; এकर्ण ऐ खिकानिर्भात जीवरमां भरियां भी किसात महिं উহাদিগের কি সংগ্র_ন তদিসা লিখিতে প্রর[্] **হইলাম।** এই সকল বাহ্য বস্তুর সহিত উদ্ভিক্ত নিগের শুভাবতঃ এমং প্রিতর সম্বন্ধ আছে যে তদ্যতিরেকে উদ্ভিত্তের কখন डेल्शन अपर इक्ति अपस इहेट शादिन न। यिन जन, नाग्न ইত্যাদির মধ্যে কোন এক বস্তুর অভাব থাকে তবে চারা कर्नाठ छेदभन्न इहेरनक ना; यथा भीतम जनर छेखाभिड

ভূমিতে বীজ বর্পন করিলে তাহা কখন অঙ্করিত হইবে না। কোন কোন বীজ জলেতে ভিজাইয়া রাখিলে অঙ্কুরিভ হয়। কিন্তু পরে তাহাতে বায়ু এবং উত্তাপ সংলগ্ন না হইলে ঐ अकूत अवनारे मतिया नक्षे रहेया यात्र। वात्र हीन शास বীজ বপন করিয়া তাহাতে উপযুক্ত উত্তাপ এবং জল দেওয়ায় যদিও অকুরিত হয় তথাপি কখন তাহা হইতে ठांत्रा डेल्पन इहेरव ना। नियाम श्रयाम कियात बाता বায়ুর কিয়দংশ উদ্ভিজ্ঞ দিগের অভ্যন্তরে থাকিয়া উছা-দিগকে বর্দ্ধিত করে, কিন্তু বীজের ভিতর বায়ুর গমনাগম-নের পথ জল ব্যতীত কি প্রকারে হইতে পারে কারণ সকল বীজের আচ্ছাদন আছে তাহা কাহারও কঠিন, কাহারও কোমল, কাহারও পুরু কাহারও বা পাতলা কিন্তু জল বীজের ভিতর প্রবিষ্ট হইয়া তাহাকে স্ফীত করিয়া ঐ আজ্বাদনকে ফাটাইলে তদ্বারা বায়ু তাহাতে প্রবেশ করে এবং বীজের অন্য হকের মধ্যে যে বায় মুদিত থাকে ভাহা একণে উত্তাপ সংলগ্ন ছওয়াতে পাতলা হইয়া কোমল ভুক্দিগকে বর্দ্ধিত করে, তাহাতে এমত এক উত্তেজিকা শক্তির আবিভাব হয় যে তাহা উদ্ভিজ্ঞদিগের যাবজ্জীবন शांक अर्थाए উ खिएक्क र विनाम ना इहेल डाहात विनाम হয় না ৷

যদি ক্ষেত্র মধ্যে বীজ বপন করিতে হয় তবে সভাবের যত সাহাযা পাওরা ঘাইতে পারে তাহার উপর নির্ভর করা আবশ্যক, কারণ এই রহদ্যাপার মনুষ্যের সাহায্যে কিছুই সম্পন্ন হইতে পারে না। কিন্তু র্যক বীজ বপন করিবার পূর্বে লাজল ও মই দারা ক্ষেত্রকে এমত সমান করিবে যাহাতে কোন উন্নতাবনত ভূমিতে বীজ বপন করিলে তাহা বর্ষার জল প্রবাহে উক্ত স্থান হইতে ভাসিয়া আসিয়া নিম্ন স্থানে একত্রিত না হয়, তাহা হইলে এ বীজ অধিক জলে অঙ্কুরিত না হইয়া নফ হইতে পারে। যদি বর্ষার ক্ষমল হয়, তবে বর্ষার পূর্বে অর্থাৎ বৈশাধ বা জ্যৈষ্ঠমানে রফি পাত হইলে ভূমিতে চাস দিয়া বীজ বপন করিবে, অধিক বর্ষার সময়ে উহা কখন স্থবিধা মত হইতে পারে না।

রবি ফদল হইলে আধিন বা কার্ত্তিক মাদে মৃত্তিকা সরদ থাকিতে থাকিতে বীজ বপন করিবেক নতুবা মৃত্তিকা নীরদা হইলে জলদানে বহুবায় ও পরিশ্রম হইতে পারে। বিদেশীয় বীজসকলকে গামলায় বপন না করিলে কখন উত্তমরূপ উৎপন্ন হইতে পারে না, এই জন্য পূর্কে যেরূপ কহিয়াছি দেইরূপ একটা গামলায় চিক্রণ মৃত্তিকা এবং তংপরিমাণে কিরদংশ বালি ও পচা পত্রের দার এই তিন বস্তু একত্র মিশ্রিত করিবেক। যদি বীজ অধিক সরদ রাখিবার জন্য চিক্রণের অংশ অধিক দিবে। বড় গামলা হউলে প্রতিকা বিলু বিজ পৃতিবে অধিক প্রতিলে ঘন হইয়া চারা সকল বিনফা হইতে পারে। যদি বীজ অত্যন্ত ক্ষুদ্র ও কোমল হয় যথা পুন্শিয়ানা রিজিয়ার এক প্রকার ক্ষণ চূড়া ফুলের গাছের। বীজ, তাহা হইলে বালির সহিত দিশ্রত করিয়া বপন করিবে তাহাতে বীজ

সকল এমত বিভিন্ন হইয়া থাকে যে চারা হইলে চতুদি কৈ
সমান অবকাশ থাকায় পরস্পর সংলগ্ন হইতে পারে না।
অবশেষে ছায়ায় রাখিয়া অতি ফ্ল্মজলধারা বাহিক
বোমা দারা প্রতি দিন সন্ধার সময়ে জল দিবে। জল
ধারা প্রবল হইলে প্র জল যে দিকে গড়াইয়া যাইবে সেই
দিকে সকল বীজ যাইয়া একত্র জমা হইবে তাহা হইলে
সুশুঙ্খলতারূপে চারা উৎপন্ন হইতে পারে না।

মৃত্তিকার কত নিম্নে বীজ পুঁতিতে হইবে তাহা বীজের পরিমাণানুসারে বিবেচনা করিতে হইবে। যদি বীজ অতি ক্ষুদ্র হয় তবে মৃত্তিকা পূর্ণ গামলার উপরে তাহা ছড়াইয়া তাহাতে কিঞ্জিলাত মৃত্তিকার আচ্ছাদন দিবে, किया टेम्पराल प्रांत्र। छोकिया त्रिया त्रशिक इरेल মৃত্তিকার এমত নিম্নে পুঁতিতে হইবে যে তাহা অনায়াসে অন্ধকার এবং রস পাইতে পারে। বিদেশীয় বীজ এদেশে রোপণ করিয়া তাহাতে উত্তাপ লাগাইতে হইলে অত্যে সেই বীজের স্বভাব এবং তাহার আদিম জন্ম স্থানের উত্তাপ কত এই উভয় বিবেচনা করিতে হইবে। কোন বীজে অপ্প কোন বীজে অধিক উত্তাপ আবশ্যক করে, তাহা রুষক আপিন বহুদর্শন দ্বারা নিরূপণ করিবে। যথা, তরমুজের বীজে অধিক উত্তাপ আবশ্যক। এই জন্য তাহা গ্রীষ্মের প্রারম্ভে বপন করিতে হয়। কিন্তু বৈদেশিক বীজ হইলে এদেশীয় তিন কালের মধ্যে কোন কালের উত্তাপে বোপণ করা কর্ত্তব্য তাহা বিশেষক্রপে জ্ঞাত হইয়া সেই কালে রোপাণ করিবে।

যেরপ উন্তাপ সংলগ্ধ করাইবার বিষয় লিখিলাম তদনুরপ উন্তিজ্ঞানিগের স্বভাবানুসারে জল দিবার বিষয়
বিবেচনা করা কর্ত্তব্য; যদি অপরিমিত জল দেওয়া যায়
তবে তাহাতে বীজ অরুরিত না হইয়া বরং নফ ইইবার
সন্তাবনা, কারণ অধিক জল বীজ মধ্যে প্রবেশ করিয়া পরিপক্ষ না হইয়া তাহাদিগকে পচাইতে পারে। এই জন্য
মৃত্তিকাতে যে পরিমাণে জল ধারণ করিতে পারে সেই পরিমাণে জল দিবে। পূর্কে বলিয়াছি যে, চিকণ মৃত্তিকা পচা
পাতার সার এবং বালি এই তিম বস্তু মিশ্রিত করিয়া
তাহাতে বীজ পুঁতিতে হইবে। ইহার তাৎপর্য্য এই যে,
বালি এবং পচা পাতার সারের সহিত চিক্রণ মৃত্তিকা
উত্তমরূপে মিশ্রিত হইলে এমত আলগা হয় যে তাহাতে
জল পড়িলে শীজ অধোগত হইয়া যায় ও কেবল
কিঞ্জিম্মাত্র তাহাকে ভিজাইয়া রাখিবার জন্য বন্ধ হইয়া
থাকে।

পুরাতন তেজহীন বীজ হইলে তাহা যত জল সহ্য
করিতে পারে এমত জল দিবে, অধিক জল দিলে তাহা
বীজের ভিতর প্রবেশ করিয়া পরিপাকাভাব প্রযুক্ত বিনষ্ঠ
করিতে পারে, কিন্তু ঐ বীজ অঙ্কুরিত হইলে জলের পরিমাণ অপপ করা কর্ত্তর। কিন্তা উত্তাপিত ভূতিতে বপন
করিয়া কিছুদিন জল না দিয়া কেবল মৃত্তিকার রসের উপর
নির্ভর করিতে হইবে। পরে আবশ্যক মতে কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ
জল দিবে। এইরপে উহাদিগের ভিতরে অপেই রস প্রবেশ
করিলে পরিপাকানন্তর ক্রমে ক্রমে বীজের সর্বাংশ স্কীত

र्नेत्रां जरूति रहेए भारत, उर्भरित जितिक क्षम मिलि । रामि रहेए भारित मा।

বীজ শীজ অঙ্কুরিত করিবার জন্য ইহাদিগকে সিদ্ধ করিয়া প্রতিবার ব্যবস্থা এই দেশে এবং অন্যান্য দেশে প্রচলিত আছে। কিন্তু ইহা সকল বীজের প্রতি কি প্রকারে ব্যবহার করা যায়। কারণ যাবতীয় বীজ সিদ্ধ করিয়া প্রতিলে অধিক উত্তাপে নস্ক হইবার বিলক্ষণ সন্তাবনা। তবে তরমুজ বীজ প্রভৃতি যাহাদিগের আক্ষাদন অর্থাৎ উপরিভাগের ত্বক অতি কঠিন, তাহাদিগের পক্ষে প্র ব্যবস্থা উপকারক। কেন না তাহা হইলে প্র আক্ষাদন শীজ কাটিয়া যায় এবং অঙ্কুর অনায়াদে বহির্গত হর।

ইউরোপীয় উদ্ভিজ্ঞবৈতার। কহিয়াছেন যে, কোন খার দ্রব্য জলে গুলিয়া তাহাতে সকল প্রকার পুরাতন বীজ্ঞ এবং পালঙশাকের বীজ ভিজ্ঞাইয়া রাখিলে শীল্প অঙ্কুরিত হইতে পারে। এই জন্য চূণের জলে বীজ ভিজ্ঞা-ইয়া রাখিলে কিম্বা পূর্বের জলে ভিজ্ঞাইয়া পরে ঘুঁটের ছাই মাখাইলে হয়ায় অঙ্কুর নির্গত হইবে। যদি বীজ অত্যন্ত পুরাতন হয়, তবে তাহাতে বলাত জড়াইয়া অকজেলিক আদিডে অর্থাৎ কামরাস্থার অমরদে ভিজ্ঞাইয়া রাখিলে অঙ্কুর নির্গত হইতে পারে।

भाशा कलग।

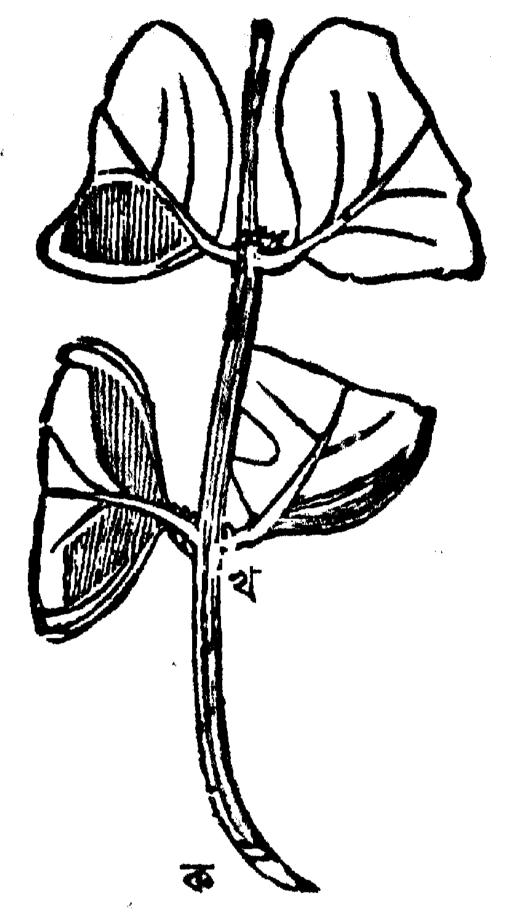
স্বাভাবিক চারার উৎপত্তি বিষয়ে স্বভাবসিদ্ধ হুই প্রকার উপায় আছে। যথা, বীজ এবং শাখা। বীজের বিষয় পূর্বের্ব কহিয়াছি। কোন কোন রক্ষের শাখা ভূমে পতিত হইলে চারা উৎপন্ন হয়। বীজেশৎপন্ন চারার करनत जासारित जानक रिनलकना इहेर्ड भीति। अश्रयुक्त কৌশল দ্বারা শাখা হইতে চারা উৎপন্ন করিলে ফলের जाम्बारमत रिवलका इशमा। यमि दीखित होता थ्रवम হয়, তথাপি চারি বৎসরের চারার মন্তক ছেদন করিয়া দেই গুঁড়িতে তৎসজাতীয় গাছের এক বয়জাত শাখা আনিয়া জড়িয়া দিলে এ ও ড়ির রস প্রাপ্ত হইয়া অবশাই ध्ययम इहरत। এই জন্য উদ্যানকার্য্যে নিম লিখিত রূপে চারা উৎপন্ন করা কর্তব্য। কিন্তু সকল উদ্ভিজ্ঞেরই যে এই রপে চারা উৎপন্ন হইতে পারে এমত নহে, কোন কোন উদ্ভিক্তের শাখা কাটিয়া পুতিলে ঢারা ছইতে পারে তাহা নিরূপণ করিবার কোন উপার নাই, কেবল পরীক্ষা দ্বারা নিরূপণ করিতে হইবে।

শাখা কাটিয়া তদ্বারা বে কলম হয়, তাহ ক শাখা কলম বলা যায়। তাহা করিতে হইলে জেলা এমত এক কৌশল দারা জল, বায়ু, উত্তাপ এবং মৃত্তিকা এই কএক বস্তুর ব্যবহার করিতে হইবে যে তদ্বারা এ শাখা সকল শুক্ত হইতে অথবা পাচিয়া যাইতে না পারে; প্রথমতঃ দির্ঘে বিংশতি হস্ত প্রশস্ত হুই হস্ত এবং উদ্ধে হুই হস্ত এক

ইয়ক নির্মিত চেকা প্রস্তুত করিয়া তাহার ভিত্রের কতক অংশ ঝামা দিয়া পূর্ণ করিবে এবং ভাহার উপরিভাগে কিঞ্চিৎ চিক্কণ মৃত্তিকা দিয়া ততুপরি সমুদায় বালৈতে পূর্ণ করিবে। তাহা হইলে তাহাতে জন পড়িলে তাহার অতি অপ্প অংশ এ বালিকে ভিজাইয়া রাখিতে পারে এবং অবশিষ্টাংশ শীঘ্র অধোগত হইয়া যায়। তাহার উপরে গাছের শাখা আনিয়া পুতিলে তাহা জলে পচিয়া যাইবার কোন সম্ভাবনা থাকেনা। কিন্তু প্রতিদিবস ইহাতে জল দেওয়া কত্তব্য, নতুবা ঐ শাখা সকল শুষ্ক হুইয়া যাইবে। এইরূপে শাখা সকল রোপিত হুইলে তাহাদিগের উপরিভাগে এক কাঁচের পাত্র আচ্ছাদন ক-রিয়া দিবে। তাহা দিলে তাহার ভিতর বায়ু ও উত্তাপ সর্বদা সমভাবে থাকিবে। এবং চেকার চতুম্পার্থে খুঁটা পুতিরা তাহার উপর দর্মা দিয়া ঐ শাখা সকলকে স্থার উত্তাপ इइट्ड तका कतित्। किन्छ तक्रमीर्यारा के नर्मा शुनिशा नित्व এवर दृष्टित जन जे छिकां का का मार्ड ना-গিতে দিবে না। এইরপ সমস্ত আংয়োজন করিয়া বৃক্ষের ্বে শাখা হেলিয়া পড়িয়াছে, তাহা হইতে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র শাখা সকল মূলশাখার কিয়দংশের সহিত ছিঁড়িয়া লই-বে। কারণ মূলশাখার কিয়দংশ হইতেই শিকড় বহির্ঘত হইবার অনেক সম্ভাবনা এবং তাহারই রসে এ শাখা স-कल एक इहेट পार्व ना। প्रविक्ष कु मार्थाव निम् অংশে যে গাইট আছে, তাহার চতুপ্পার্থ পরিষ্কৃতরূপে कारिया के माथा केंद्र मश्था वर्ष रख পतिमिक मीर्घ या-

Comments of the second

थित्रा ज्यानिकोश्य कार्तिता क्वान्ति अर्थ रेशाटि हरे गति पेटबर क्वान ज्याश्य कार्तिता ज्याश्य ताथित।



बरे চিত্রে মলিকার শা-ধা কাটিয়া যেরূপ শাধা कलम कदिए इस अ-বিকল ভজপ খোদিভ श्रिशोटक। देशांत्र नि-স্নাংশে ক চিহ্নে যে গাঁ-ইট আছে তাহাতে প্ৰ-कांट खब्र किशमश्म मः-लग्न इरेगा दरियाए धरे कना के मैं। इछित রনে সমুদ্র শাখা ख-स्क इहेए शादि न। धवः के ञ्रांन इहेर्ड मि-কড় বহিৰ্গত হইয়া-थारक। थ हिरू निकरि যে গাঁইট আছে তা-हा भज भौरिष धर স্থান হইতেও শিক্ড

ৰছিৰ্গত হইয়া থাকে, শাখা কলমে পত্ৰের কেবল আৰ্দ্ধাংশ রাখিতে হয় এই চিত্ৰে যেরূপ আছে ডজপ করিয়া পত্ৰ সকল কাটিতে হইবেক।

সমুদার পত্র থাকিলে বহু ঘর্ম নির্মাত ছওয়ার শাধা-খণ্ড শুক হইবার বিশেষ সম্ভাবনা এবং শাধাকত সম্পূর্ণ রূপে পত্রশূন্য হইলে পত্রকলিকা বহির্মত ছংবার প্রতি বন্ধক হইতে পারে।

যদি কোন শাধার উক্ত প্রকার গাঁইট না থাকে, ভবে নিমাংশে পত্রের গাঁইট রাখিরা অর্ছ হন্ত পরিমাণে কাটিবে। গোড়ায় কোন গাঁইট না থাকিলে শিক্ত বহি-

र्गंड इहेटड शांद्र मा। शद्र र्ध वानित्र होकांत्र हेशद्र এক খোচা দ্বারা হুই অন্থলি পরিমিত গর্ত্ত করিয়া, তাহাতে ঐ শাখাখণ্ড পুতিয়া মূলের মৃতিকা এমত ঠাসিয়া দিবে যে, তাহা সহজে নড়িতে না পারে এবং উক্তরূপ আছো-मम मिल्ल, इरे ठांति मांग जाए अथगडः मिरे পांजा शी-हैटित ह्युर्फिटक कुछ कुछ छिकांत छे९পछि इरेटव। शद्र তাহারা ক্রমশঃ বাড়িলে, তাহা হইতে শিকড় বহির্গত হইয়া চারা উৎপন্ন হইবে। কিন্তু রোপেলিয়া প্রাটা প্রভৃতি যে কতিপয় উদ্ভিদ্ধ আছে, তাহার শাখা, যদিও বালির চেকায় অপ্পরস থাকে, তথাপি তথায় পুঁতিলে পচিয়া যায়, তজ্জন্য এক গামলার তলায় ছিদ্র করিয়া ঐ ছিদ্রের উপরে খোলার কুচি দিয়া এবং এ গামলা বালি দ্বারা পরিপূর্ণ করিবে। পরে তাহার মধ্যস্থলে এক ক্ষুদ্র ভাঁড় পুঁতিয়া ঐ ভাঁড়ের চতুস্পাশ্বে উক্ত প্রকার উদ্ভি-জের শাখাখণ্ড প্রতিয়া দিবে। কিন্তু জল দিবার সময়ে গামলায় না দিয়া এ মধ্যন্তিত ক্ষুদ্র ভাড়ে জল দিবে, তা-शास्त्र के बालि मत्रम थाकित्व। शत्त्र हुई जिन माम नाथा খণ্ড সকলের উপরিভাগে পত্র কলিকার উদ্ভব হইলে মূল বহির্গত হইয়াছে এমত জ্ঞান করা যাইবে। এই সময়ে নিড়ানি দিয়া খনন করিয়া দেখিবে যে, মূল কভ হুর পর্যান্ত বিন্তীর্ণ হইয়াছে। যদি এমত জানিতে পার যে, তাহা-मित्र मूल ও শিকড় উত্তম হইয়া প্রবল হইতেছে তবে তাহা ত্রায় তুলিয়া সার সংযুক্ত মৃত্তিকা পূর্ণ অপর পাত্তে পুতিয়া দিবে, কাল বিলম্ব ছইলে এ শাখাখও নীরস ছইয়া

ছরিত্র। বর্ণ ছইবে। কারণ তৎকালে উদ্যাত পত্র কলি-का इरेट वर्ष वहिर्गड इरेग्ना थाटक। जड्य यादाट मूल बाता অধিক রস আকর্ষণ করিতে পারে এমত করা আবশাক। কিন্তু তাহা বালির চৌকাতে হইতে भारत न।। यनि आतिरकतियात (এक প্রকার ঝাউ) শাখা ছেদ করিয়া চারা উৎপন্ন করিতে হয়, তবে প্রকাণ্ডের উপরে যে নবীন শাখা হইয়াছে, তাহা ঐ গুড়ির কিয়দংশের সহিত কাটিয়া উক্ত প্রকারে ক-लम कतिरव। आभानिर्शित मार्थाना मर्भन घोत्र। এই नि-র্ণর হইতেছে যে, গোলাপ ইত্যাদি কতওলি উদ্ভিজের শাখা এ বালির চোকার প্রতিয়া কাঁচ পাত্রের আচ্ছাদন নিয়া কখন চারা উৎপান্ন করিতে পারা যায় না। এই জন্য ভাহাদিগকে ক্ষেত্রের কোন পাশ্বে প্রভিন্ন দ্মাতাস্ভাদন निय़ भाषा करिया नित्। वर्षाकाल देशामत नाथा (ता-পণ कतित्व প চিয়া यादेवात मखादमा। এই मिमिल भीज কালে এই প্রকার উদ্ভিজের কলম করিবার উপযুক্ত দ-भग्न । উक्त अकात कलाम छेखां भ लागाहियांत जना धे চারার জন্ম স্থানে যে পরিমাণে উত্তাপ লাগিত, গেইক্রপ वावका कतिता यनि भीउन मिनीय कान का कर कर, তবে কেবল রৌদ্রের সময়ে তাহাকে ছায়াে রাখিবে এবং অন্য সময়ে ছায়া অপসারণ করিয়া দিবে। সর্বদা আচ্ছাদিত থাকিলে মৃত্তিকার উত্তাপ এবং কাঁচ পাতের ভিতরের উত্তাপ প্রবল হইয়া ঐ শাখাখণ্ডকে নম্ভ করিতে পারে। কিন্তু জাপান ও তরিকটন্থ দেশ, যথার গ্রীম সর্ব-

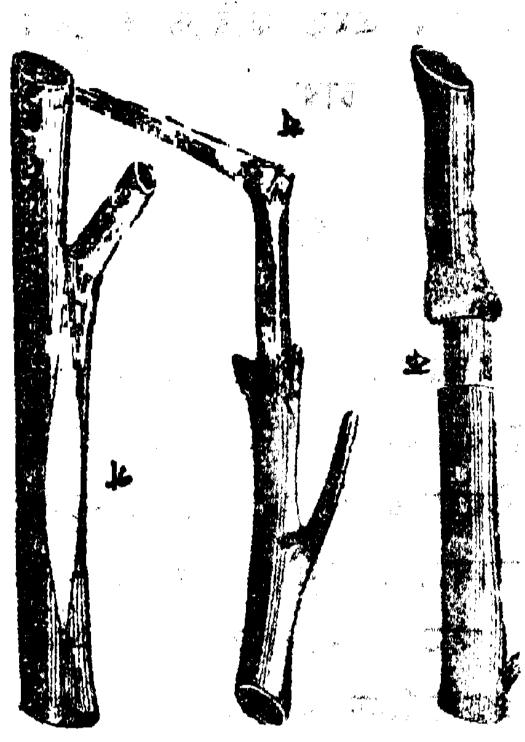
कारम ममजाद यादक, जल्मनीय छात्रांत्र निवस्त्र जांक्श-मन (म अय्रा जावनाक। विटन्यङ ब्रक्की त्यार्थ होबार्थ আচ্ছাদিত রাখিলে এ স্থানের উত্তাপ, প্রতিবন্ধকতা প্র-युक्त सर्पाएक नय ना পाईया ज्याय जमा थाएक । जिल-তাপ এবং কাঁচ পাত্রের উত্তাপ এই হুই উত্তাপ প্রায় জাপান রাজ্যের উত্তাপের তুল্য হইয়া থাকে। এই প্রকারে ইক্সোরা, জেপনিকা প্রভৃতি ঐ সকল দেশীয় চারার শা-थाएक ठांता छे९भन्न कतिता। भारत छेम् ভिজ्किमिशांत श्व-ভাবাস্থায়ী কাল নিরপণ করা আবশ্যক, নতুবা শাখা চ্ছেদে চারা উৎপন্ন করা ছন্ধর। যথা গোলাপ, বরবিন रेडानि। रेटानिरात माथा ছেদে कलम गैठ काल क-दित्य। किन्छ वर्षा काला कदिला कथन ठावा छे० পতि इ-इंटि भारिदा मा कार्य भारानाभित कलम वर्षात कला পচিয়া যাইবে এবং বরবিনার ঐ সময়ে তাদৃশ শাখা পা-ওয়া হুচ্চর। অতএব কোন্ উদ্ভিজের কোন্ সময়ে শাখা कलभ कब्रिए इहेरव छोड़। किछूहे विलिए शीवि ना। क्रयक তাহা আপনি বিবেচনা ও দর্শন দারা নিরূপণ করিবে।

गारि कलम ७ छरि कलम।

মার্টিকলম ও গুটিকলমের পরস্পার এইমাত্র প্রভেদ যে, মার্টিকলম করিতে হইলে, শাখা অবনত করিয়া মৃত্তিকা পূর্ণ টবে পুতিতে হয়। গুটিকলম করিতে হইলে, রক্ষো-পরি মৃত্তিকা তুলিয়া শাখার চতুর্দিকে বান্ধিয়া দিতে হয়। কিন্তু কলম সকল মনুষ্যের বুলি ও কৌশল সাধ্য, শাখায়

मुखिका मश्याश इरेलाई कलम इरेड शांत्र ना। अरे निभिन हक गकन किन्नर्भ भिन्निश्व रूप, उदियग्रक किथि-वर्ग करा व्यावनाक, ध विषय मः एक भिक्क विलि छि। মৃত্তিকার রস রক্ষের কাষ্ঠমধ্যস্থিত রসবাহিকা শিরা দারা উপরিভাগে আরুষ্ট হইয়া পত্র মধ্যে তপনতাপে পরি-পকু হয়, অনন্তর ঐ রস ছালের মধ্যন্থিত শিরা ছারা প্রভাগত হইয়া মূল পর্যান্ত সর্বতি ব্যাপিয়া ক্রমে ক্রমে রক্ষের সর্বাংশ পৃষ্ট করে। অভএব যে শাখা অবনত করিয়া কলম করিতে হয়, তাহা হইতে ঐ পরিপকু রস পুনর্কার প্রকাপ্ত মধ্যে প্রভ্যাগত না হইতে পারে, এই নিমিত্ত শাখার যে অংশ মৃত্তিকায় পুতিতে হইবে, সেই অংশের মূলভাগের এক পত্র গাইট হইতে আরম্ভ করিয়া অন্য পত্র গাঁইট পর্যান্ত ছুরিকা ছারা ছুই অংশ সমভাগে চিরিয়া দিবে। ঐ অংশ দয় পুনর্কার পরস্পর মিলিত না হয়, এ कांत्र छेश्त मधा छटन এक कांक्र थेख वा किया गुखिकांत्र अभे मृज्याभ श्रुविट इस्टिंग, याद्यां माना তথা হইতে উঠিতে না পারে কিয়া এ পর্কের মধ্যমুলা ফাটাইয়া তাহার ভিতরে এক খান খোলা হুচি প্রবেশ করিয়া দিবে অথবা চতুম্পার্থ হইতে ছাল তুলিয়া মৃত্তি-काग्र श्रु जिय़ किरव। अहे जिन क्षकात्र जेशिरात्र मा का कान् উদিভিজ্ঞ প্রতি কোন্ উপায় করিতে হইবে, তাহা ক্লযক भद्रीका घरदा निक्रभेश कदित्व। यथा वरान्टविक्शांत्र भाशा চিরিয়া কিন্তা কাটাইয়া না দিলে মূল বহিগত হয় না। আ-मत ट्यित्रांत्र भाषा উक थकादा हित्रित्रा शांममात्र मृखि-

कांग्र श्रुडिएड इस्पा लिय जिन हात्रि मान जनवाहात्र त्राधिया मध्या भर्या छल मिल निकड़ खन्नाहेट शरित



এই **हिर**ज আছে তজ্ঞপ মোচ-কপ ডাইয়া কিম্বা ছুরিতে কা-টিয়া এক গাঁইট হইতে व्यना गाँदित अर्गुख हाँ-চিয়া কলম করিবে কিসা গ চিহ্নে যেরূপ শাখার यथा ऋला काठी देश कलाब করা হইয়াছে তজ্ঞপ করি-তে হইবেক অথবা শাখার धक गाँहिए इहेट खन् গাঁইট অবধি ঢাল কিয় मःশ काष्ट्रंत महिङ जुलिया रयमन क कित्र कता इहै-বাছে তজপ করিয়া কলম করিতে হইবেক।

এরপে চিরিয়া দিবার তাৎপর্য্য এই যে, পরিপক্ষ তাবৎ রস শাখা হইতে প্রকাণ্ডে না যাইয়া, তাহার কিয়দংশ ঐ খণ্ডিত স্থানের নিকট আসিয়া বিন্দু বিন্দু এক প্রকার ৰস্তুরূপে পরিণত হয়। তাহা হইতেই ক্রমশঃ স্থাম স্থাম कामन निकल नकन छेर्शम रहेए थाक। এই তাर्श्या অন্যান্য কলমের বিষয়ও অব্যতি হইবে।

उठिकलम कतिएक इहरत, व्यथमण्ड कान नीथात्र इह পত্র গাঁইটের মধ্যন্তিত যে পর্বিতাগ আছে, তাঁহার চতু-ष्मा (श्रं ब्र इ नि मकन कियमश्रम कार्षिवं महिल ड्रिनिया (य-निद्य। श्रेट श्रीयत श्री श्रेटवंत्र भाव श्रीकांकादत्र निया हिन्न हिंदे तो जाना कार्या नाकिया विराध अवर छ।कांक छेशतिखार्श मिल्झ अकरे। छोड़ बाबिया योदार दिया वाजि विमू विमू जनगांउ इरा, ध्रांड कविएंड इरेट्य। এইরপে হুই তিন মালের মধ্যে চারা উৎপন্ন হুইডে भारत ।

शृद्ध मामानाडः करिय़ाछि एए, श्रेज गैरिहे रहेएड নুল বহির্গত হয়। কিন্তু এরালিয়া ইন্মিভোলা প্রভৃতি कडकशिन डेस्टिब्बर गाँचि प्रदात मधाविष्ठ शर्वाजां रहे-তে মূল উৎপন্ন হইয়া থাকে। ইহার কারণ অনুসন্ধান ছারা এই প্রতীত হয় যে, উহাদের ঐ স্থলে চক্ষুর ন্যায় অসাধারণ শক্তি আছে। অতএব যদি তদ্যতীত অন্য কোন উদ্ভিজের শাখার এরপ চিহ্ন থাকে, তবে তাহা-(मब्र धे क्रथ कलम मात्रा व्यवमा होता हे९थम इहेट थादि।

যোড় কলম।

यार्विकलय ७ अविकलय दावा ऐसिक मकल इहेट চারা উৎপন্ন করিবার বিধি উক্ত হইল। কিন্তু কতিপর छेखिक रहेए श्रह्मांक कलम बाबा होता छे९ शब रहेए भारत ना, এই निभिन्न छाद्दारमत याफ्कलम करा कर्डवा। यो एकनम कतिए इरेन जाला मृजिकार्य अभागांत्र लक बीख श्रिता थे बीख रहेए हाजा छर्णस रहेना छर्म পরিপুট হইলে তত্তাতীয় রক্ষের যে শাখার সহিত যু-फ़िल्क इहेटर, धे गांममा छाहात्र निकृष्ठे नमाहेट्य। किछ

চারা এবং পাশার সুগতা সমান হওয়া আবল্যক। চারার প্রকাণ্ড হল্ম ও পাশা সুল হইলে বলিও মিলিড হইডে পারে, তথাপি মিলনানন্তর পাশার মূলদেশ কাটিলে চারা স্ক্রম প্রকাণ্ড হারা যে রস আকর্ষণ করিবে, তদ্দারা সুল পাশা পুষ্ট হইডে না পারিয়া অনায়াসে বিনফ হইবে। পারে যে অংশে উত্তরকে যুড়িতে হইবে; সেই অংশ সমান পারিমাণে মাপিরা অন্যন চারি অসুলি দীর্ঘ কিঞ্চিৎ কার্চ সহিত ছাল তুলিয়া এমত পরিকার করিবে যে, যুড়িলে তাহার মধ্যে কিছুমাত্র কাক না থাকে। এবং স্ক্রম রক্ম হারা বন্ধনপূর্যক ছয় সাত মাস তদবস্থার রাশিবে।

অনস্তর যদি উভয়ে উত্তমরূপ যুড়িরা থাকে, তবে যোড়ের নিম্ন ভাগে শাখা ছেদ করিয়া ও উপরিভাগে চারার মন্তক কাটিয়া ফেলিবে। এইরূপ কলমকে যোড়কলম কহে। চারা এবং শাখা ভিন্ন জাতীর হইলে যোড়কলম হইতে পারে না কিন্তু সপেটা রক্ষের শাখা মেফিলের চারার সহিত এবং এননামিউরিকেটা রক্ষের শাখা শোনা রক্ষের চারার সহিত যুড়িরা দিলে যোড়কলম হইতে পারে।



তিই চিত্র অইট ব্রাইরর নামক এক জাতি গোলাপের দক্ষিণ দিগের শাখার উপরি ভাগে থ চিক্লে যেরপ কাটা আছে বোড় কলম করিতে হইলে তজ্প কাটিতে হইবে পরে টবে রোগিত অকলেও হোইট নামক গোলাপের চারার প্রকাণ্ডের উপরে ঐ রূপ অবিকল কাটিয়া উভয় চারার ও শাখার আঘাতির হান দন্মিলন পূর্বক বামদিগের শাখার ক চিক্লে যেরপ বন্ধন করা আছে সেই রূপ নাঁধিয়া দিবে। আমাদিগের এই দেশে অমু চারার সহিত্র অন্মের যোড় কলম বহু সংখ্য উৎপত্তি হইরা থাকে কিন্তু কগালের চারার সহিত ইহার যোড় কলম করিতে কাহার আকিঞ্চন নাই কারন অনেকে বলিয়া থাকেন যে এই কলম কথন করিয়াতি এই কলম করিতে কইলে উক্ত রূপ প্রাক্তরণ সকল করিতে করিয়াতি এই কলম করিতে কইলে উক্ত রূপ প্রাকরণ সকল করিতে কইবে কেবল শাখা ও চারার যে স্থান মিলন করিতে কইবে নেই স্থল কাটিবার সময় আঠা বহিগত হইবে এই আঠা বিমোচন করিয়া যোড় লাগাইয়া দিবে।

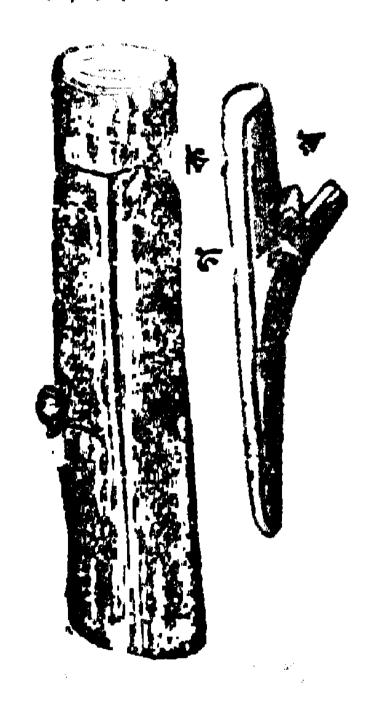
উদ্ভিজের পত্র গাইট হইতে যে সকল শাখা কলিকা বহির্গত হয়, তাহাদিগকে চফুকলম বলা যায়। কোন কৌশলক্রমে ঐ চফু তুলিয়া মৃত্তিকায় পুতিলে কিয়া অপর রক্ষের শাখায় বসাইলে তদ্ধারা চারা উৎপাদিত হইতে পারে। চফুকলম, শাখা কলম ও যোড় কলমের ভিয় প্রক্রমাত্র। ইহাদের পরস্পার বিশেষ প্রভেদ নাই। শাখা হইতে তুলিতে হইলে চফু শাখার কিঞ্ছিৎ কাঠের সহিত তুলিবে। কারণ শাখার আহার্যা রম তাহার মূল ভাগের কাঠ মধ্যে যোজিত থাকে। যদব্ধি তাহার শিক্ড নির্গত না হয়, তদব্ধি ঐ রম দারা চফু জীবিত থাকিতে পারে।

আলু, আশ্বর ইত্যাদি কতকগুলি উদ্ভিজের চক্ষু দারা চারা উৎপন্ন হয়। তদ্বতীত অন্যান্য উদ্ভিজের চক্ষুতে তাদৃশ উত্তেজন শক্তির অভাব, কিমা প্রকাণ্ড মধ্যে তাদৃশ আহার্য বস্তর অভাব প্রযুক্ত তাহারা উক্তরূপে জন্মাইতে পারে না।

যদি চক্ষু অপর শাখায় বসাইতে হয়, তবে নিম্ন লি-থিত নিয়ম সকল বুদ্ধিপূর্বক অবলম্বন করিয়া কার্য্য করিতে হইবে।

শাখার যে স্থানে চক্ষু বসাইতে হইবে, প্রথমতঃ সেই স্থানের উপরিভাগের ছাল ছুরিকা ধারা প্রশস্ত দিকে ছিরিয়া তাহার মধাছল ছইডে নিম্ন ভাগে ছই তিন জছুলি পরিমাণে দীর্ঘে চিরীয়া দিবে। তাহাতে এইরপ
(†) হইবে। পরে ঐ নিম্ন মুখ চেরার ছই পার্থের
ছাল এমত আন্তে জাতে ছুরিকার অপ্রভাগ হারা তুলিতে
হইবে, যাহাতে ছাল ছিড়িয়া না যায় অখচ তাহার অভাশুরে ফাঁক হয়।

এইরপে ছান প্রস্তুত ছইলে তৎসজাতীর শাখা ছইতে কিঞাং কার্চ সহিত চক্ষু তুলিয়া তাহার মূলদেশের
প্রশস্ত ভাগা পূর্ব্বাক্ত ছানের বিদারিত প্রশস্ত ভাগের
মাপ লইয়া কার্টিবে এবং উহার দীর্ঘাংশ লেখনীর অগ্রভাগের ন্যায় ক্রমশঃ সক করিয়া ঐ হ্যানের মধ্যে সমিলনপূর্বক বসাইয়া বাদ্ধিয়া দিবে। তাহার উপরি ভাগে
রৌজ নিবারণ জন্য কলাগাছের খোলা বাদ্ধিয়া প্রতি
দিবস জল দিতে হইবে।



এই চিত্রের বামদিগে ক চিহ্নে যে শাখা আছে তাহার উপরি ভাগে যেরূপ কৃষ-বর্ণ রেখা আছে তজ্ঞপ চিরিয়া পরে ছুরিকার অগ্রভাগ দিয়া ঐ চেরার দুই পার্য হইতে এমত সাবধানে ছাল জুলিবেক যে কোন মতে ছাল ছিডিয়া না যায় পরে দক্ষিণদিগে খ চিহ্নে যে শাখা কলিকা আছে তাক্ত্র কিয়দংশ ছালের সহিত তুলিয়া জ শাখার উপরভাগে চেরার ভিতরে সম্মিলন পূর্যক বসাইয়া বান্ধিয়া দিবে। কিন্তু যদি ঐ শাখা কলিকায় উক্ত ছালের সহিত কিঞ্চিৎ মাত্র কাইথাকে তবে ভাহাকে উঠাইয়া কেলিবে।

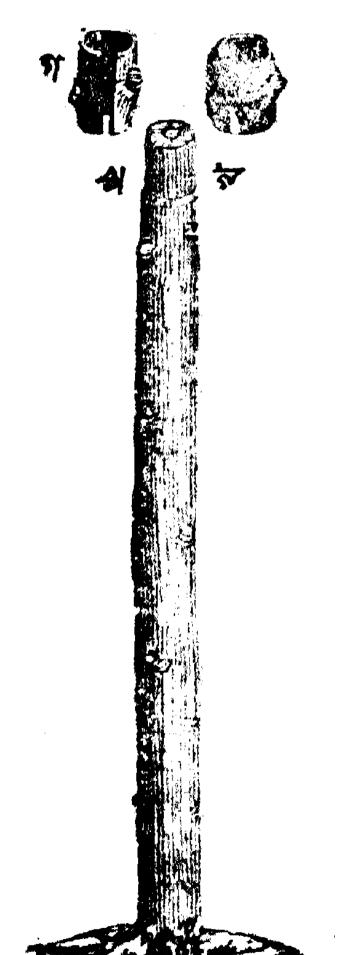
শাধার চক্ষু বসান হইলে ও পাধার যে সকল
শাধাকদিকা থাকে, তাহা তৎকালে ছিঁড়িরা কেলিবে।
বতুবা ডাহার শাধার পরিপক্ষর সকল আকর্ষণ
করিলে চক্ষু রসাভাবে বিনইট হইতে পারে। অনন্তর যোড়
লাগিরা চক্ষু বাড়িবার উন্মুখ হইলে তাহার উপরিভাগের
শাধা সমুদার কাটিবে। যে হলে চক্ষু বসাইবে তথার
গাইট থাকিলে তাহা হইতে অভিনব কোমল কাঠ উৎপন্ন
হইরা উভরে বরায় যোড় লাগিয়া যায়, একারণ গাইটের
উপরিভাগে চক্ষু বসান আবশ্যক।

তেজমী শাখার চক্ষু বসাইলে অধিকতর রস দ্বারা যোডের স্থান শীঘু মিলিত হওয়ায় চক্ষু আশু বর্দ্ধনশীল হইবে। শাখা চক্ষু অপেক্ষা তেজোহীন হইলে চক্ষু রন্ধি প্রাপ্ত না হইয়া তদবস্থই থাকিবে। কিন্তু যে স্থলে উষ্ণ-তার প্রাবলা প্রযুক্ত উক্তরূপ কলম করিয়া চারা উৎপন্ন করা স্বক্তিন বোধ হয়, সে স্থলে চক্ষুকে সতত সরস রাখি-বার জন্য যোড়ের উপরিভাগে বস্ত্রখণ্ড জড়াইয়া তাহার উপরিভাগে স্চ্ছিদ্র ভাঁড় বান্ধিয়া জল দিতে হইবে।

চুঞ্চিকলম।

শাখার ছাল বজায় রাখিয়া অভ্যন্তরের কাঠ কাটলে
চুলিরন্যায় দেখিতে হয় এই নিমিত্ত তাহাকে চুলিকলম
বলা যায়। যদিও চুলিকলম এদেশে সর্বত্ত প্রান্তি নাই
তথাপি তাহা করিতে পারিলে অনায়াসে রুতকার্য্য হওয়া
যায়, একারণ তদিবর বর্ণন করিতে প্রান্ত হারত হইলাম। কোল

ছারার শতক দেশনা করিয়া প্রকাণ্ডের উপরিতাদা প্রায় ছাই অসুনী পরিষাণে চতুর্দিকের ছাল তুলিয়া চতৃক গাছের মতকের ন্যার পরিষ্কৃত করিবে। পরে তৎসজাতীয় রজের তহুপাযুক্ত ছুল ও কোমল পাখা জানিয়া ভাছার যে স্থানে চক্ষু আছে সেই ছানের ছাল বজায় রাখিয়া ঐ পরিষাণে অভ্যন্তরের কার্চ কোন কোশল ক্রমে কাটিয়া সেই ছিল্ল মতক চারার উপরিভাগে এমত টিপে বসাইবে যাহাতে ভাছার ভিতরে ফাঁক না থাকে অথচ চুল্লি কাটিয়া না যায়। যনি ভিতরে ফাঁক থাকে কিন্তা চুল্লি ফাটিয়া না তাহা ছইলে কনাপি ইট সিদ্ধি হইবে না।



এই চিত্রে ক চিত্রে এক চারার মস্তক ছেদন
করিয়া ইহার উপরিভাগে দুই অঙ্গুলি পরিমাণে ছাল তুলিয়া চড়ক গাছের মস্তকের ন্যায়
করা হইয়াছে এবং ইহার দক্ষিণ দিগে চক্ষ্
থ চিহ্নেতে সংযুক্ত যে চুঞ্জি আছে তাহা ঐ
চারার মস্তকে সমিলন পূর্মক বসাইজে
হইবেক কিন্তু বামদিগে গ চিহ্নে যেরপ চুক্তি
ফাটিয়া গিয়াছে তন্ত্রপ হইলে ইফ সিক্ষি
হইবেক না।

কাৰি লাখা বৈচিত্ৰিলৈ কিবা আধাত কাউত আনী কৰি আহা হইলেই অনেক ক্ৰিয়া হইতে প্ৰত্ হইলা চুলিন কানি হৰ্ন আহা হইলেই অনেক ক্ৰিয়া হইতে প্ৰৱেশ অবলয়ন কাৰিবলৈ আহা বোৰ হইলে নিম লিখিত উপায় অবলয়ন কাৰ্থিনী লাখার যে অংশে চকু আছে সেই অংশেন্ন উপনিকাৰী এক অন্থলী পরিমাণে রাখিনা কাটিবে এবং অযোজানো পিরে এক কুলা পরিমাণে রাখিনা অপর ছাল নকল জুলানে। পরে এ চকু সংযুক্ত ছাল ধারণ পূর্বক ক্রমে করে বুলাইয়া বল পূর্বক টানিলে এ ছাল কাঠ হইতে প্রেরা আনিবিধা তাহা লইয়া পূর্বেজি ছিন্ন মন্তক চারার উপর ব্যাইবে। কমলা লেবুর চুলি কাণ্জি বা অন্যান্য লেবুর চারায় বসাইলে কমলালেবু হইবে। পিচ্, কুল, বোলাপা পুভৃতি এই কলমে উৎপন্ন হইতে পারে।

জিবে কলম। প্রথম পকরণ।

এতদেশে উত্তাপের প্রাবন্য প্রয়ক জিবে কল্যে
চারা উৎপন্ন হইতে পারে না তথাপি সকলের অবগত হওয়া আবশ্যক এবিধার তদ্বিয় কিছু বর্ণন করিতেছি।
এক চারার মন্তক কাটিয়া প্রকাণ্ডের এক পার্থের উপরিভাগ হইতে আরম্ভ করিয়া প্রায় হই তিন অসুনী প্রান্ত নিম্ন ভাগ ক্রমশঃ অধিক পরিমাণে কাটিবে। এবং
তৎ সজাতীর রক্ষের এক শাখার এক পার্থের অধ্যোত্তার
হইতে প্রস্রেপ টাচিতে আরম্ভ করিয়া উর্ভুণ্ধে প্র পরি-

विक्र कांन कान्य कथिक शिविमार्थ कें वित्रा उपविकारित अक-केंग्न कांकित। भरत उज्जातक वी एक वी एक विक्रिक कविनो अवक कृत करने वर्शकर वाकारण परवा, कोक वा बार्क अवर केक्टराव नार्व रखी क्रांन नवान्त्र विक्रिक क्रेज़ा कर्मक स्मान कांगिरण नारित

> को दिस्त क हिएक होतांत क माथात्र निवादरण भीक कार्तियां एवं व्यक्तांत्र समाहित्व क्रेट्रिक छोड़ा माडे विकास माहित्वहा



কোন ছিন্ন মন্তক চারার হুই অসুনী রিমিত অগ্রে-ভাগের হুই পার্ম ছাল চাঁচির জমনঃ উপরিভাগ পা-হুলা করিবে। পরে তজ্জাতীর ও তজ্ঞপ সুল এক শাখা ভাবিরা ভাহার মূলদেশের হুই অসুনী উপরিভাগ ছইতে সমান অংশে চিরিতে আরম্ভ করিরা জমনঃ নির্ভাগের কাঠ কাটিলা অনিক পারিষাণে ফাঁক কান্তবা এবং উহাকে এমত পরিকার করিরা টাঁচিরে বে উভর্কে সং-কোজিত করিলে উত্তৰসংশ মিলিড হইতে পারে। অমন্তর ঐ চারার উপরি শাখা বলাইয়া দুটুরপে রক্ষারা বাদ্বিরা রাখিবে। গুটী ফলমের ন্যার উহার উপরে ভাঁচ টালা-ইরাজল নিবে। এই কলমে চারা এবং শাখা পরস্পর মংলয় বাকার আরুঠ রস উর্জ্ব গত হইলে তদারা খাখা জীবিত থাকে এবং পরিপক হইরা চালের মধ্যগত শির ভারা চারার আনিলে অন্তান্তরের চাঁল রাজি পাইরা উভ-রকে সুভিয়া দেয়।

তৃতীয় প্করণ।

চারা এবং শাখা আকারে সমান মা হইরা যদি শাখা অপেক্ষা চারা অধিক মোটা হর তবে উক্তরপে উভরের কলম হইতে পারে না। এমত স্থলে কলম করিতে হইলে নিম্ন লিখিত উপার অবলম্বন করিতে হইবে। চারার মন্তক ক্ষেদন করিরা প্রকাণ্ডের হই তিন অঙ্গুলি পরিমিত উপরি ভাগের এক পার্থ লেখনীর অ্ঞাভাগের ন্যায় ক্রমশঃ কাটিয়া পাতলা করিবে এবং অপর পার্থের ছাল মাত্র তুলিবে তদপেক্ষা সরু এক শাখা আনিয়া তাছার তৎপরিন্মিত নিম্ন ভাগ অসমান অংশে অর্থাৎ এক অংশ পাতলা রূপে চিরিবে। প্রস্তুল অংশের মুখটী মাত্র স্থুল রাখিয়া উপরি ভাগের অভ্যন্তর ক্রমশঃ চাচিয়া পাতলা করিবে পরে চারার যে পার্থে পাতলা হইয়াছে সেই পার্থে

निवार भारत । जरमें जबर हम भारत व हाममाज का नि हरेगाइह तमरे भारत भाषात के चूल मूथ जरून नमारेगा राजिया ग्रामिटन। शिष्ठ शास्त्रत शासरे और काम अभिन्न, रेहा नमस्यत आवरण कविट रंग।



करे किरकत वाम मिरमन अथम क शिष्ट य होत्रांत्र ित आरक्ष जीराज अनुक निम को छिगनि छोग शर्गाष्ठ अन्यमास्य किंछि। श्रेगार अर हशांत छशांत्र कारम कार्य माथाव निर्दारम हितिया अल्लाहरक त्य ध्यकां क क्रेया थाटन उक्ति ममा्स देशांट अस म गाइएउटह वर अरे कलरमज़ लाच फिटम र्य ध्वकांत इहेया थारक जाहा के वामांमरगत फिडीग हिस्क ध्यमर्गन कहा इहेटउटह। তৃতীয় চিত্রে শাখার এক ष्यः न रमहितां द जना ठांदां द भन्छां छाग ए। ध्वकाद्व कार्षिए इहरवक छाड़ा धान-শ্ন করা হইতেছে।

माधात्रण विधि।

যোড় কলম চক্ষু কলম ইত্যাদি করিলে এটি উভরের ছাল পরস্পর মিলিত না হইরা পৃথক ছইরা থাকে তবে ঐ ছামে পরিপক রস বন্ধ ছইরা আবের ন্যায় ফুলিরা উঠে পিচ গাছের যোড় কলমে ইছা প্রায় পরিদৃশ্য মান হয়। ইহার প্রতিবিধান না করিলে শাখা শুক্ষ হইবার বিলক্ষণ বত অভ্যন্তরে অধোভাগে যে এক প্রকার কোমল কার্চ্চ আছে তাহা হইতে এক প্রকার আঠা উৎপন্ন হর, তৎসংযোগে এ কার্চ্চ অত্যে পরস্পর যুড়িতে থাকে। পরে ক্রমে ক্রমে তাহার অধোভাগের কার্চ্চ সকল যুড়িরা মিলিত ছইলে তদন্তর্গত রস বাহিকা শিরা দ্বারা উর্দ্ধৃভাগের আরুষ্ট রসের সঞ্চার হইতে থাকে। যদি তৎকালে কোন কারণ বশতঃ ছাল সকল যুড়িরা না যায় তাহা হইলে প্রকাণ্ড মধ্যে পরিপক রসের সঞ্চার না হওয়ায় তাহা ক্রমণঃ তেজোন্ছীন হইয়া তাদৃশ রসাকর্ষণ করিতে অক্ষম হয় প্রকাণ্ড শাখাও উত্তরোত্তর শীর্ণ হইয়া শুক্ত হইতে পারে অতএব কলম করিবার সময় যাহাতে উত্তরের ছাল পরস্পর সংযুক্ত হইয়া থাকে এবিষয়ে সতর্ক হইয়া কার্য্য করিতে ছইবে।

উদ্ভিজ্ঞ নানা জাতি, তাহার মধ্যে পরস্পর স্বজাতীর না হইলে কলমে চারা উৎপন্ন হইতে পারে না। স্বজাতী-রের মধ্যেও প্রত্যেকের অন্তর্গত বহুবিধ প্রভেদ আছে। যথা, এক কুল জাতির মধ্যে দেশী কুল, বিলাতি কুল, বন-কুল ইত্যাদি। এবং আমু, লেরু প্রভৃতির প্রক্রপ নানাবিধ প্রভেদ আছে।

স্বজাতীয়ের মধ্যে সন্নিহিত জাতিদ্বয়ের কলম যত হরায় যুড়িয়া যায় অসনিহিত জাতিদ্বয়ের কলম তত শীস্ত্র যোড় লাগে না তাহা যুড়িতে অপেক্ষাক্তত অধিক সময় লাগে। উভয়ে ভিন্ন জাতি হইলে কোন রূপেই যোড় লাগিবার সম্ভাবনা নাই। কোন কোন ব্যক্তি কোশল ক্রমে বিভিন্ন জাতিম্বরের
কলম দেখাইবার জন্য এক লেবু চারার মন্তক কাটিয়া স্ক্রম
অন্তর দ্বারা ছালমাত্র বজার রাখিয়া মূল পর্যন্ত প্রকাণ্ডের
অন্তঃগতি কার্চ সকল কাটিয়া চুঙ্গির ন্যায় করে। পরে তহপযুক্ত অন্য জাতীয় এক চারা মূল সহিত আনিয়া তাহার
মধ্যে এমত বসাইয়া দেয় যাহাতে সেই মূল মৃত্তিকায় সংল
লগ্ন হইয়া রসাকর্ষণ করিতে পারে। তাহাতে প্র চারা ক্রমে
পুষ্ট হইয়া যুড়িয়া যাইবার মত হইয়া থাকে। কিন্তু ইহাতে
কেবল প্রতারণা ব্যতীত আর কিছুই প্রকাশ পায় না।

যদি যোড় কলম করিবার জন্য অন্য চারা না পাওয়া যায় তবে তজ্জাতীয় কোন শাখার প্রকাণ্ডের সহিত তাহা করিলেও যুড়িয়া যাইবে। যদিও উভয়ের আন্তরিক রচনার বৈলক্ষণ্য আছে তথাপি যুড়িবার কোন প্রতিবন্ধক নাই।

যোড় কলম করিতে হইলে যে চারা শাখা অপেক্ষা প্রবল হইবে তাহাতে যোড় কলম করিবে চারা তেজোহীন হইলে আপাততঃ যোড় লাগিতে পারে কিন্তু পরে রসা-ভাব প্রযুক্ত শাখা শুক্ত হইবার সম্ভাবনা।

চুন্ধিকলম ও জিবে কলম করিয়া প্রথমতঃ ছায়ায় রাধিয়া উপরে সচ্ছিত্র ভাঁড় টাঙ্গাইয়া প্রভিন্নি জল দিবে নতুবা আতপ তাপে শুষ্ক হইয়া যাইবে।

যে যে রক্ষ সভাবতঃ অতিশয় বর্দ্দশীল, তাহাদিগকে উদ্যানে রাখিলে অনেক অনিষ্ট ঘটতে পারে। উহা-দিগকে ধর্মতাবস্থায় রাখিবার জন্য কলম করা আবশ্যব মুংরি আমু রক্ষ অতি ধর্মাকার, অন্যান্য আমুরক্ষ রহদা

The second secon

কার হয় অতএব মুংরি আমের চারার সহিত অন্যান্য আমুরক্ষের শাখার যোড়কলম করিলে এ শাখা অধিক-তর রসের অভাব পুযুক্ত রহদাকার না হইয়া থকাকার হইয়া থাকিবে। এবং স্থল পদ্মের গাছ অতি রহৎ এবং শাখা পুশাখা দ্বারা অপ্যকাল মধ্যেই অনেক স্থান ব্যাপিয়া থাকে। কিন্তু জবা ফুলের গাছ তাদৃশ বদ্ধ ন শীল নহে। একারণ জবাফুলের চারার সহিত স্থলপদ্মের যোড়কলম করিলে তাদৃশ বাড়িতে না পারিয়া জবার ন্যায় রিদ্ধি প্রাপ্ত হইবে।

জবা এবং স্থলপদ্মের নামভেদ হইলেও উহারা বিজাতীয় নহে তাহা হইলে উভয়ের যোড়কলম হইবার কোন
সন্তাবনা থাকে না, এবং উভয়ের অবয়ব ও প্রস্পাত অনেক
সাদৃশ্য আছে, ইত্যাদি নানা কারণে উহারা সজাতীয়,
কেবল সজাতীর অন্তর্গত যে নানা প্রকার প্রভেদ আছে
তাহার মধ্যে এক এক প্রকার বলিয়া গণ্য করিতে হইবে।

এইরপে কলম করিলে রহদাকার রক্ষ থর্ক হইবার কারণ এই যে উভয়ের কার্চ ত্রায় যুড়িয়া যায়, ছাল যুড়িতে অধিক বিলম্ব হয়, এই নিমিত্ত পরিপক রস শাখা হইতে চারায় আদিতে না পারিয়া তথায় বহুকাল অব-হিতি করে। তাহাতে সময় পাইলে তদবন্থ শাখা হইতেই পুস্প, কল উৎপন্ন হইতে থাকে। কিন্তু শাখা তাদৃশ রিদ্ধি প্রাগত হইয়া মূলে সংযুক্ত হয় তখন চারাও শাখা বাড়িতে থাকে। যাহাকে বাড়াইতে হইবে তাহার উক্ত রূপ কলম করা অনুচিত। এই সকল বিবেচনা করিয়া সকলে রক্ষের হাস ও রিদ্ধির কারণ উপায় করিতে যত্নবান হইবে।

যদি কোন কারণ বশতঃ কোন রক্ষের ফল হইতেছে না দেখা যায় তবে তাহার শাখা কিন্তা চক্ষু লইয়া তৎসজা-তীয় চারার সহিত কলম করিলে অবশ্য ফল হইবে। ই-হাতে বিশেষ এই যে এ ফল মূল রক্ষে হইলে আকারে যেরপা হইত ইহাতেও সেইরপ হইবে কেবল বীজ অতি ক্ষুদ্র হইবে।

বিদেশীয় এমন কতকগুলি উদ্ভিজ্ঞ আছে তাহা এদেশে আনিয়া রোপণ করিলে আপাততঃ কিছুদিন জীবিত থাকিয়া পরে ক্রমশঃ শুষ্ক হইয়া মরিয়া যায়। একারণ এদেশীয় তৎসজাতীয় চারার সহিত কলম করিলে তাহা চারার রস প্রাপ্ত হইয়া ততুলা জীবন শক্তি পাইয়া থাকে। কিন্তু লবঙ্গাছ উক্তরূপেও রক্ষিত হওয়া স্ফর্চন। বস্থু-রাই গোলাপ প্রভৃতি কতকগুলি উদ্ভিজ্জের বীজ আনিয়া এদেশে পুতিলে তাহাতে চারা কখন উৎপন্ন হয় না তন্নি-মিত্ত এদেশায় তৎসজাতীয় অন্য চারার সহিত তাহার কলম করিবে।

উদ্ভিজ্ঞ এবং জন্ত একই প্রকার, কেবল আকারগত বৈলক্ষণ্য মাত্র। বিশেষতঃ দেশ, কাল, এবং স্থান বিশেষে জল, বায়ু, উত্তাপ এবং মৃত্তিকা রীতিমত যথাযোগ্য রূপে ব্যবহার করিলে উদ্ভিজ্ঞ জাতি বীজ, শাখা, শিকভ প্রভৃতি হইতে উৎপন্ন হইয়া থাকে জন্তরা কেবল এক বীজ হইতেই জন্মায় একারণ উৎপত্তি বিষয়ে জন্ত অপেক্ষা উদ্ভিজ্ঞের ক্ষমতার আধিক্য আছে ইহা অবশ্যই স্বীকার করিতে হইবে।

अक्षक मश्टमाधन।

| প্ৰ | পুক্তি | অশুদ | き新し |
|-------------|-------------|-------------|--------------------------|
| २ | 5. 3 | জীবন উপযোগি | <u>जीवत्माश्रद्यांभी</u> |
| 8 | 5 | প্রথ | প্রেশ |
| > | 39 | সংযত | সংযোত |
| b | b | इ कि भानी | इ कि भी ल |
| क | २ २ | গমমাগমনের | গ্মনা গ্মন |
| 5 9 | ૭ | নির†করণ | নিবারণ |
| 59 | 39 | इकिंगी नि | इकिनीन |
| २ऽ | ৯ | मर्भालन | সন্মিলন |
| ₫ 8 | ৮ | ছাই মৃতিকা | ছু বর্ণ মৃতিকা |
| এ | 29 | অধোগমন | অধ্যামন |
| | 9 | ল্বণ | যে লবণ |
| W. | 9 | স্ব | সৰ্ব |
| (e) | ৯ | দ্রবাদি | जवार्गन |
| 18 | ર | अन्यानमी य | ञन्मरमनी श |
| 3 | পরপৃষ্ঠায় | 95 | 98 |
| | 8 | স্তব | বস্তুর |
| . 2 | \$ 8 | বৰ্ণ থাকে | বৰ্ণ হইয়া থাকে |
| | 9 | তাকে | তারে |
| | 50 | তামা | তাত্ৰ |
| | 5 | পলিজ যুক্ত | পলিযুক্ত |

.

শ্রীপ্যারী মোহন বন্দ্যোপাধ্যায় দ্বারা বেদ্ধল স্ম্পিরীয়র যন্ত্রে মুদ্রিত কলিকাতা মৃজাপুর ৫ নং মুছলমান পাড়া লেন।

